

॥ श्री ॥

महावल मलयसुंदरीनो रास.

पंक्तिवर्य

कांतिविजयजी विरचित
ए रास

शब्दानुप्रास सरसरस चमत्कृतियुक्त
अने हितोपदेशमय जाणी
तेने

स्वबुद्धपनुसार बुद्ध करीने
श्रावक जीमसिंह माणकें

श्री मुंबईमठ्ये

निर्णयसागर मुद्रापत्रमां मुद्रित कराव्यो छे.
संवत् १९४१ ना मार्गशीर्ष शुद्ध ६ चंद्रवामर.

मर्म ॥ नाणादिक त्रण रत्नमय, कहोर्ये ताहि सुमर्म ॥
 ॥ ७ ॥ नाणादिक जिन उपदिस्था, निर्मलता गुण
 हेतु ॥ पण विशेष नाणज कह्यो, सोधितणो संकेतु
 ॥ ८ ॥ अकल पदारथ सोधिये, परमारथथी नाण ॥
 निरुपाधिक लोचन नहुं, त्रीजुं नाण प्रमाण ॥ १० ॥
 निःकारण बंधव समो, जवजल तरण उपाय ॥ ख
 लता दुरगति खाडमें, आलंबन निरपाय ॥ ११ ॥
 अंतर तिमिरने जेदवा, नाण दीप निरबाध ॥ जरता
 दिक नृप नाणथी, जवजल तखा अगाध ॥ १२ ॥
 नाण विपदथी उद्धरे, नाण दीये सवि शोक ॥ मल
 यसुंदरी जिम सुख लही, चित्तधरी एक सलोक ॥ १३ ॥
 किम आपदथी उतरी, किम पामी सुख वाय ॥ तास
 चरित्र चौपै कहुं, सुणजो सहु चित्त लाय ॥ १४ ॥
 आलश निडा परिहरी, ठंणी विकथा मित्र ॥ सुणतां
 मलयानी कथा, करजो करण पवित्र ॥ १५ ॥
 ॥ ढाल पहेली ॥ अजितजिणंदसुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥
 ॥ जंबू द्वीप सोहामणो, सोहे सोहे हो सवि
 द्वीप विचाल के, लवण समुडें वींटीउं, लाख जोय
 एहो वस्तुल जिम आलके ॥ जं० ॥ १ ॥ तेमांहे क्षेत्र
 जरत अठे, खटखंमे हो मंजित सुविशाल ॥ नव नव

आलंघन लहे बहु, पामे पामे हो नव नवजा नोग
 ॥ जं० ॥ १० ॥ कंटक कंटक तरु रह्या, दो जीहा हो
 विप्रहर कहेवाय ॥ खल दाखीजे खेतमां, मंदीजे
 हो सुर मंदिर ठाय ॥ जं० ॥ ११ ॥ करछेदन नृप जे
 ग्रहे, तिम कुसुमे हो बंधन उपचार ॥ कुटिल पणो
 कैसें ठव्यो, नव दीसे हो कोइ लोक मजार ॥ जं० ॥
 ॥ १२ ॥ निर्मल सरवर जल नखां, के दर्पण हो दि
 सिनां मनुहार ॥ नोगी नमर जीजे घणा, घण महके
 हो कमलोनो सार ॥ जं० ॥ १३ ॥ बनवाडी आरामनी,
 ठबि नीजी हो अडती चिहुं उर ॥ स्वर्गपुरी जीतण न
 णी, कसी नीडयो हो बखतर हठ जोर ॥ जं० ॥ १४ ॥
 अतुलबली बली नृप समो, रिपुमृगने हो आसन जे
 सींह ॥ दाता ताता साहसी, न्याये धोरी हो गुण
 यंत अवीह ॥ जं० ॥ १५ ॥ सबल प्रतापें तापव्या,
 रिपु वसीया हो सीतल गिरि कूज ॥ वनफल नखी
 निजर पीयें, मुनिवृत्तें हो जीवे दुःख पूंज ॥ जं० ॥
 ॥ १६ ॥ लखमी करकमलें वसी, मुख एहने हो स
 रसती विलसंत ॥ विण आदर रहवो किशो, जस
 कीरति हो गइ कोपी दिगंत ॥ जं० ॥ १७ ॥ हेलें
 धनुष नमाइतां, शिर नमिया हो अरिनां तत

काल ॥ वीरधवल नामे तिहां, करे राजा हो निज
 राज संचाल ॥ जं० ॥ १७ ॥ देशावर नृप जेटणा, बहु
 आये हो हय गय रथ कोडि ॥ चतुरंगी सेनाधणी,
 नवि आये हो तेहनी कोइ जोडि ॥ जं० ॥ १८ ॥ को
 मल चंपक दल जिसी, पर राणी हो रतिने अनुहार ॥
 चंपकमाजा तेहने, शीजादिक हो गुण मणि जंमार ॥
 ॥ जं० ॥ १९ ॥ बीजी कनवती अग्रे, सोहागिण हो
 नृप प्रेम निधान ॥ बिलसे रंगे रायसुं, सुखलीणी हो
 ये चढते मान ॥ जं० ॥ २० ॥ पुर वणनी परगढी, इम
 कांते हो कही पहेली ढाल ॥ सुणो श्रोता जीजी क
 री, आगल ने हो अतिवात रसाल ॥ जं० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पाले प्रजा, निज संतति परें तेह ॥
 दुःख दोहग दूरें करे, दिनदिन धरतो नेह ॥ १ ॥
 एक दिन चिंतानुर थइ, वेगो तेह नूपाल ॥ अतिहिं
 आमण दूमणो, नीची दृष्टि निहाल ॥ २ ॥ आद
 र नवि दे केहने, दिलगिरी दिल मांह ॥ ठोडी ठप
 लें नवनवी, रागरंगनी चाह ॥ ३ ॥ वदनकमल जा
 खुं थयुं, डरवल थयुं शरीर ॥ चिंता मायणी आग
 लें, धीरज कुण सहे धीर ॥ ४ ॥ चिंता मायणि

मनवसी, कृण कृण पंजर खाय ॥ तिलतिल करी
 जे संचोठ, ते तोले तोले जाय ॥ ५ ॥ संतापें ता
 प्यो घणु, नसुणे केहनी बात ॥ अन्न उदक रुची
 परिहरि, जोगीसरज्युं ध्यात ॥ ६ ॥ चंपक माला पे
 खीठ, इणे अयसर नरनाह ॥ आइ तुरत पणे ति
 हां, सन्नम नर चित्तचाह ॥ ७ ॥ राय आगल उनी
 रही, धरती राग विशेष ॥ करजोडी बोली प्रिया, इ
 णीपरें अवर उवेख ॥ ८ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ करजोडी मंत्रि कहे ॥ एदेशी ॥
 ॥ करजोडी राणीकहे, थरज सुणो महाराज हो
 प्रीतम ॥ पूढुं ढुं ठेंदे रह्या, कहेतां मत करो लाज
 हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १ ॥ बोली नहीं मन मेजबो,
 खोली नहीं सदनाय हो ॥ प्री० ॥ आवतां आव
 कहो नहीं, जातां कहो नहीं जाव हो ॥ प्री० ॥
 कर० ॥ २ ॥ अइवेग अण उंगव, नधरो कांइ सने
 ह ॥ ३ ॥ वरी जा ॥ हू, मन्ने द्यो
 हो ॥ प्री० ॥ ॥ पा

ये महारा सिररा
 करी उरधी, कुंण करे
 कर० ॥ ४ ॥ किम सरसे

ची
 ॥

१२ ॥ यद्यपि नचाजे थम थकी, चिंता मोटी कां
 य हो ॥ प्री० ॥ तो पण एकांगे रही, समतायें वि
 हचाय हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १३ ॥ एम सुण्या ध
 रणी धवे, हृदयें खीना बोल हो ॥ प्री० ॥ सरिता
 मन नेदन नजा, मधुरा थमृतनें तोल हो ॥ प्री०
 ॥ कर० ॥ १४ ॥ कहेसे हवे राणी प्रते, ए थइ बी
 जी ढाल हो ॥ प्री० ॥ कांति कहे धन तेत्रिया, जे
 लहे पति चित्त चाल हो ॥ प्री० ॥ कर० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी छेग जर, बोल्यो तव नूपाल ॥ चिं
 ता कारण चित्तधरी, सुण सुंदरी सुकुमाल ॥ १ ॥
 जे तें पूठ्या विविध परें, नहीं तेहनी मुज चिंत ॥
 शुद्ध स्वभावे सर्वथा, तिण वातें निश्चित ॥ २ ॥
 ए मुज चिंता ठमटी, थकस्मात् बलवंत ॥ मूल
 थकी मांमी कहुं, सुपरें सवि विस्तंत ॥ ३ ॥

॥ ढाल ग्रीजी ॥ धिगधिग विषय विटंबना ॥ एदेशी ॥

॥ इणपुरमां व्यवहारिया, निवसे ठे गुणवंतो रे ॥

लोचनंदी लोनाकरा, वे जाइ धनवंतो रे ॥ १ ॥ धि

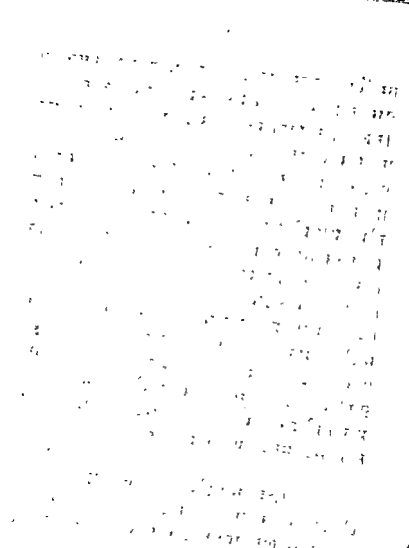
लोच विटंबना, लोने लक्ष्ण जाय रे ॥ लोने

पीडा लहे, लोने दुरगति थाय रे ॥ धि० ॥ २ ॥

बांधव नेहू धरे पणु, मांहो मांहें ब्रेहो रे ॥ जेद न
 पामे ए गदा, खीर नीर परें तेहो रे ॥ धि० ॥ ३ ॥
 लोनाकरने सुत थयो, नाम दीउ गुणवर्मा रे ॥
 लोचनेदी परायो करी, पण सुत नदी पूरव कर्मा
 रे ॥ धि० ॥ ॥ ॥ एक दिवस बेवा मली, हाटें वे
 दु जेवारो रे ॥ परदेशी एक पंथीयो, थायो तेथ
 तिवारो रे ॥ धि० ॥ ५ ॥ जइ प्रकृति ठजो रह्यो,
 तेहने को न पिठाणो रे ॥ दीजो शेंतें एकजो, उत्तम
 पुरुष प्रमाणो रे ॥ धि० ॥ ६ ॥ चोनाथ्यो गोख पणो,
 आगत स्वागत कीधो रे ॥ आदरसुं आगत जलो,
 आसण बेसण दीधो रे ॥ धि० ॥ ७ ॥ पूढे शेंव कि
 हां रहां, किम आख्या इण गामे रे ॥ जात किस्ती
 वे तुमत्तणी, नीकलिया कियो कामे रे ॥ धि० ॥
 ॥ ॥ कहे पंथी कृत्रि थहुं, परदेशी असहायो रे ॥
 देश देशावर देखतो, फरतो हुंतो इहां थायो रे ॥
 ७ ॥ शेंतें निजधर नेडीउ, जोजन जगत जलेगी रे ॥
 कीधी बली केइ दिन लगें, गख्यो जातो पेरी रे ॥
 धि० ॥ १० ॥ विश्वासें हजि मजि रह्यो, अंतर कांइ
 न राखे रे ॥ देश विदेश तणी गणी, वात जली ज
 ली जाखे रे ॥ धि० ११ ॥ अन्य दिवस कहे पं

यो, ए तुंबी मुज लीजे रे ॥ पांगी देजो शेरजी, जि
 ए दिन फरी मागीजे रे ॥ वि० ॥ १२ ॥ मुखमुझ
 गाढी करी, शेर तणे कर दीधी रे ॥ उची बांधी तुंब
 डी, हाट मांहे तेणे सोयी रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ वे
 तेणे कह्यो, करजो एहनी संजाल रे ॥ ते कहे हुं जीव
 न समो, एहवे तुमचो माल रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ चतुर
 विदेशी चूकीउ, रोप्यो अनरथ मूल रे ॥ कांति विजय
 कहे ढाल ए, त्रीजी थइ अनुकूल रे ॥ वि० ॥ १५ ॥
 ॥ दोहा शेरजी ॥

॥ तुंबी लागो ताप, थवर वस्तुनो आकरो ॥ वाप्यो
 रसनो व्याप, जरवा लागी जटकसुं ॥ १ ॥ दोहा ॥
 तुंबीमांथी रस गली, हेठ बंधायें वंद ॥ लोह कोश नीचें
 पडी, सिंचाणी निरमंद ॥ २ ॥ लोह दिशा लघु ठांमी
 ने, हेमदूठ द्युतिमंत ॥ हाट कोण जलिमलि रह्यो,
 मोडयो तिमिर तदंत ॥ ३ ॥ दृष्टिपडयो दो सेवने, सो
 वन साचे रंग ॥ चमत्कार चित्त पामीउ, जाण्यो रस
 नो संग ॥ ४ ॥ अतिलोनें आंधा दूआ, तुंबी ले नि
 रसंक ॥ गुपति पणें मूकी गृहे, नगण्यो काल कलंक ॥
 ॥ ५ ॥ भायावी मन हरखीया, लोनें वाह्या जुंम ॥
 कुंजवट वहेती मूकीने, कीयो कारज जुंम ॥ ६ ॥ थ



तम जाय रे ॥ मो० ॥ १ ॥ थरे परदेशीनुं उजवी,
 एह जीवन लीधो मुक्त रे ॥ जण विससीआ नीता
 सडो, दुःख होसे सही तुक्त रे ॥ मो० ॥ २ ॥ वली
 तुम सरिखा जो इम करे, जन निंदित भावां काम रे ॥
 तो संतति विना जूलोकमां, सत्य रहेवानो कुंण ताम
 रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ जलनिधि रहे मर्यादमां, धरणि शिर
 शेष वहंत रे ॥ अति सूर तपे नहों आकारो, ते म
 हिमा ठे सत्यवंत रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ सत्यें सूर सानि
 ध करे, होय सत्यें पुरुष प्रमाण रे ॥ जग उत्तम स
 त्य राखण जणी, निज प्राण करे कुरबाण रे ॥ मो०
 ॥ ५ ॥ कांइ हांसुं न कीजें हेलथी, ए घर खोयानुं वा
 म रे ॥ पठतायो होसे तुम मने, इणवातें खोसो मा
 म रे ॥ मो० ॥ ६ ॥ इम जूठां सम खातां थकां, ना
 ठी तुमची किहां लाज रे ॥ नर उत्तम हाम वहे न
 ही, करतां जूंमां एहज काम रे ॥ मो० ॥ ७ ॥ हवे
 लोच वसें लहेता नथी, एह वावोठो विष वेलि रे ॥
 तुम अनरथ फल देसें घणा, दुं कहुं दुं लळा मेलि
 रे ॥ मो० ॥ ८ ॥ विंदुं शोठ कहे सुण पंथिया, कांइ
 सुखि गर्जे तुक्त रे ॥ जग वाडि न चोरे चीनडां, दिल
 बूज विचारि अबूज रे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इम जूठो दोष

शीत कहे संकट पड्या ॥ करुणा करी को जाण, अ
 मने ठोडे इहां थकी ॥ ३ ॥ अमे नजाण्यो एह, आ
 पद पडसे थाकरी ॥ दुःखनर दाधी देह, प्राण दुआ
 ठे प्राहूणा ॥ ४ ॥ कीजे कवण उपाय, मरताने मा
 खा दिवें ॥ जो किम नूट्यो जाय, तो काम नकीजे
 एहवो ॥ ५ ॥ लोक हसें लख कोडि, कै रोयें कै कूक
 ए ॥ देता दह दिसि दोड, कौतुक निरखे कइ जणा ॥
 ॥ ६ ॥ दुज ते हाहाकार, पुर मांहे प्रबल पणो ॥ वा
 त तणो विस्तार, जाण्यो सघले जुगतिसुं ॥ ७ ॥
 दोहा ॥ गुणवर्मा इणो अवसरें, ग्रामांतरथी गेह ॥
 आयो वात कुटुंबथी, जाणी सघली तेह ॥ ८ ॥ पि
 ता पिताबांधव बेहु, वारें थंज्या देखि ॥ लाज्यो
 मनमांहे घणो, दुःख पाप्यो सविशेष ॥ ९ ॥ कु
 मर कहे सुणो तातजी, मकरो चिंता कांय ॥ विधि
 सुं तुम ठोडण जणी, करसुं कोडि उपाय ॥ १० ॥
 चिंतातुर तव कुमरते, सोधे नवनव बुद्धि ॥ कार न
 आवी कांइ तिणें, जोवे तांत्रिक सिद्ध ॥ ११ ॥
 ॥ ढाल पांचमी ॥ अवला किम उवेखीयें रे ॥ एदेशी ॥

॥ कुमर हवे उनमत थयो रे, सोधे नव नव वाय
 रे ॥ मांत्रिक तांत्रिक मेलवा रे, मांमे कोडि उपाय रे ॥

कहंत ॥ इष्ट मनायो कोइ कहे रे, मंजुको विरचंत ॥
 ॥ ता० ॥ १० ॥ एक कहे धूणावीर्ये रे, एक
 मंज ॥ एक कहे शिर भूंमीने रे, करियें तंत्र श्रचंन रे ॥
 ता० ॥ ११ ॥ एक कहे जल गंटीर्ये रे, मंत्री एहने
 श्रंग ॥ एक कहे ए पंत्रथी रे, चासे पहेला चंग रे ॥
 ता० ॥ १२ ॥ एक कहे ग्रह पूजिने रे, करसुं साजा
 श्राहिं ॥ एम श्रनेक शब्द करी रे, कोलाहल हूउं त्यां
 हि रे ॥ ता० ॥ १३ ॥ उद्यम सवि निःफल यया रे,
 कोइ न श्राव्यो तंत ॥ रणनी कखर जूमिका रे, जिम
 जलधर वरसंत रे ॥ १४ ॥ जिम जिम युगति उपच
 खा रे, तिम तिम बाधे पीड ॥ सायर जल बंसा जि
 हां रे, तिहां बडवानज जोड रे ॥ ता० ॥ १५ ॥ डुर्जन
 न परे मंत्रादिकें रे, कीधा तेह निरास ॥ कवी गया
 निज निज थले रे, साथ मनोरथ तास रे ॥ ता० ॥ १६ ॥
 कुमर इत्यो मन चिंतये रे, उगी जेहथी श्राग ॥ समसे
 तेहथी तेहने रे, श्राणु उद्यम लाग रे ॥ ता० ॥ १७ ॥
 उपलक्षक सार्ये लीउं रे, तव नर एक सखाय ॥ चाल्यो
 नर सोधण नणी रे, कुमर करी चित्त गाय रे ॥ ता०
 ॥ १८ ॥ शौठ रह्या बांध्या तिहां रे, करशो कुमर सहाय ॥
 डाल कही ए पांचमी रे, कांतिविजय सुख दापरे ॥ १९ ॥

किसें, कुण नगरीनुं नाम ॥ १० ॥ ततक्षण नर
बोह्युं इयुं, सुण बांधव गुणवंत ॥ मूलथकी कहुं मां
मीने, सकल परें विस्तंत ॥ ११ ॥

॥ ढाल ठही ॥ कपूर होये अतिकजलुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ कुशवर्द्धन पुर ए जलुं रे, स्वर्ग पुरी उपमान ॥

राजासूरें शोजतो रे, दिन दिन चढते वान ॥ सुगुण

नर सांजल मोरी वात ॥ १ ॥ पुत्र दुआ वे सूरन

रे, जयचंडने विजयचंड, ॥ वे बांधव वाला घणुं रे,

कुवलयने जेम चंड ॥ सु० ॥ २ ॥ मुज बांधव जय

चंडने रे, ताते दीधुं राज ॥ लाढे लाढ्यो हुं रहुं रे,

न लहुं काज अकाज ॥ सु० ॥ ३ ॥ स्वर्ग तात स

धारियो रे, मुजमन बेठी चिंत ॥ सघला दिन नहिं

सारिखा रे, जग सहु एम कहंत ॥ सु० ॥ ४ ॥ बां

धव आणा किम वहूं रे, आणी एम अंदेश ॥ अ

निमाने हुं नीसखो रे, जोवा देशविदेश ॥ सु० ॥ ५ ॥

जोतो जोतो नवनवा रे, देश विदेश चरित ॥ एक दि

वस चंडावती रे, पुरी वन माहि पढुत ॥ सु० ॥ ६ ॥

सोम्य सुरूप सोहामणो रे, कोइक विद्या सिद्ध ॥ दीगो

नर में ततखणें रे, प्रणपति विनयें कीध ॥ सु० ॥ ७ ॥

पीडा तनु तस आकरी रे, रोग विकट अतिसार ॥ छी

रे, आयो मय बाजार ॥ लोनाकर लोननंरीने रे,
 दाट गयो सुनिवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ दहुरणो धेडु था
 पयें रे, दगी जीयो मुज मज ॥ झूती मजी तस पर
 हुं रसो रे, रिभामें निगदिस ॥ सु० ॥ १८ ॥ ते तुं
 धी पावण धरी रे, जाणो माया आह ॥ केता दिपल
 रिजंवीरा रे, गुर वेगणगो चार ॥ सु० ॥ १९ ॥ ज
 ननी रशीन मनसा रे, कोणो पातण रांव ॥ पहेतो
 शेठ भाणीया रे, मुनाना वगण ॥ सु० ॥ २० ॥ लुंरी
 मागी नवगणो रे, कयना निजगु निव ॥ जोनघगिन
 वे वा ररे रे, कृता मजरी दीव ॥ सु० ॥ २१ ॥ कही नगहुं
 जां रे, दहुरणो दहुरणो अगार ॥ तुगनो कृताने नि
 रे रे, कोणी सं प्रनिहार ॥ सु० ॥ २२ ॥ आगो झण
 दुर वेगहुं रे, दंडा गुन्य ममय ॥ मुजमन ताग गभा
 रयो रे, पेती निंवा मदय ॥ सु० ॥ २३ ॥ रनि नानी
 दुःख मजसा रे, निजद रिद्ध निवट ॥ दात रही
 काति कटो रे, कुलर वचन वगण ॥ सु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुणगुणी निने इम्यु, न नर नेदित होय ॥ रि
 दावेजे जेणे काय करि, काया काय होय ॥ १ ॥
 मजमजरे हाणु नदी, ज्यो ज्यो मजजी वान ॥ म्यां त

तो शिव ध्यान के, मास दिवस तप जावीयो ॥ १ ॥
 तस सांनजि हो महिमा निरपाय के, लोक सकल
 ध्यावी नमे ॥ केइ चरचे हो नक्तें करी पाय के, केश
 र चंदन कुंकुमे ॥ ३ ॥ केताएक हो सेये तस पास
 के, अर्हेनिशि शिष्य जेम तेहनां ॥ केताएक हो खु
 ति मांजी खास के, ॥ लोक ते गहेला नेहना ॥ ४ ॥
 थामंथे हो केइ नोजन हेत के, पण नाये तेहने प
 रें ॥ तुज बांधव हो एकदिन सुचि चेत के, पारण काजे
 नुंहतरे, ॥ ५ ॥ ते तापस हो मानी नृप वपण के,
 धाय्यो पारण कारणे ॥ नृप योन्ने हो इम बिरुसित
 नपण के, अंच फड्यो अम धारणे ॥ ६ ॥ ते घेरो
 हो जिमण जेणी बार के, मुजने इम नृपें कह्यो ॥
 जो नाग्रे हो तुं पवन प्रचार के, ए तापस गुप्पे ल
 ह्यो ॥ ७ ॥ में जुगनें हो बीज्यो कुरी बाप के, गर्गे
 थानें बेसकें ॥ जाणंती हो करुणानिधि थाज के प्र
 सन्न करुं दिज पसेकें ॥ ८ ॥ ने पापी हो मुज रूप
 निहाज के, पासंजी चित्तमा चळ्यो ॥ चाहंतो हो मु
 ज संगम ध्याज के, कामाकूल मन टल यळ्यो ॥ ९ ॥
 निज ध्यानक हो पांद्हांतो दृढ शोग के, शाज वस्यो
 मन आहारां ॥ संकटपें हो मज्जवानो योग के, योग

रें ते मारीउ ॥ वलपुखो हो योगिणना तुंव के, नूप
 काम इस्यो कोयो ॥ १९ ॥ ते ऊपनी हो राहुस थव
 सान के, निज थातम विद्या करी ॥ संनारी हो पूर
 व थपमान के, बैर जाग्यो मत उतरी ॥ २० ॥ थ
 ति नीरण हो विरुड विकराल के, कोपाकुल गलगा
 जतो ॥ बलगाड्या हो कंठे विष व्याल के, गिरिवर
 बन तरु नाजतो ॥ २१ ॥ मुख बमतो हो विश्वानर
 जाल के, पिंगल लोचन हठ नखो ॥ कर लीधो हो
 तीखो करवाल के, जाणे गिरि कोइ संचखो ॥ २२ ॥
 घस मसतो हो थाव्यो ततकाल के, राजाने इणीपरें
 कहे ॥ मुज मारक हो पापी नूपाल के, किम सातायें
 तुं रहे ॥ २३ ॥ तुज बांधव हो सरणो गयो तास के,
 तोषण जटकतुं मारियो, पापीपडे हो थावी एक शा
 सके, नृपनो बैर उतारियो ॥ २४ ॥ नय देखी हो पु
 रना सखिलोक के, जीव सेई नासी गया ॥ केइ मा
 खा हो करता पणु शोक के, पण नावी पापी दया
 ॥ २५ ॥ पुरुपनो हो देखी नयनूत के, नासंती मु
 जने ग्रही ॥ इम बोल्यो हो धरी राग प्रतीत के, नई
 जावे किहां वही ॥ २६ ॥ मुजसायें हो जोगव सुखनोग
 के, मत बीहे तुं कामनी ॥ रहे मंदिर हो ए सरियो

नहीयें नामनी ॥ २७ ॥ एकहि हूं हो
 ग के, थाप वसे मुख लंपटें, निशि आ
 रंग के, दिवसें किहां किण ते थटें
 जी हो थम एहवा हवाल के, जे जा
 वे ॥ इस कांतें हो कही सातमी ढाल
 विजया सवे ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

सासो नाखीने, पूछे मर्म विचार ॥ कि
 हने, बाहुं राज्य उदार ॥ १ ॥ मर्म
 हवे, सांजल छुनट पुरोग ॥ राज चिंत
 ठे, तिणे दाखुं बुं योग ॥ २ ॥ सूतां राहु
 घृतछुं जो मरदाय ॥ मृतक समो थति
 तो निश्चेतन थाय ॥ ३ ॥ नर मरदें निद्रि
 फरसे नवि थाय ॥ जो नर जेद लहे व
 शिस उढाय ॥ ४ ॥ बांधव नारी मुख थ
 ती सर्वे सरूप ॥ करवा कोइ सहाय नर, चा
 निरूप ॥ ५ ॥ तेटछे मुजनें तुं मड्यो, जाग्य
 वंत ॥ तें पूछी मुज बात ते, में नाखी सहु
 कुमर चतुरनर देखीने, करवा आतम काम ॥
 यममाने इसी, थरज करे तेणे ठाम ॥ ७ ॥

॥ ढोल आठमी ॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥

॥ कुमर कहे करजोडीने रे, सांजल सुगुण सुजाण
 ॥ मनरा मान्या ॥ तुज दरिण करतां दूठ रे, मानव
 जन्म प्रमाण ॥ १ ॥ म० ॥ अतिमाठा हो सकल दुःख
 नाठा, जयत्राठा महारा राज अति काठा, घाठा अ
 रियण मान ॥ म० ॥ ए आंकणी ॥ हियडुं हेजे
 गहगहे रे, उत्तम नरने संग ॥ म० ॥ अणचिंत्या
 साजन मले रे, ते आलसमां गंग ॥ म० ॥ २ ॥ स
 कून सहेजे परकजूरे, दुखीआं ये आधार ॥ म० ॥
 बलिहारी व्युं जखगमें रे, घडिया जेणे किरतार ॥
 म० ॥ ३ ॥ विधि सघली दूषण धरी रे, चूको सय
 ली सृष्ट ॥ म० ॥ पण साजन घडतां करी रे, चतुरा
 ई उत्कृष्ट ॥ म० ॥ ४ ॥ स्वारथ तजी पर कारजे रे,
 समरथ सुगुण दुर्वंत ॥ म० ॥ चंडधवल जस शासतूं
 रे, दिन दिन ते प्रसवंत ॥ म० ॥ ५ ॥ परजन सु
 खीया देखीने रे, संत लहे संतोष ॥ म० ॥ दूहव्या
 जूठे माणसें रे, पणनाणे मन रोष ॥ म० ॥ ६ ॥
 तरु तटनी घण घेनुका रे, संत शशी दिणकार ॥
 म० ॥ मित्रकह्या विण स्वारथे रे, करता लग उपगार
 ॥ म० ॥ ७ ॥ कर साहज तुं माहारो रे, यासे सु

जस अनंत ॥ म० ॥ डरयस्थित पुर देखता रे, कि
 म तुल छःख न बहंत ॥ म० ॥ ८ ॥ शैव कुमार विं
 ते इस्यो रे, कठण करेवो काज ॥ म० ॥ ९ ॥ पण वपकार
 फला पढी रे, ए करसे प्रतिकार ॥ म० ॥ १० ॥ अंगि
 फालो शिर घाटीने रे, विजय वचन निरधार ॥ म० ॥
 विनय सहित हवे शेवने रे, बोज्यो विजय कुमार ॥
 म० ॥ १० ॥ राक्षसनां पग भरदजो रे, धृतसुं हो
 साहस धार ॥ म० ॥ सहस्र जपन करि मंत्रनो रे,
 यंजावीस तेणीयार ॥ म० ॥ ११ ॥ राक्षसने हुं व
 श करी रे, करसुं चिंत्या काम ॥ म० ॥ १२ ॥ इम विचारी
 मेलवी रे, सामग्री पर ताम ॥ म० ॥ १३ ॥ गुप्त प
 णे थावी रह्या रे, मंदिरमा एकंत ॥ म० ॥ १४ ॥ गुणव
 र्मण्य पहेरियो रे, विजया वेश सुतंत ॥ म० ॥ १५ ॥
 रयणी पढी रवि थायम्यो रे, प्रगटयो पण अधार ॥
 म० ॥ १६ ॥ राक्षस रमतो थावियो रे, रंगे रमे तिणिवार
 ॥ म० ॥ १७ ॥ रयणीचर कहे नरतणी रे, थाज थ
 ठे सी वास ॥ मननी मानी ॥ हणतां जे रह्यो जी
 वतो रे, करसुं तास विनास ॥ मननी ॥ १८ ॥ प्रि
 या बोले हो चतुर हुंहुं नारी, धणुं वासैं महाराज
 धरचारी, थवर नही कोई पास ॥ म० ॥ १९ ॥ अ

वगणतो उज्जट पणे रे, सुतो सेजे तुरंग ॥ म०
 कुंमर वहुं मिस आवीने रे, मरदे पय निरजंग ॥ म०
 ॥ १४ ॥ विजय कुमर विधिसुं जपे रे, थन्न मंत्र वि
 शेष ॥ म० ॥ ते पण नरनां गंधयी रे, कठे करी
 देश ॥ म० १५ ॥ जिमजिम कठे सेजथी रे, राहस
 मारण हेत ॥ म० ॥ तिम तिम फरस तणे सुखे रे, जो
 टि पडे गत चेत ॥ म० ॥ १६ ॥ मंत्र जाप पूरण थयो
 रे, सूक्यो मरदन जाम ॥ म० ॥ कुमर बिहुने मा
 रवा रे, कठयो राहस ताम ॥ म० ॥ १७ ॥ थन्यो
 अनोपम मंत्रथी रे, सक्तिथइ विछिन्न ॥ म० ॥ दास
 थयो करजोडीने रे, जाखें एम वंचन ॥ म० ॥ १८ ॥
 रेरे साहस मंढणी रे, कुमर सुणो एक वात ॥ म० ॥
 मुज मदिमा मंत्रे हखो रे, जिम घन दहण वात
 ॥ म० ॥ १९ ॥ किंकर हुं कीधो खरो रे, मंत्र श
 क्तिसुं आज ॥ म० ॥ सेवक साचो जाणीने रे, द्यो सा
 हिव कोइ काज ॥ म० ॥ २० ॥ कुमर कहे सुण ते
 करी रे, मुज नगरी निरलोक ॥ म० ॥ गत मंगल वि
 धवा जिती रे, दीसे आज सशोक ॥ म० ॥ २१ ॥ म
 णि माणिक कण कंचणो रे, पूरण जरी घर हाट ॥
 म० ॥ रवि तोरण स्वस्तिक जर्जे रे, सुरजित कर स

जीहो निर्जय जल तूंची जरी, जीहो घेते मांची संच ।
 जीहो कूर्स बाहिर काढीउं, जीहो नूपें त्यांची खंच ।
 ॥ कुम० ॥ १३ ॥ जीहो थती साहसची रीजीउं, जीहो
 हो तव कूर्सनो देव ॥ जीहो प्रसन्न प्रगट थावी रह्यो
 जीहो आगल करवा सेव ॥ कुम० ॥ १४ ॥ जीहो
 श्वरूप कीथो सुरें, जीहो बे वेग तस पीव ॥ जीहो
 थाव्या पुर चंशवती, जीहो थंन्या वेहु दीव ॥ कुम०
 ॥ १५ ॥ जीहो कुमरें जज्ञसुं सिंचीउं, जीहो जोनाकरनो
 थंस ॥ जीहो जटक तूटी थलगो रह्यो, जीहो पात थ
 फी जिम हंस ॥ कुम० ॥ १६ ॥ जीहो जोननंदी तूटो
 नहीं, जीहो पाडे मुस पोकार ॥ जीहो पुत्रविना को
 ण तेंदने, जीहो दुःखची गोडण द्वार ॥ कुम० ॥ १७ ॥
 जीहो विजयचंडने बीनवी, जीहो गुणवर्म्म ते शेर ॥
 जीहो परमाहि पेंसण दीउं, जीहो बीजा शिर रही
 वेव ॥ कुम० ॥ १८ ॥ जीहो मंत्री पद मुझा जणी,
 जीहो थामंत्रे नरपाल ॥ जीहो गुणवर्म्मा नवि था
 दरे, जीहो जाणी पाप कराल ॥ कुम० ॥ १९ ॥ जी
 हो केतेक दिन पूवें नूपें, जीहो निजगुर कीर प्रषा
 ण ॥ जीहो विरहथ्या हीपडे वधी, जीहो कुमासुं
 बांध्या प्राण ॥ कुम० ॥ २० ॥ जीहो करी सरकार थनेक

भा, जीहो वूँधी दीधी काटि, जीहो नूपति बजी पा
 नी दीए, जीहो कुमर जीए शिर चाटि ॥ कुम० ॥ २१ ॥
 जीहो माया घोटक ऊपरें, जीहो बेसी विजय नहिंद ॥
 जीहो निजपुर पोहोतो वेगधुं. जीहो जिम विद्याधर
 इंद ॥ कुम० ॥ २२ ॥ जीहो गुणचम्पयें आवीने, जी
 हो रात्रि समय एकांत ॥ जीहो मुज आगें जेटण ध
 स्यो, जीहो नाख्यो लविहृतांत ॥ कुम० ॥ २३ ॥ जीहो
 प्राण पियारी आगलें, जीहो राखीजें सुं गुळ ॥ प्रीयें
 सुण चिंता कारण मुळ ॥ ए आरुणी ॥ जीहो काका
 नो निज तातनो, जीहो थापण मोसा दोष ॥ जीहो
 कुमरें खमाव्यो मुळने, जीहो विनय विविध परे पोष
 ॥ प्री० ॥ २४ ॥ जीहो राज्य गधुं वाल्युं फरी, जीहो
 वाल्युं बैर डुरंत ॥ जीहो विजय कुमर निज तातने,
 जीहो चाढी शोज अनंत ॥ प्री० ॥ २५ ॥ जीहो मर
 ण पणु पण आगमी, जीहो शेव सुतें निज तात ॥
 जीहो थापदमांधी बढ्यां, जीहो जूठ सुननां श्रवदा
 त ॥ प्री० ॥ २६ ॥ जीहो पुत्र पाखें कुण कामिनी,
 जीहो धण कंचणनी राति, जीहो सोच दिसा पामे स
 दा, जीहो पुत्र रहित आवास ॥ प्री० ॥ २७ ॥ जीहो
 धन्यते रुत पुण्यते, जीहो जेहने नवला पुत्र ॥ जीहो

लाज वधारे वंशनी, जीहो राखे घरनां सूत्र ॥ प्री०
 ॥ २७ ॥ जीहो लोननंदी संकट सह्यो, जीहो देखी
 सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो ठो
 ढावे अविलंब ॥ प्री० ॥ २८ ॥ जीहो हुं जगमां निरजा
 गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित
 सरज्यो कियो, जीहो वाढ्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥
 ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण उर
 रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुंल आपण, जीहो
 पुत्रविना हित आण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसज
 ता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो
 ए चिंता मुज नामिनी, जीहो बीजी राव न रीत
 ॥ प्री० ॥ ३२ ॥ जीहो नयमी ढाल पूरी थई, जीहो
 राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुणें हवे, जीहो
 घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमो, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम
 बोली प्रीतम प्रत्ये, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य
 जनम तस लहीजीयें, जेहने आगल बाल ॥ हंसे रमे
 रोवे लुटे, चाखे चाल मराल ॥ २ ॥ घूबर पग घम
 कायतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो य

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ गुनग शिखा शिर
 फरहरें, धूलें घूसर देह ॥ लघुदंता आंके पडे, हेजवि
 या करि बेह ॥ ४ ॥ सुतविण अंचा मालियां, प्रत्य
 ह् खरा मताण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क
 ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाम्यो नहीं एक पण, धि
 गधिग मुज अवतार ॥ पुत्र विदुणी दुःखणी, कां स
 रजी किरतार ॥ ६ ॥ पुरव पुण्य किया बिना, क्या
 थी संतति होय ॥ सुरुत करीजे दुःख तजी, ते नणी
 आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें ठोडियो, रुदय थकी
 हे कंत ॥ पुत्र देतें आराधयुं, देव कोई सतयंत ॥ ८ ॥
 प्रसन्नययो सुर पूरयो, चंठित नवलो एह ॥ सुरसेवा सा
 घी करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण
 सुंदरी, मुजमन नावि यात ॥ गुनदिनथी आराधयुं,
 कोशक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, बली बोले इयुं, धर
 ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विद्याय रे, चिंता
 उमटी, दीसे थंग दयामाणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके
 गात्र रे, बिनय विव्हल थई, घटपट लागी थाकरीए
 ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराई पण

लाज बधारे वंशनी, जीहो राखे धरनां सूत्र ॥ प्री०
 ॥ २७ ॥ जीहो लोचनंदी संकट सह्यो, जीहो देखी
 सयल कुटुंब ॥ जीहो जो सुत होवे एहने, जीहो वो
 ढावे श्विलंब ॥ प्री० ॥ २८ ॥ जीहो हुं जगमां निरजा
 गीयो, जीहो माहारे पोतें पोत ॥ जीहो पुत्र रहित
 सरज्यो किस्थो, जीहो वाढ्यो चिंता पोत ॥ प्र० ॥
 ३० ॥ जीहो कुंण पूजे गुरु देवने, जीहो कुंण बंध
 रे धर्म ठाण ॥ जीहो कुंण धारे कुंज थापण, जीहो
 पुत्रविना हित थाण ॥ प्री० ॥ ३१ ॥ जीहो वंसल
 ता फरसी समो, जीहो सरज्यो कां जगदीश ॥ जीहो
 ए चिंता मुज नामिनी, जीहो बीजी राव न रीस
 ॥ प्री० ॥ ३२ ॥ जीहो नवमी ढाल पूरी थई, जीहो
 राय कही ए वात ॥ जीहो कांति कहे पुणें हवे, जीहो
 घर संतति सुख सात ॥ प्री० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चंपकमाला चित्तमां, दुःखपूरी दिलगीर ॥ इम
 बोली प्रीतम प्रत्ये, नयण जरंती नीर ॥ १ ॥ धन्य
 जनम तस लहीजीयें, जेहने थागल बाल ॥ हंसे रमे
 रोवे लुटें, चाले चाल मराल ॥ २ ॥ घूघर पग घम
 कावतो, करतो विविध टकोल ॥ माय तणो ठेडो अ

ही, बोले मण मण बोल ॥ ३ ॥ सुनग शिखा शिर
 फरहरें, धूलें धूसर देह ॥ लघुदंता थकें पडे, हेनधि
 या करि वेह ॥ ४ ॥ सुतविण उंचा माजियां, प्रत्य
 द्द खरा मसाण ॥ निजकुल कमल विकाशवा, पुत्र क
 ह्यो नव जाण ॥ ५ ॥ में पाभ्यो नहीं एक पण, धि
 गधिग सुज अवतार ॥ पुत्र विदुणी दुःखणी, कां स
 रजी किरतार ॥ ६ ॥ पूरव पूण्य किया विना, क्या
 थी संतति होय ॥ सुकृत करीजे दुःख तजी, ते नणी
 आपण दोय ॥ ७ ॥ चिंता दूरें ठोडियो, रुदय थकी
 हे कंत ॥ पुत्र हेतें थाराधणुं, देव कोई सतवंत ॥ ८ ॥
 प्रसन्नययो सुर पूग्यो, वंठित नवजो एह ॥ सुरमेवा सा
 ची करी, निःफल न होवे केह ॥ ९ ॥ राय कहे सुण
 सुंदरी, सुजमन नावि वात ॥ सुनदिनथी थाराधणुं,
 कोइक सुर विख्यात ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ राजाने परधान रे ॥ ए देशी ॥

॥ तिणे अवसर नृप नारि रे, वली बोले इद्रुं, धर
 ति दिलमां दुःख घणुए ॥ वदनथयुं विधाय रे, चिंता
 उमटी. दीसे अंग दयामाणुए ॥ १ ॥ थरहर थरके
 गात्र रे, विनय विव्हल थई, चटपट लागी थाकरीए
 ॥ रति नाठी संताप रे, व्याप्यो पापीउं, चतुराई पण

उतरीए ॥ १ ॥ फरके जमणी आंस रे, प्रीतम म
 दरी, कुंण जाणो से कारणोए ॥ जावि कोइ अनर्थ
 करि करि सूचये, सुज मन नरहे धारणोए ॥ २ ॥ य
 शो कोइ घनपात रे, नूतारिक तणुं, दुःखदाई मुज
 सहीए ॥ अथना निशुल्पात रे, यागो मुज जिरे, प
 यत्तना पडसो यहीए ॥ ३ ॥ के जामे सर्वस्व रे, ज
 यन भादगो, कृज्ज दोजो तुमने मदाए ॥ के यागो स
 ज गंग रे, शोक अशुन कर, के पडसो कोइ आपद
 ए ॥ ४ ॥ आण तणो संवेद रे, दोश मादग, निभय
 लोचन एम कहेए ॥ हूं नवि जाणुं कांड रे, जात
 जामिनी, दैवगति हानी जहेए ॥ ५ ॥ रति नारी मु
 ज तेण रे, हृदई कम कम, अघृति बंधूं फाटि ना
 ॥ वीरध्वज नृपात रे, वजतुं एम वद, हा ना'मन
 दुःखमां नजोए ॥ ६ ॥ चिंता मकमि जगाए रे, स
 ज वेनां हिमी, जंका शंकटनी कहेए ॥ रति तपन अ
 नितैरे रे, निमिर नग्म समो, लोक मोहे कम यिनि
 जहेए ॥ ७ ॥ जो होमे तुज कांड रे, याथा अणता
 ए, विग्द अथवा दुःख काणीए ॥ नो मुजनें तुज म
 ये रे, शरण अमनी तणो, दाश मही सुण नापि
 नी ॥ ८ ॥ इगीधरे धरणी मादरे, आश्यामी प्रिया,

सिंहासन जई वेसियो ए ॥ फिरि फिरि फरके नयण रे,
 राणीनो बली, तिमतिम थरके तस ह्योए ॥ १० ॥
 मंदिरमांथी उठी रे, बनिकामां गई, थरतिलहे तिण
 पण घड्योए ॥ बनिकामांथी तेम रे, थावी मंदिरे, त्या
 थो बाहिर वन जणोए ॥ ११ ॥ वनयो पुरमां थाई
 रे, सहिपर परवरी, देवकुलें जावे बलीए ॥ नलहे र
 ति लवलेश रे, क्लेश सहे घणु, जिम शूके जल मा
 ठलीए ॥ १२ ॥ इम बोझा मध्यान्ह रे, थावी निज
 घरें, स्रुती पण मन बाजलोए ॥ अल्प अल्प तब निंद
 रे, थावी तिणे समे, जेह थयो ते सांजलोए ॥ १३ ॥
 वेगवती नामेण रे, दाती तेंतलें, हाथांसुं शिर कूटती
 ए ॥ आंखुधार प्रवाह रे, मारग सिंचती, केश चटा
 चट चूटतीए ॥ १४ ॥ विलवती डःखपूर रे, थावी
 दोही ने, राय कन्हे रोती घणुए ॥ हा हा सुं थयो
 तुळ रे, सामणि माहरी, दीधुं देव विगोवणुए ॥ १५ ॥
 फिटरे धीग देव रे, इम कही ढली पढी, निरखी च
 क्यो नृप चिंतवेए ॥ आपद दीसे कांय रे, राणीने
 पढी, हा हा सुं करुं हवेए ॥ १६ ॥ उठया व्याकु
 ल राय रे, दीनवदन थई, पूठे दासीने इम्युंए ॥ ऊठ
 कठने कठ रे, कहेने सुं थयुं, सुल थंतेवरनुं किरुं

ए ॥ १० ॥ फाटे हीयहुं मुझ रे, धीरज सहं
 कहेतां वारम लावीयें ॥ वेगवती तव कठी रे
 डम कहे, है सुंदर ख उदजावीयें ॥ १० ॥
 स्त्री बात रे, नहीं हो साहेबा, कहेतां नवहे
 ए, वीर शिरोमणी देव रे, रुदय कठण करो, बज्र वि
 पम ठे बातडीए ॥ ११ ॥ चंपकमाजा देव रे, प्रह
 रुदयें सरी, दाहिण जोयण फुरकंतेए ॥ गेला
 काज रे, चिंतासुर नमी, बाहिर थंतर जत ततेंए ।
 ॥ १२ ॥ लहति थरति थपार रे, मंदिर आवीने,
 सूती गकाने जईए ॥ मुजने पान निमित्त रे, भूकी हूं
 पण, पान जई पानी गईए ॥ १३ ॥ बोलायी नर हे
 ज रे, मुख बाजे नहीं, दात काठ परें पडीए ॥ जीव
 रहित निभेट रे, जाखी देहडी, मीचाणी दोष था
 खंडीए ॥ १४ ॥ के सोसी कुण प्रेत रे, के साकिण
 घसी, के कांइ सापणी ममी गईए ॥ थपरा थरुट
 रोग रे, जीव छोई गयो, के निज हत्या करी मुईए ॥
 ॥ १५ ॥ निरस्त्री माता सुज रे, पडियां घातको, पण
 नकजाय ए सुं थपुंए ॥ थाई दोडी एथ रे, बुद्धि स
 वे गई, जीवहलो कडी गयोए ॥ १६ ॥ चपणसुणी
 जूपाज रे, कहुथा यिन जिस्सा, मूर्खगत धरणी ट

ल्योए ॥ बाँझ्यां सीतल वाय रे, सींच्यो चंदने, कष्टे
 मूर्छापी वळ्योए ॥ २५ ॥ जागो झुल्ल थजेह रे, नेह
 वियस थयो, विलपण जागो एणीपरेंए ॥ रे हत्या
 रा देव रे, कहेने किहां गयो, जीवन माहारुं थप
 हरिए ॥ २६ ॥ जोमुज देवा झुल्ल रे, समरथ तुं हू
 उं, मुनेकां प्रथम न मारियोए ॥ करुणा हीणा झुल्ल
 रे, देईने दगो, विण हथियारे विदारियोए ॥ २७ ॥
 जाहि जाहि जाहि रे, मत रहे जीउडा, मन मेजुं
 सीधारतांए ॥ हा हा हूउ संताप रे, विरहानल त
 णु, सुंदरी विण तुल धारतांए ॥ २८ ॥ रे रे कुजनी
 देवीरे, थवसर आजने, कांइ उवेखो परिथईए ॥ ते
 कृषीनी थासीत रे, सुकृत फलें नरी, तैपण निःफल
 केम गईए ॥ २९ ॥ हा गोरी गुणवंत रे, किम नकही
 मुझ, मरण दिसा जाणी तरेए ॥ जो जाणत एरीत
 रे, पहेजी ताहरी, तो राखत हड्डा वपरेंए ॥ ३० ॥
 हाहा हुं थज्ञान रे, मूढ शिरोमणि, जावि थापद
 सांसहीए ॥ दोनवदन विधाय रे, धुरतें मुजने, हुं
 नारी थापद कहीए ॥ ३१ ॥ निंदा करतो थाप रे,
 नृपति विलपतो, परिजननें दुःखियां करेए ॥ कृण
 हिने मति मंद रे, कृण धरणी दजे, कृण थासू नय

ऐं नरेण ॥ ३२ ॥ कृणु वेगो मनःशून्य रे, कृणु कठे
 धसी, कृणु बली करतो विलंबनाए ॥ ठांमी नर म
 र्याद रे, धीरज हारियो, ऐऐ मोह विटंबनाए ॥ ३३ ॥
 मल्लिया सचिव अनेक रे, दुःखजर जंगुरा, गदगद व
 चने बीनवे ए ॥ चालो हो महाराज रे, लायक सा
 हेवा, तुरत पणे जइयें हवेए ॥ ३४ ॥ ढील तणो न
 ही काम रे, देखी देखीजें. कवण दिसायें आक्रमीए ॥
 जो विष व्यापि होय रे, तोपण जीवडो, रहे ते ना
 जीमां संक्रमीए ॥ ३५ ॥ करतां कोइ ठपाय रे, जो
 जीवें कदी, तो तुज जाग्य प्रगंसीयेंए ॥ वचन सुणी
 जूनाय रे, चाले वेगगुं, रींटयो परियण दासीयेंए ॥
 ॥ ३६ ॥ आब्या राणी गेह रे, दीठी काठसी, दय
 दाधी जिम बेलडीए ॥ शब्द रहित निभेष्ट रे, नील
 वदन ठवी, दंत नोडी सेजें पडीए ॥ ३७ ॥ मूर्छाणो
 कृतिकंत रे, आंत नयण अयां, नेह दावानल बली
 लग्योए ॥ सींच्यो सीतल नीर रे, कठयो निज प्रिया,
 देखी बली मूर्छा लग्योए ॥ ३८ ॥ फरी कठे फरी
 तेम रे, मूर्छे नरपति, फरी कठे एम दुःख लहेए ॥
 मंत्री मजीने थंग रे, देखी राणीनुं, मांहो मांहे इम
 कहेए ॥ ३९ ॥ थंग नहीं ठे कोई रे, वण घातादिक,

अकृत दीते सर्वथाए ॥ के सुर मारी केण रे, के म
 न पीढायें, साजो तनु केम अम्यथाए ॥ ४० ॥ मरजो
 निभें राय रे, देवी मोहियो, राज्य जंग पाजो सहीए ॥
 करवा कोण प्रकार रे, इम मंत्री सहू, अणबोल्या रह्या
 कहीए ॥ ४१ ॥ मंत्री नाम सुबुद्धि रे, बोझो तत्कणो,
 काल बिलंबन कीजोयेंए ॥ तो होये कोइ उपाय रे,
 जेहथी नृपने, मरण थकी राखीजोयेंए ॥ ४२ ॥ मंत्री
 बोझो एक रे, बली एम चित्तधरी, कालक्षेप केणी प
 रे हूवेए ॥ राजादेवी मोहें रे, घाखो परवशें, काज अ
 काज नवी छूवे ए ॥ ४३ ॥ बली कहे मंत्री सुबुद्धि रे,
 विपनी विक्रिया, ठे देवीए जीवसेए ॥ मणिमंत्रोपध
 योग रे, विष टलजो परहो, राणी थति सुख पामसे
 ए ॥ ४४ ॥ जूठो कहीने एम रे, नृपने आश्वासी, क
 रत अकाल निवारियेंए ॥ शुभमंत्री करे सर्व रे, मंत्री
 सर बोझ्या, राजन विष उपचारियेंए ॥ ४५ ॥ कांइ क
 रो महाराज रे, निषट अधीस्ता, नवलां मंगल वर
 तजोए ॥ सानली एम नरेश रे, विश्वर लोचने, हरे
 पुषा नाह्यो तिसेंए ॥ ४६ ॥ करजो कोढी उपाय रे,
 नृपने जोलवी, मंत्रीसर मति आगला ए ॥

ढाल रसाज रे, कांतिविजय कहे, मोहें नडीया नज
नलाए ॥ ४७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे रे ल्यावो धाझे, विषयर औपथ यंत्र ॥ थामं
त्रो मंत्रिक प्रते, धारे विष मणिमंत्र ॥ १ ॥ नृप आ
देशे मेलवी, सामग्री ततकाल ॥ थारंजे मांत्रिक क्रि
या, उचित कहा सवि चाल ॥ २ ॥ एकांते देवी ठवी,
करे चिकित्सा तेम ॥ मांत्रिक मंत्रीसर सहित, जाणे
नृप जेम एम ॥ ३ ॥ हमणां देवी कठसे, करशे ने
त्र विकाश ॥ हवणां कांश्क बोजशे, बजशे बली ठ
सात ॥ ४ ॥ बोली एम नृप चिंततां, थर्द्धदिवसने
रात्र ॥ सचिवादि निरुपाय मवि, करे विचार प्रजात
॥ ५ ॥ नृपने केम उगारसुं, मरण दिशायी आज,
नेह प्रस्यो जाणे नहीं, करतो चतुर थकाज ॥ ६ ॥
राज्य देश गढ सुंदरी, सेना लोक हिरण्य ॥ सचिय
प्रमुख दिन आजथी, सकल थया थशरण्य ॥ ७ ॥
इम चिंता सायर पढ्या, मंत्रीसर नयचाम ॥ एक ए
क साहामुं जूवे, जिम मृग चूका गम ॥ ८ ॥ दीठी
कांता तिण समे, पूर्वपरें नृप थाप ॥ थापूखो थति
डुःखसुं, इणिविध करे विलाप ॥ ९ ॥

॥ दाज अगीधारमी ॥ रे रंगरत्ना करहजा रे, मो
 पीउ विरतो जाण ॥ हुंतो कपर काढीने रे,
 प्राण करुं कुरवाण ॥ सुरंगा करहा रे ॥ मो
 पीउ पाठो बाल, मजीठा करहा रे ॥ ए वेशी ॥

॥ रे गुणवंति गोखडी रे, कांइ रही रे रीताय ॥ वि
 ण बोझ्यां मुज जीवढो रे, प्राहुणडा परें जाय ॥ प्रि
 यारी बोझो हो, थइ प्रीतमयुं एक बार ॥ १ ॥ ह
 ठीजी बोझो हो ॥ विरत्त थइ कुण कारणे रे, एवढो
 तेह दिखाय ॥ प्रि० ॥ एआंकणी ॥ तुज नवटे गजगाम
 नी रे, करवो मान अपार ॥ जीवतणी तुं औपधो रे,
 तुंहिज प्राणाधार ॥ प्रि० ॥ २ ॥ जक नलहे पल जी
 वढो रे, तुज विरहें प्रजजाय ॥ हासुं नकीजें तेहहुं
 रे, जिणो हासैं धर जाय ॥ प्रि० ॥ ३ ॥ कवप्रिया
 दिन घहु चढ्यो रे, लोक लगे व्यवसाय ॥ पण प्रीत
 मने उवेखती रे, तुं बोझे नहीं काय ॥ प्रि० ॥ ४ ॥
 तुं कहेती मुजने सदा रे, रुदय वसो ठो मुऊ ॥ ते
 मुज आज बीतारतां रे, वात लही में तुऊ ॥ प्रि० ॥
 ॥ ५ ॥ एक घढी मुज तुजविना रे, मुजने वरस स
 मान ॥ तो दिन ए केम बीजसे रे, गोरी कहे गुण खा
 ण ॥ प्रि० ॥ ६ ॥ केइ विजसे केइ हसे रे, सुखीयां

पुर नर नार ॥ आज अवस्था मुज नणी रे, दोधी
 ए किरतार ॥ प्रि० ॥ ७ ॥ मो तनु दुःख दुर्वल यइ
 रे, जो तुं आंख उघाड ॥ ग्रीपम पवने आकरी रे, नि
 म तरु नांख्या जाड ॥ प्रि० ॥ ८ ॥ तुं चतुरा चंझानना
 रे, जीव रहणनी बाड ॥ पण ईण वेला पदमणी रे,
 हीयहुं नारुपुं जाड ॥ प्रि० ॥ ९ ॥ हरिलंकी हत्ती
 बोलनै रे, निंद रयणरी ठामि ॥ कर करुणा मुज का
 मनी रे, मननी पूर रुहाडि ॥ प्रि० ॥ १० ॥ तुज
 कारण कीधा घणा रे, सबल जुगति उपचार ॥ हा
 हा पण कते नहीं रे, कीजें कवण प्रकार ॥ प्रि० ॥
 ११ ॥ निश्चे दीसे ठे हवे रे, पोहोती तुं परलोक ॥
 नहिंतो मुख बोले सही रे, बालम करते शोक ॥ प्रि०
 ॥ १२ ॥ धिग प्रचुता धिग चातुरी रे, धिग जीवन धिग
 राज्य ॥ संकट मांहेथी तुझने रे, हुं राखी शक्यो नहिं
 आज ॥ प्रि० ॥ १३ ॥ हे मुगधे हे कोपनै रे, हे प्रमदे
 गई केथ ॥ तुज मुख निरखण उमह्यो रे, हुं पण था
 वुं तेथ ॥ प्रि० ॥ १४ ॥ हवे सूधे ठोढी हवे रे, तुजने
 पण निरधार ॥ सांसि सकी नहिं सोकने रे, फिट फि
 ट तुज आचार ॥ प्रि० ॥ १५ ॥ इम कहिने धरणी
 टव्यो रे, मृगविशें नूपाल ॥ शीतल जल सिंच्यो घणु

॥ एह अवस्था ध्रुव कही रे, सघलाने अवशान ॥ रंगी० ॥ २३ ॥ राजा खेचर केशवा रे, चक्रधरा देवेंड ॥
 कर्मयकी नवि नूटीआ रे, गणधर देव जिनेंइ ॥ रंगी० ॥ २४ ॥ जीवित अथिर संसारमां रे, मान अणी ज
 ल विंद ॥ संपद चपल स्वनावथी रे, जेहवी स्त्री सठ
 द ॥ रंगी० ॥ २५ ॥ सयण कह्यां सवि कारमां रे, जे
 दया मृगन जंजाल ॥ काया काच घटिजिती रे, यौव
 न संभ्या कात ॥ रंगी० ॥ २६ ॥ जन्म जरां मरणे न
 यो रे, ए संसार असार ॥ ईम जालीने साहेया रे,
 मनरगो दु ग्न जगार ॥ रंगी० ॥ २७ ॥ संजालो निजरा
 ज्यने र टांना मननां जोक ॥ गालो अरियण मानने
 र, पालो पडिन जोक ॥ रंगी० ॥ २८ ॥ राय कहे मं
 त्रीमग र, मार्चा नुमारी यात ॥ पण देवी मोहें मटपो
 रे, तेजणी रह्यो न जात ॥ रंगी० ॥ २९ ॥ में पूर्वे अं
 गी कयां रे, साथें मरणनां जोत ॥ जो नकतं तो हि
 म रहें र, मन्यवार्दीनां तोत ॥ रंगी० ॥ ३० ॥ आज ज
 ने में निगवटो रे, मृधो मन्य वचन ॥ ते अंतरालें
 ठाटता रे, नवदे मादमं मद्र ॥ रंगी० ॥ ३१ ॥ निज
 मुखयी जे आदरी रे, वे सम प्रतिहा काय ॥ अक्सर
 बहेती मूकतां र, महमा मन्य जजाय ॥ रंगी० ॥ ३२ ॥

जिण सत्प कारण होमीठ रे, वल्लन पणे निजदेह ॥
 मूठ पण लग जीवतो रे, शास्त्रें कह्यो नर तेह ॥
 ॥ रंगी० ॥ ३३ ॥ द्विप्र करोने सद्धता रे, महारी
 देवी साथ ॥ देणुं दुःखने जलांजली रे, ए निश्चय
 धर्म ध्याय ॥ रंगी० ॥ ३४ ॥ इम कहेतां नृप वारिठ
 रे, बहु परे सर्व प्रधान ॥ पण विरमे नही मरणथी
 रे, देवी मोह निदान ॥ रंगी० ॥ ३५ ॥ अनरण
 करतां नवि चले रे, कोइ मंत्रीनुं मन्न ॥ ते जणी मौन
 जेई रह्या रे, रोता मंत्री रतन्न ॥ रंगी० ॥ ३६ ॥ पूरी
 ठाल इग्यारमी रे, कांतिविजय कहे एह ॥ मोह छु
 नट जीते जिके रे, होय नर सुखिया तेह ॥ रंगी० ॥ ३७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नूपें मंत्रीशने, देखी करता ढोल ॥ प्रेया
 पुरुष बीजा बली, करवा साज हवीज ॥ १ ॥ तुरत
 मंगावी पालखी, रयण जडित मनुहार ॥ नगरावे
 कजेवर नारिनुं, कनक कलश जलधार ॥ २ ॥ कुंकुम
 चंदन मृगमदे, कर्पूरें करी छेप ॥ कुसुम सरसुं पूजि
 कें, कह्यो धूप उत्क्षेप ॥ ३ ॥ शिखिका माहे थापिठ,
 ते राणीनुं देह ॥ घाले नृप गोलो तटें, शिखिका थागें

करेह ॥ ४ ॥ पुरथो जव नृप नीकले, तव डुखिया
सविलोक ॥ जूरे विलपे हूवकें, रोवे करता शोक ॥ ५ ॥

॥ ढाल वारमी ॥ उजंगडी उजंगडी तो कीजे
मुनिसुवत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन डुःखियो सहु रोवे धणु रे, नृप
विरहो न स्वमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले थावीने
रे, वदन हूया विघाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम ठोडो
थमने साहवा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम
मुख दीठे सुख पामुं सदा रे, ठेह न धो क्षिति कंत
॥ रा० ॥ २ ॥ तुमविण तुमविण थमने कहो कुंण राखरो
रे, शंकटथी महागय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे
कुंण पूरसे रे, बहुजा जाड जडाय ॥ ग० ॥ ३ ॥ न
शक्यो नशक्यो देखी दैव थटारडो रे, थमचो सुख
निरघार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकीठ
रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण
दिन धाज तरुण धरदा मजी रे, करे घणा थारुंद ॥
थन्न न थन्न न जावे नागी निंदडी रे, वाप्यो दिज
डुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विर
व्यापिया रे, घूमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत
सर्वे सजुं रे, गहिजा केई किरिई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावरस

हा वत्त हा निधि हा कुल दीवडा रे, कुलमंमण कुल मं
 ड ॥ हानृष हानृष अमने चंची चढावीने रे, प्रसका
 ई विण ठोड ॥ रा० ॥ ७ ॥ कुलनी कुलनी वृक्षा इम
 विजये घणुं रे, नावी रति दिजगीर ॥ मनमें मनमें खू
 तो नेह नरिंदनो रे, जिम तीखेरो तोर ॥ रा० ॥ ८
 ॥ धिगधिग धिगधिग अमची वृद्धिने रे, जे नावी फोड
 काम ॥ सहज सहज सनेहो अमने ठोटीने रे, जो
 जावे ठे आम ॥ रा० ॥ ९ ॥ मुजरो मुजरो अमचो
 कुंण लेशे हवे रे, कुंण देमे सनमान ॥ आतम आ
 तम निचिंतापे वाडजा रे, इम निंदे परधान ॥ रा०
 ॥ १० ॥ हाजिणे हाजिणे रुपें काम हरावीयो रे,
 यती हूत निंदेद ॥ सुंदर हो सुंदर हो प्रभु नारी कार
 णे रे, किम घाजीश ते देह ॥ रा० ॥ ११ ॥ कदीहो
 कदीहो रुप मनोहर पेवणुं रे, परगट पूनम चंद ॥
 इमकहो इमकहो नयणे जज दवे रे, पुनारिना वृंद ॥
 रा० ॥ १२ ॥ जनक जनक तणीपरें पाड्या प्रेमथी रे, ए
 मयजा पुर लोक ॥ रुजमे रुजमे देव विमोह्या वापटा
 रे, जिम दिणपर दिण कोक ॥ रा० ॥ १३ ॥ नगरी
 नगरी दीमे थ्याज दयामणी रे, जिम दयदाधुं वज्र ॥
 इमकेइ इमकेइ संचरता नृप मार्गे रे, जामे दीन यवज

करेह ॥ ४ ॥ पुरषो जव नृप नीकजे, तव दुखिया
सविलोक ॥ जूरे विजपे हूवकें, रोवे करता शोक ॥ ५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ उजंगडी उजंगडी तो कीजे
मुनिसुवत स्वामीनी रे ॥ ए देशी ॥

॥ परिजन परिजन दुःखियो सहु रोवे घणु रे, नृप
विरहो न खमाय ॥ करुणें करुणें शब्दें बोले थाबीने
रे, वदन हूआ विहाय ॥ १ ॥ रायजिम रायजिम गोडो
अमने साहेबा रे, विण शरणें गुणवंत ॥ तुममुख तुम
मुख दीठे सुख पामुं सदा रे, ठेह न द्यो क्षिति कंत
॥ रा० ॥ २ ॥ तुमविण तुमविण अमने कहो कुंण राखो
रे, शंकटथी महाराय ॥ मनना मनना मनोरथ हवे
कुंण पुरसे रे, बहुला लाड जडाय ॥ रा० ॥ ३ ॥ न
शक्यो नशक्यो देखी दैव अटारडो रे, अमचो सुख
निरधार ॥ नहींतो नहींतो समजु पण केम चूकोठ
रे, मूके विण आधार ॥ रा० ॥ ४ ॥ तिणदिन तिण
दिन बाल तरुण घरढा मली रे, करे घणा आक्रंद ॥
अन्न न अन्न न जावे नाती निंदडी रे, बाध्यो दिल
दुःख दंद ॥ रा० ॥ ५ ॥ हणीया हणीया वज्रकें विप्र
व्यापिया रे, घुमे पडिया केई ॥ हृदय हृदय सुंनाहत
सर्व स्वछुं रे, गहिजा केई फिरेई ॥ रा० ॥ ६ ॥ हावत्स

॥ रा० ॥ १४ ॥ सोंचिय सोंचिय धण कंचण मणि माणि
 कें रे, मोहोटा कीया आप ॥ तुमविण तुमविण तरु
 सम अमचो टालगे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा०
 ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आगले रे,
 आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां
 केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा
 करुणा दाक्षिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥
 कविता कविता सत्य सुजग गंजीरता रे, निरुपम ज्ञा
 न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्यं प्र
 चंड उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ एसवि एस
 वि गुण निरधारी आजयी रे, कीया ते विण मर्म
 ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीया विण गुने
 रे, रंमित दैवे एण ॥ मंमित मंमित विद्यायें तुम सा
 रिखा रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद
 चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, गोडे पंखी चूण ॥
 तो नर तो नर देखी जातो राजवीरे, दुःख पामे नहीं
 कृण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणघटतुं इम
 राजीया रे, हाहा धोंगड धीर ॥ इमपुर इमपुर वासी
 वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥
 दो शत्र ते शत्र तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

त्याहिं ॥ देतो देतो दान याचकने कतरे रे, न्हावा
 लागी माहि ॥ रा० ॥ २२ ॥ जूधव जूधव नाहे त्या
 जल जेतले रे, रढते लोक समग्र ॥ जलने जलने पू
 रे, तव एक ताणियुं रे, आब्यो काठ चद्रम ॥ रा० ॥
 २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीतर तव घोलीपा रे, रे रे
 तारक जादु ॥ लाकड लाकड जलमा सनमुख आव
 तुं रे, वेगें काढी व्यादु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ते एह ते
 योग्य चित्ताने इम सुणी रे, धीवर पेती त्याहिं ॥ वा
 हिर वाहिर काढघो ताणी तरुणो रे, जलकंठुं अव
 गाहिं ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुते बाब्यो नि
 हुं पग्वे रे, प्रापा परें ते थंज ॥ दोसे दोसे मृग कवि
 न त्यागें पडघो रे, जाणो वाहण थंज ॥ रा० ॥ २६
 ॥ आदंजें आदंजें नृपने सेवकें रे, काप्यो लुरियें बंध
 ॥ लटक जटक तुं अर्ध छुदो घडही पडघो रे, झुटीग
 या सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमा तेहमा सुगमदें
 केशर चंदने रे, अग्नी सुंदर अंग ॥ चंगो चरदो घ
 न तारादिक गंधणुं रे, माज ठवि बहुजंग ॥ रा० ॥
 २८ ॥ कंठे कंठे लहके द्वार मनोहर रे, निहित लो
 चन नंग ॥ जलमा जलमा ठानि रति आची रही रे,
 तेतरी आणी अनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

॥ रा० ॥ १४ ॥ सौचिय सौचिय धण कंचण मणि
 के रे, मोहोटा कीया आप ॥ तुमविण तुमविण तरु
 सम अमचो टालगे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा०
 ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक नणे नृप आगळे रे,
 आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जातां जगमां
 केहनो रे, धीरज जीव धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा
 करुणा दाह्णिणताने सूरता रे, धीरज दान समान ॥
 कविता कविता सत्य सुजग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञा
 न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र
 चंद उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ एसवि एस
 वि गुण निरधारी आजयी रे, कीया ते विण मर्म
 ॥ रा० ॥ १८ ॥ रंमित रंमित पंमित कीया विण गुने
 रे, रंमित देवे एण ॥ मंमित मंमित विद्यायें तुम सा
 रिया रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद
 चोपद जल पीवे नहीं तिणे समे रे, गोडे पंखी चूण ॥
 तो नर तो नर देखी जातो राजवी रे, दुःख पामे नहीं
 कृण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर थणघटतुं इम
 राजीया रे, हाहा धींगड धीर ॥ इमपुर इमपुर वासी
 वचन उवेखतो रे, पोहोतो गोला तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥
 शव ते शव तीरें तव उतरावीने रे, मंमावे चय

॥ रा० ॥ १४ ॥ सौचिय सौचिय धण कंचण मणि माणि
 कें रे, मोहोटा कीया आप ॥ तुमविण तुमविण तरु
 सम अमचो टालजे रे, कुण दुःख दव संताप ॥ रा०
 ॥ १५ ॥ याचक याचक लोक जणे नृप आंगर्जे रे,
 आपणो दुःख देखाय ॥ जीवन जीवन जाता जगमा
 केहनो रे, धीरज जीय धराय ॥ रा० ॥ १६ ॥ करुणा
 करुणा दाक्षिणताने मूरता रे, धीरज दान समान ॥
 कविता कविता सत्य सुनग गंभीरता रे, निरुपम ज्ञा
 न विज्ञान ॥ रा० ॥ १७ ॥ साहस साहस सत्य प्र
 चंड उदारता रे, उपगार करता धर्म ॥ ए सवि एत
 वि गुण निरुपम आजयी रे, कीया ते विण मर्म
 ॥ रा० ॥ १८ ॥ मंजित मंजित पंजित कीया विण गुणे
 रे, संप्रति देवे एण ॥ मंजित मंजित विद्याये तुम सा
 रित्या रे, पडिया शंकट जेण ॥ रा० ॥ १९ ॥ चोपद
 चोपद जज पीवे नही तिणे समे रे, गोडे पंखी चूण ॥
 तो नर तो नर देखी जातो राजवीरे, दुःख पामे नही
 कृण ॥ रा० ॥ २० ॥ ममकर ममकर अणुचटुं इम
 राजीवा रे, हाहा धोंगड धीर ॥ इमपुर इमपुर वासी
 वचन उदेखता रे, पांहांतां गोत्रा तीर ॥ रा० ॥ २१ ॥
 दो शव ते शव तीरे तव उतरावीने रे, मंजावे चय

त्याहि ॥ देतो देतो दान याचकने छतरे रे, न्हाव
 लागी माहि ॥ रा० ॥ २२ ॥ नूधव नूधव नाहे त्या
 जल जेतले रे, रढते लोक समग्र ॥ जलने जलने पू
 रे, तव एक ताणियुं रे, आव्यो काठ ठग्य ॥ रा० ॥
 २३ ॥ निरखी निरखी मंत्रीतर तव घोलीया रे, रे रे
 तारक जाडु ॥ लाकड लाकड जलमां तनसुख आव
 तुं रे, वेगें काढी व्याडु ॥ रा० ॥ २४ ॥ एह ठे एह ठे
 योग्य चिताने इम सुणी रे, धीवर पेती त्याहि ॥ बा
 हिर बाहिर काढ्यो ताणी तट्कणे रे, जलजंमुं श्रव
 गाहि ॥ रा० ॥ २५ ॥ बंधन बंधन बहुजे बांध्यो नि
 हें पखें रे, त्रापा परें ते थंन ॥ दीसें दीसें स्थूज कवि
 न आगे पड्यो रे, जाणे वाहण थंन ॥ रा० ॥ २६
 ॥ आदेशें आदेशें नृपने सेवकें रे, काप्यो तुरें पें बंध
 ॥ जटक जटकसुं श्रव छुटो छपटो पड्यो रे, झूटीग
 या सविसंध ॥ रा० ॥ २७ ॥ तेहमां तेहमां मृगमर्दे
 केशर चंदने रे, श्रवची सुंदर श्रंग ॥ चरचो चरचो घ
 न सारादिक गंधसुं रे, माज ठवि बहुनंग ॥ रा० ॥
 २८ ॥ कंठे कंठे लहके हार मनोहर रे, निश्चित लो
 चन नंग ॥ जलमां जलमां ठानि रति आवी रही रे,
 नेतरी आणी थनंग ॥ रा० ॥ २९ ॥ चंपक चंपक

माला नृप मनमोहनी रे, दीठी दैव संयोग ॥ पेखव
पेखवी नृपतिनो दिल जागीउ रे, जागो विरह विय
ग ॥ रा० ॥ ३० ॥ अचरिज अचरिज पाम्या पुरजन
सवे तिहा रे, दूरगया जंजाल ॥ इणी परे इणीपरें का
तिविजयें कही बारमी रे सुंदर ढाल रसाल ॥ रा० ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लोक सकलस्थित पणो, नृपने बोले आंम ॥
चंपकमाला जीवती, लही सुरुतथी स्वाम ॥ १ ॥ पा
लखीयें पोढाडीने, राणी आणी गेह ॥ खरी एहके ते
ह ठे, के कोइ ठजठे एह ॥ २ ॥ नृपति कहे सेवक
प्रते, निरखो शिबिका माहिं ॥ तेह देह तिमहिंज अ
ठे, के विध धरिउ आहिं ॥ ३ ॥ जव सेवक जइ नि
रखीउ, आवी शिबिका पास ॥ तवते शव हड हड
हसत, उडी गयो आकाश ॥ ४ ॥ हैहै हुं वंच्यो ख
रो, ठेतरता नृप ठेल ॥ नारि कारण जे नर मरे, ते
जग साचा वेल ॥ ५ ॥ इम कहेतो चलतो नजे, ज
लत्कार मय देह ॥ दंत मसत करतल घसत, ययो
उलका सम तेह ॥ ६ ॥ थरहरता सेवक सवे, आव्या
नृपने पास ॥ वीतक व्यतिकर नृपने, दाख्यो शंकल
प्रकाश ॥ ७ ॥ राय कहे ए वातनो, कोइ न लहे वि

रंयाम ॥ तेमाटे पुत्रे हवे, राणीने इण ठाम ॥ ७ ॥
 ॥ हाल, तेरमी ॥ सोनानी आंगीहे, सुंदर मारा
 साहेबाने अंग, विच विच रतन जडाव;
 कोडी सूरज करुं वारणेजी ॥ ए देशो ॥
 ॥ मृगा नयणी राणी हे, सुंदरहवे नयण जयाड ॥
 कतो राणी आलग गोडी, कत्रको प्रीतम अलजो करे
 जी ॥ १ ॥ प्रिया मोरो बोलो दे हतित मुखें मीठडा
 बोल, कहो राणी वीतक वात ॥ धुरयो जाणीजे
 जिण परेजी ॥ २ ॥ वषणा ते सुणी हे, राणी कहे
 निडा गोम ॥ कहो पीठ कनारो कैम, नीना वशन
 ए पहेरीनेजी ॥ ३ ॥ लखणमे कना हे, निकट चय
 पाखले लोक ॥ कहो पीठ शिविका मांहे, उवाप जा
 आंठां केदनेजी ॥ ४ ॥ नृपति कहे माहरी हे, सुंद
 र पडे कहेसुं वात, कहो सुमचो विरतंत, जिम अम
 मन सांतो टलेजी ॥ ५ ॥ क्यां गइ क्यां रही हे, नव
 ल किहां पाय्यो द्वार, कहो किम पेठो कात, किणो वा
 ही गोला नलेजी ॥ ६ ॥ पदमणी प्रेमे हे, कहे एणो
 वडनी ठांदि ॥ चालो पीठ थाउ सुव, संनजावुं थ
 म वातडोजी ॥ ७ ॥ नृपति तव थाय्यो हे, सकल ज
 न विंठयो तेथ ॥ अमें नरी कोमल काय, तडकें तपी

थइ रातडीजी ॥ ७ ॥ राणी कहे बाणी हे. प्रीतम प
 ण जाणो ठो तेह ॥ दाहिण मुज फुरक्यो जे नयण,
 सूचक अद्युज निमित्तनोजी ॥ ८ ॥ जमी वन वली
 हे, आबी फरी मंदिर मांहे ॥ दासी गइ लेवा पान,
 वेगवती चंचल तनुंजी ॥ ९ ॥ निझानर तेणें हे,
 सुती जव सेज हुं आय ॥ छुट कोइ आयो पास, तुरत
 उपाडी लेई गयोजी ॥ १० ॥ सुंने गिरि टुंके हे. मूकी
 मुज नागो पीठ ॥ जर्ये घण थरकित गात, सकल दि
 श जोवं सुंययोजी ॥ ११ ॥ दीसे नही कोइ हे, पा
 ठज मुख आगल पास ॥ सुण्युं कोइ विषम आर्क
 व, विरुआ वनचरना घणाजी ॥ १२ ॥ बाध सिंह
 धडूके ह. सबल दीये चित्ता फाल ॥ रमे गीठ देता दो
 ट, किहां कणे मृग करे खेलणाजी ॥ १३ ॥ जावं कि
 ण आगें हे, सुणे कोण दुःखनी बात ॥ चिंता चयसुं
 लगी चित्त, कृणएक दुःख पूरें जरीजी ॥ १४ ॥ सा
 हस धरी साचो हे, चाली दिशि एक निहाल ॥ किहां
 पिच किहां वन केणि, वैरी अकारण थपहरिजी ॥ १५ ॥
 चढीगिरि टुंके हे, करुं निज आनम धात ॥ चित चिं
 ती एहपुं त्याहिं, चाली लड थडते पगेंजी ॥ १६ ॥
 गों तस सिंगे हे, वारु एक नवल प्रासाद ॥ उंचो

अति जलहल ज्योति, जलके अंबर तल जगेजी ॥
 १७ ॥ इयन प्रहृ राजे हे, मोहन जिही लगतो ना
 घ ॥ देखी मणि मूरत खास, अंतर आतम उजस्यो
 जी ॥ १८ ॥ कीधी स्तुति मोटीहे, ललित पद अर्थ
 गंजोर ॥ लागो जिनसुं एकतान, दुःख सयल मनथी
 पिस्सोजी ॥ १९ ॥ कांते कही रुढी हे, सरस ए तेरमो
 ढाल ॥ मीठी जिम साकर डाख, सुणतां काने थमृ
 त चस्योजी ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ विधिविवेक पूर्वक पणें, कीधी में जिन सेव ॥
 जगति निरखी हरखित थई, बोजी शासन देव ॥ १ ॥
 हुं शासन रखवाजिका, चबेसरी मुज नाम ॥ आ
 दि छुवन रक्षा करूं, मजयाचल गुन वाम ॥ २ ॥ म
 जय देवी मुज नाम ते, बीजें ठाण गुणेण ॥ साहमी
 धर्म जणी चरण, प्रणमूं हुं तिणे एण ॥ ३ ॥ कठिण
 हीपुं करी कामनी, मनमां कांइ म बीह ॥ पडे श्रव
 स्या माणसा, नटने सुख दुःख लोह ॥ ४ ॥ पूढ्युं
 में कहे मावडी, किणे आणी मुज आदिं ॥ कहियें स
 वि निरतसुं, तवसा बोजी त्यादिं ॥ ५ ॥

॥ ठाल चौदमी ॥ मेदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरधवल तुज नाहने रे, वीरपाल दुठ बंधु ॥ वड
सांनलो ॥ निर्गुण लोनी राज्यनो रे, कूड कपटनो सिं
धु ॥ व० ॥ १ ॥ वड बांधव हणवा जेणी रे, चिंते वि
विध उपाय ॥ व० ॥ अन्य दिवस वध कारणों रे, पे
तो मंदिर आय ॥ व० ॥ २ ॥ खड्ग घाय मूके खरां
रे, नृप साहामो अति धोत ॥ व० ॥ एक घायें वड
बांधवें रे, पाडयो धरणी पीठ ॥ व० ॥ ३ ॥ शुनना
वें अंते मरी रे, एणे गिरि ए ययो नूत ॥ व० ॥ अ
तुल बली परिवारमें रे, दीगो माहरे दूत ॥ व० ॥ ४
॥ गत नवें ते पापीउं रे, संजारे निज वयर ॥ व० ॥
ठज जोतो नर नाहनां रे, विचरे वनगिरि नयर ॥ व०
॥ ५ ॥ पुण्यव्रजें नसके करी रे, नृपने कांड विरूप
॥ व० ॥ चिंते नृपने नारिणें रे, प्रेम निवड ते अनृप
॥ व० ॥ ६ ॥ जो माहुं नृप नारिने रे, तो मरते नृप
आप ॥ व० ॥ खस जासे सीतज जजें रे, टजसे सय
संताप ॥ व० ॥ ७ ॥ ठानो ठज ताके रसी रे, लागो
रहे नित पुर ॥ व० ॥ सूती सेजें तूं एकजी रे, क
पादो तेणे डुछ ॥ व० ॥ ८ ॥ इणगिरि टुंके मूकीने
रे, आप ययो विसरान ॥ व० ॥ पूरव पुण्य जेटीपा

रे, तैं श्रीरूपन रुपाल ॥ व० ॥ ए ॥ तूंगी हूं जिन न
 निथी रे, आषुं तूं वर माग ॥ व० ॥ छत्रहो दर्शन दे
 बनो रे, दीवो ये सोनाग ॥ व० ॥ १० ॥ देवीने में
 बीनधुं रे, जो तूगी गुज भाय ॥ व० ॥ संतति नहीं
 महारे किस्थो रे, कीजें तास छपाय ॥ व० ॥ ११ ॥
 चंपकमालाने कहे रे, निसुणी वाणी एम ॥ व० ॥
 चबेतरी देवी बली रे, बोली धरी श्रुति प्रेम ॥ व०
 ॥ १२ ॥ पुत्र पुत्रीने जोडले रे, घाशे तुज संतान
 ॥ व० ॥ गर्न रोध तहारे थयो रे, तेतो नूत निवान
 ॥ व० ॥ १३ ॥ हवे दुःख देतां बारछुं रे, निज सेव
 कने नूत ॥ व० ॥ शिक्षा देसुं थाकरी रे, खल न करे
 करतूत ॥ व० ॥ १४ ॥ नृप कहे मति तुज रुश्रढो रे,
 माग्यो वारू एह ॥ व० ॥ चिंता माहारी चरारे रे,
 तुज त्रिण कुण गुण गेह ॥ व० ॥ १५ ॥ प्रिया कहे खिति
 कंतने रे, परम रुपापर जूज ॥ प्री० ॥ सांनजो ॥ हार
 तिथो ए देवीये रे, नामें लक्ष्मी पूज ॥ प्री० ॥ १६ ॥
 सप्रभाव सुर संकम्यो रे, हारखणबहु मूल ॥ प्री० ॥ स
 बल मनोरथ पूरसे रे, करशे जग श्रनुकूज ॥ प्री० ॥
 ॥ १७ ॥ एहयकी सपराक्रमी रे, होशे तुज संतान
 ॥ प्री० ॥ थतुल विधन जाशे परां रे, वधशे जगमा

मान ॥ प्री० १७ ॥ पूठयो बली देवी कहे रे, जूत त
 णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंडावतीये ते गयोरे, तुज ठवि
 गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १८ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
 रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही ब
 पिता गणी रे, घणु दुःख पाम्यो जूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
 सात पोहोरने अंतरें रे, मलशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
 तिण वेला एक खेंचरी रे, नजपंथथो आवंत ॥ प्री०
 ॥ २१ ॥ अदृश्य जाव देवीलहे रे, खगनारी दुई संग
 ॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखोनें रे, पूठयं वचन विजं
 ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, जाख्यो
 सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मितबोली तिका रे,
 मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
 जामिनी रे, करखं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंडावतीये
 मूकखं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
 आसासैं खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
 कांतिविजय इम चौदमी रे, जाखी निरूपम ढाल ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजज गुण
 खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥ १ ॥
 श्री जंपट मुज पति इहां, आवे ठे मुज पूठ ॥ जो

हुन रूप निहालशे, शीज खंरुशे कर ॥ २ ॥ लोक
धरम मादरे हसे, जनमा यधे दुःखदाय ॥ सोइश तुं
कुन घट्टी, परवस वासे यसाय ॥ ३ ॥ नवरस
लानी नाहजो, अयगणशे कुन लाज ॥ ध्यावी तुरत
जिम ताहरो, विषम सुचारुं काज ॥ ४ ॥ एम फही
करतज यही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल
जर बहे, ध्यावी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ बाज पंदरमी ॥ घोडीतो आई थां ॥

रा देशमा मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ एहीर नदी जल घघने ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन
नी ठाट हो, मृगा नयणीरा नमर सुणो वातडी, मा
रुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीपहुं ना
खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥
वा० ॥ हणसे सही इंगि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु
मानें बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति वाट हो ॥
मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन
मुज दुःख वाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥
वा० ॥ सुक कतिन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि
या बले ते खेंचरी ॥ वा० ॥ कीथो फाडी डुजाग हो ॥
मृ० ॥ विइ कखो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

मान ॥ प्री० १० ॥ पूठपो बली देवी कहे रे, नूत त
 णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंडावतीये ते गपोरे, तुज ठवि
 गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
 रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही क
 पिता गणी रे, धणु दुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
 सात पोहोरने अंतरें रे, मजशे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
 तिण बेला एक खेंचरी रे, ननर्पथथो थावंत ॥ प्री०
 ॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी दुई संग
 ॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखीने रे, पूठयुं वचन विजं
 ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, जाख्यो
 सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मित बोली तिका रे,
 मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
 नामिनी रे, करछुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंडावतीये
 मूकछुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
 आसासैं खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाल ॥ प्री० ॥
 कांतिविजय इम चौदमी रे, जाखी निरूपम ढाल ॥ २५ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी हरखी तिका, कहे सांजल गुण
 खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इंणे ठाण ॥ १ ॥
 स्त्री जंपट मुज पति इही, थावे ठे मुज पूठ ॥ जो

कुज रूप निहालशे, शीज खंनशे कठ ॥ ३ ॥ लोक
 परम माहरे हसे, जनमां वधे दुःखदाय ॥ खोइश तुं
 कुज घट्टी, परवश वास वसाय ॥ ३ ॥ नवरस
 जोनी नाहजो, अगणशे कुज लाज ॥ थावी तुरत
 निम ताहरो, विपम सुधारुं काज ॥ ४ ॥ एम कही
 करतज ग्रही, खग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल
 नर बहे, थावी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ ढाल पंदरमी ॥ घोडीतो आई था ॥

रा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ गुहीर नदी जल उमले ॥ वारुजी ॥ ठटके पवन
 नी ठाट हो, मृगा नयणीरा नमर सुणो वातडी, मा
 रुजी ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीयहुं ना
 खे फाट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥
 वा० ॥ दणसे सही इणि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु
 माले बांधशे ॥ वा० ॥ के जाशे खिति वाट हो ॥
 मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें वाहशे ॥ वा० ॥ इम मन
 मुज दुःख पाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥
 वा० ॥ सुफ कतिन एक कात हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि
 था वलें ते खेंचरी ॥ वा० ॥ कीपो फाडी डुनाग हो ॥
 मृ० ॥ ठिइ फखो तस अंतरे ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

मान ॥ प्री० १८ ॥ पूठयो बली देवी कहे रे, नूत त
 णो संबंध ॥ प्री० ॥ चंडावतीये ते गयोरे, तुज ठवि
 गिरिने खंध ॥ प्री० ॥ १९ ॥ तुज ठामें तुज सारिखो
 रे, करी रह्यो मृतक सरूप ॥ प्री० ॥ मरण लही द
 पिता गणी रे, घणु दुःख पाम्यो नूप ॥ प्री० ॥ २० ॥
 सात पोहोरने अंतरें रे, मलसे ताहरो कंत ॥ प्री० ॥
 तिण बेला एक खेंचरी रे, नजपंथथो आवंत ॥ प्री०
 ॥ २१ ॥ अदृश्य नाव देवीलहे रे, खगनारी दुई संग
 ॥ प्री० ॥ एकाकी मुज देखोने रे, पूठयुं वचन विनं
 ग ॥ प्री० ॥ २२ ॥ तस आगल में माहरो रे, नाख्यो
 सवि विरतंत ॥ प्री० ॥ सुणी विस्मितबोली तिका रे,
 मुज दुःखथी निससंत ॥ प्री० ॥ २३ ॥ चिंता ममकर
 नामिनी रे, करहुं अति उपकार ॥ प्री० ॥ चंडावतीये
 मूकहुं रे, जिहां तुज प्राणधार ॥ प्री० ॥ २४ ॥ इम
 आसासें खेंचरी रे, वचन अमृत सुरसाज ॥ प्री० ॥
 कांतियिजय इम चौदमी रे, नाखी निरूपम ढाल ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रूप निरखी दरखी तिका, कहे सांनज गुण
 खाण ॥ विद्या साधन कारणे, हुं आवी इणे ठाण ॥ १ ॥
 खी जंपट मुज पति इहां, आवे ठे मुज पूव ॥ जो

कुज रूप निहाजरी, चीज खंभरी. कव ॥ २ ॥ सोर
 मरम मादर हरी. जनमो वधे दुःखदाय ॥ सोइत तु
 कुज बहरी. परवश वाते बसाय ॥ ३ ॥ नयरस
 लोनी नाहजो. अरगणरो कुज लाज ॥ आवी सुरत
 निम तादरी. विषम सुधारु काज ॥ ४ ॥ एम फही
 कतल घही. रग नारी दे धीर ॥ निकट नदी जल
 नर बहे. आवी तेहने तीर ॥ ५ ॥

॥ दाल पंदरमी ॥ घोडीनो आई घा ॥

रा देशमो मारुली ॥ ए देशी ॥

॥ एहीर नदी जल ठमने ॥ बारुजी ॥ ठटके पवन
 नो वांट हो. मृगा नयणीरा नमर सुषो वातडी. मा
 रुली ॥ निरखी तट तरु मंमली ॥ वा० ॥ हीपहुं ना
 खे काट हो ॥ मृ० ॥ १ ॥ जाणुं हुं एह खेंचरी ॥
 वा० ॥ हणसे सही इंगि वाट हो ॥ मृ० ॥ के तरु
 माजे बांधो ॥ वा० ॥ के जागे खिति दाट हो ॥
 मृ० ॥ २ ॥ के जलपूरें बाहो ॥ वा० ॥ इम मन
 मुज दुख घाट हो ॥ मृ० ॥ तव निरखे ते खेंचरी ॥
 वा० ॥ सुख कविन एक काठ हो ॥ मृ० ॥ ३ ॥ वि
 या बने ते खेंचरी ॥ वा० ॥ कीधो फाडी कुनाग हो ॥
 मृ० ॥ त्रिद कयो तस अंतरें ॥ वा० ॥ पुरुष प्रमा

लिका रे हाजी, बाधे दिनदिन बधते नेह ॥ ए० ॥

२१ ए० ॥ २० ॥ स० ॥ सर्वगाथा ॥ ५४२ ॥

॥ चोपाइ ॥ खंनखंन रस ठे नवनवा, छुपत
मीठा साकर लवा ॥ निर्मल मलयचरित्र जग जयो
प्रथम खंन संपूर्ण थयो ॥ १ ॥

॥ इति श्रीज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनिमलयसुंद
रिचरित्रे पंक्तिकांतिविजयगणिविरचिते प्राकृतप्रबंधे
मलयसुंदरीप्रशवनो नाम प्रथमः खंनः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय खंन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्तिश्री गुरु जिन गिरा, गणधरने करजोडी ॥
बीजो खंन फहुं हवे, थान्नश निझा ठोडी ॥ १ ॥ धुर
मीठी जो होय कथा, कथक वचन निर्दोष ॥ मीठी
तना सुणे बली, तो होये रसनो पोष ॥ २ ॥ फोकट
फोरवे चातुरी, विचमां करे बकोर ॥ रस जंजण विकथा
करे,माणस नहीं ते दोर ॥ ३ ॥ तेहजणी मन थिर करी,
मूकी अजगो धंध ॥ कहेतां ओता सांजलो, तरस
कथा संबंध ॥ ४ ॥ लही हवे कुमरी छुनग, यौवन पूर
अजंग ॥ काखें काम समूझना, वगमें विविध तरंग ॥ ५ ॥

॥ टाल पहेली ॥ पनामारु यौवन आईजी पूर ॥ ए देशी ॥
 ॥ यौवन रस पूरे घड़ी रे, नवलगोरीतो गात ॥
 ललके करे ठविचंडिका रे, जाणु थासो पुनिमनी रात ॥
 ॥ १ ॥ कन्यावारु यौवन आईजी पूर, राली रूपे लूटी
 लोथी रति राणी ॥ कन्यावारु यौवन आईजी पूर ॥ ए
 आंकणी ॥ वेणि निहाली शामली रे, नाखुं नागिण
 घोस ॥ वदन कमल रस लालचें रे, मानु बेठी जमरनी
 वज ॥ क० ॥ २ ॥ जालजलुं नाग्यें नखुं रे, बीपे सबज
 सुघाट ॥ पुण्य रेख जित्वा जणी रे, विधि मांमगे क
 नकनो पाट ॥ क० ॥ ३ ॥ बीठडिया मृगनां जित्या रे,
 लोचन तास वखाण ॥ तीखाई विधिना गढी रे, जिम
 नर चाड्या खुरसाण ॥ क० ॥ ४ ॥ सज्जन मन धारा
 जित्ती रे, नासा सरल सुहाय ॥ चाचें लाज्या सूडला
 रे, ते जखि जखि वनफल खाय ॥ क० ॥ ५ ॥ अधर
 धरे रंग रातडो रे, नवपल्लव सुकुमाल ॥ बडवानल
 जंगति मिसें रे, मानु पेठी विडुम जाल ॥ क० ॥ ६ ॥
 विहुं परवधारे अतिकला रे, तस मुख चंद्र हसाय ॥
 निरखी खिंसाणो चंद्रमा रे, नित्य वदय लही खिंसी
 जाय ॥ क० ॥ ७ ॥ सरल सुंदाली बाहडी रे, तेह लु
 टावे बाल ॥ अनिनव उपे जोडने रे, नमी थावी क

इपतरु माल ॥ क० ॥ ८ ॥ गोत्र कविन कंचुक करपा
 रे, कुच युग एम शोनाय ॥ काम नृपति जीतवा न
 गी रे, इन्दी तंबू दीधा थाय ॥ क० ॥ ९ ॥ छंदर रा
 कोमल पातलुं रे, जेरुवुं पोपल पान ॥ जलकरें
 जाण्यो पदे रे, अति कनक तयकने तान ॥ क० ॥ १० ॥
 गाजे सुंदर वाटजो रे, जीणो केडनो लंक ॥ देवतणी
 वन दिगि गया रे, मृगराज थपा सारंरु ॥ क० ॥ ११ ॥
 जय पुगल दीपे जतां रे, अगला कदली रंग ॥ म
 दन माजियें मिचिपा रे, नरी लागण्य थमून कुंन ॥
 ॥ क० ॥ १२ ॥ अंगा मोमल सुंदरु रे, पग काळव
 अनृहार ॥ नम सुजना करवा जणी रे, जाण्ये कमल
 लीपो थयतार ॥ क० ॥ १३ ॥ कोमल कर पग थी
 गुजरी रे, कपार नाय दीपंत ॥ माणिक मंदिन जेखणी रे,
 गनि पतिनी एदवी नहुंन ॥ क० ॥ १४ ॥ पगें जांजर
 जम जम करे रे, कटि मेखल खलकार ॥ लक्ष्मी पुंन
 नोदामण्यो रे, तम कंठे गाजे दार ॥ क० ॥ १५ ॥
 कर कंकण मणिमय जप्या रे, काने कुंमल जोड ॥
 मोहे सवि जिणगारथी रे, गज गामणिथी निर मो
 द ॥ क० ॥ १६ ॥ निपुणपण दिन निवधी रे, पर

लायक ते आल ॥ नाखी बीजा खंमनी रे, ईम कति
पहेली दाल ॥ क० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे अत्रे एह नरतमां, पुरवर पुहवी ठाण ॥
सूरपाल नामे तिहां, राज्य करे खिति जाण ॥ १ ॥
पटराणी पदमावती, रूप शीज गुण वास ॥ सुत सुं
दर तेहने हूँ, नाम महाबल तास ॥ २ ॥ विद्या सा
धक कोइक नर, सेव्यो कुमरे एण ॥ रूप पलटण
कारणी, विद्या दीवी तेण ॥ ३ ॥ नाग दमण व्यामो
हनी, नूत दमणि बशितंत ॥ मंत्र यंत्र कार्मण प्रसु
ख, शाख्यो कुमर अनंत ॥ ४ ॥ सूरपाल नृप कारजे,
खासा आप खवास ॥ निलणु आपी मोकजे, वीर
धवल नृप पास ॥ ५ ॥ कुमरें पण नृप बीनवी, कीधुं
साथ प्रयाण ॥ केतेक दिन चंडावतो, पोहोता सुगुण
सुजाण ॥ ६ ॥ मूकी मुहगो जेटणो, उचित करी व्यव
हार ॥ नृप आगल वेग सह, नाखे कुशज प्रकार ॥
॥ ७ ॥ निरंखी नृप कह इश्या, ए कुंण तरुणो जेह ॥
एक सचिव माह्यो कहे, मुज लघु बांधव एह ॥ ८ ॥
फही काम निज स्वामीनां, कठ्यो तेह प्रधान ॥ नृप
दर्श मंदिर जई, उतरिआ गुनथान ॥ ९ ॥ राज कुम

र मन कातुक, निरखत पुर थावात ॥ जमतो जम
 तो थावीउ, मलया मंदिर पास ॥ १० ॥
 ॥ ढाल बीजी ॥ थाहारा मोदला कपर मेह जबूके
 बीजली होलाल, जबूके बीजली ॥ ए देशी ॥
 ॥ कुमरी कुमरनुं रूप, निहाली तब तिहा लाला
 ल निहाली ॥ मामे मीट अनूप कुमर, कनो जिहा
 हो ॥ कु० ॥ जक नपडे तिल मात्र, के विरहयो
 परजली हो ॥ के० ॥ कामातुर थकुलात के, दुइ
 मन थाकली हो ॥ के० ॥ १ ॥ निरखी सुंवर अंग
 वखाणे तेहना हो ॥ व० ॥ फूल्या जासू रंग वरण
 तल एहना हो ॥ व० ॥ तेज तणो अंवार रह्यो सुं
 रपति जित्यो हो ॥ र० ॥ मयगल सुंमाकार सुजंया
 पुग तित्यो हो ॥ सु० ॥ २ ॥ सुदर कटीनो लंक वि
 राजे लंकथी हो ॥ वि० ॥ मावे करतल माग नजो
 मध्य अंकथी हो ॥ न० ॥ हृदय महा सुविशाज छ
 जा नोगल जित्ती हो ॥ छ० ॥ रेखा अण गलनाल
 कहुं थपमा कित्ती हो ॥ क० ॥ ३ ॥ सूढा चंचु त
 मान सुहावे नाशिका हो ॥ सु० ॥ मणिदर्पण थप
 मान कपोर्जे नाशिका हो ॥ क० ॥ कामणगारी कां
 ने थदी बिहुं थाखदी हो ॥ थ० ॥ श्याम नमर

अनुमान शिखा रतिपति ठटी हो० ॥ शि० ॥ ४० ॥ व
 निहारी जवं तास घटचो जेण एहवां हो० ॥ घ० ॥
 निरख्यो रूप निवास जनम सकलो हवो हो० ॥ ज० ॥
 नृप बाला जरी नयण पीये रस रूपनो हो० ॥ पी० ॥
 लागो जडने गपण उमाहो चूपनो हो० ॥ ठ० ॥ ५ ॥
 नृपसुत पण ते देखी ययो मदनकुलो हो० ॥ थ० ॥
 बाध्यो विरह विशेष अजेख उपापलो हो० ॥ अ० ॥
 अहो अहो रूप निहाली चतुर गुण धारिका हो० ॥
 च० ॥ परणी थठे एह बालके दजीअ कुंआरिका
 हो० ॥ के० ॥ ६ ॥ इम चिंतवतां सेख जखीने बा
 जिका हो० ॥ ज० ॥ नाखे नीतुं देखत लागी जा
 जिका हो० ॥ तजा० ॥ कुमरें सकल उदंत चतुर प
 णें बाधिया हो० ॥ घ० ॥ पदपद अंग अनंतह द
 रस्य रोमांचिया हो० ॥ ह० ॥ ७ ॥ कवण थठे तुज
 जाति रहे तुं किहां बली हो० ॥ १० ॥ नाम कवण कु
 ण जाति जायो तुं महाबली हो० ॥ जा० ॥ वीरधवल
 नी जाति थ हुंहुं कुमारिकां हो० ॥ थ० ॥ मोही ता
 हरु गात निहाली वारिका हो० ॥ नि० ॥ ८ ॥ तुम
 विरहें मुज काय रही ए जलबली हो० रही० ॥ जे
 ट देइ महाराय करो हवे सीअली हो० ॥ क० ॥ वा

चो इम विरतंत कुमर मन वेधितं हो० ॥ कु० ॥ ने
 ह निविडने तंत विहुं मन साधितं हो० ॥ विहुं० ॥
 ए ॥ कुमर थई थिरथंन निहाले वली जिहां हो० ॥
 नि० ॥ कोइक नर निरदंत कहे आवी तिहां हो० ॥
 क० ॥ कुमर संवाहो वेग पियाणो आज ठे हो० ॥
 पि० ॥ ठामो निरखण नेग उतावलो काज ठे हो०
 ॥ १० ॥ चैरवसाव्यो आथ तिणे तिहां आवीने हो०
 ॥ ति० ॥ हठनाण्यो अकुजाय चव्यो विरचाइने हो०
 ॥ च० ॥ विरहो तास कठोर हियामां आथडे हो० ॥
 हि० ॥ माने आघा जोर चरण पाठा पडे हो० ॥ च०
 ॥ ११ ॥ चिंते चित्तमां आप जणाव्यो में नही हो० ॥
 ज० ॥ रहेसे मुज संताप मिलणनो ए सही हो० ॥
 मि० ॥ चालणरी जो वार हसे एका घडी हो० ॥ ह०
 ॥ रहेसे पण निशिचार आवीश हुं दडवडी हो० ॥
 थ० ॥ १२ ॥ धारी इम मनमांहे गयो निज थानकें
 हो० ॥ ग० ॥ अचसर देखी त्याहिं आव्यो उचानकें
 हो० ॥ आ० ॥ किरणरूप थइ फाल दिये गढ ऊपरें
 हो० ॥ दि० ॥ आव्यो पहेले माल विद्याधरनी परें
 हो० ॥ वि० ॥ १३ ॥ कनकवती नृपनारि निहाले पेस
 तो हो० ॥ नि० ॥ कवण पुरुष इणे ताम आव्यो कि

ही ठानें हो ॥ प्र० ॥ रोसाणी चिंतें ए घूरत, लागीं
 कन्याने कानें हो ॥ प्र० ॥ ७ ॥ करी संकेत मझो ए
 एहनें, मुज कारज नवि तोधुं हो ॥ प्र० ॥ ८ ॥ दोडीने
 दादरने धारें, ठानेंसें तालुं दोधुं हो ॥ प्र० ॥ ९ ॥ कुमरी
 कहे मुज एह विमांता, मुज मातानी शोकि हो ॥ प्र० ॥
 कनकवती इणो कपट करीनें, राख्यांते विहुं रींकी हो
 ॥ प्र० ॥ १० ॥ अतिकर सर्व सुण्यो रीताली, अनरय
 करसे प्राहिं हो ॥ प्र० ॥ कुमर नणो एहनें हुं कूडें,
 वंची आब्यो आहिं हो ॥ प्र० ॥ ११ ॥ घात करे जई इम
 तेणो बेला, कनकवती नृप पासें हो ॥ प्र० ॥ आबी
 प्रकाशे सुख रस बाही, दोठी वात बलासें हो ॥ प्र०
 ॥ १२ ॥ कोपें लोचन रातां कीधों, हणवाने मन प्रे
 खुं हो ॥ प्र० ॥ गुनट घटा बींटये नरनायें, कन्या मं
 दिर घेयुं हो ॥ प्र० ॥ १३ ॥ कहे कुमरी हैहै विप
 कन्या, हुं तरजीकां नायें हो ॥ प्र० ॥ मुज कारण अ
 नरय लहमे, ए आयो परायें हायें हो ॥ प्र० ॥ १४ ॥
 कुमर नणो गुनगे कां बोद्धो, एहयो नहों मुज पी
 डा हो ॥ प्र० ॥ परयर पेसे तेतो किहां किणो, राखे
 वलकल बीमा हो ॥ प्र० ॥ १५ ॥ इम कहो आप शि
 ल्यायी काडी, मुटिका मुखमां धारी हो ॥ प्र० ॥ तत

विसराल हो ॥ प्र० ॥ कांति कहे इम बीजे खंने, ए
थइ बीजी ढाल हो ॥ प्र० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कनका चित्त चिंता करे, नयणें नावे नींद ॥
मलया किम दुःख पामसे, मानो जेह महींद ॥ १ ॥
हवे कुमर मुख मांहेथी, काढे गुटिका रयण ॥ प्र
गट दूउ नररूप त्यां, जाणे नवलो मयण ॥ २ ॥ क
हे कुमर अनरथ बडो, दुउं एह विसराल ॥ जो बजी
रहियें तो दूवे, अणचिंत्यां को आल ॥ ३ ॥ तेमाटे
तुम सीखथी, चालीश हुं निजदेश ॥ प्रीतजता रांजा
लजो, कगी हृदय निवेश ॥ ४ ॥ कखो शुभन भेजा
बडो, आपण विहुंनो जेण ॥ चिंता करशे तेह विधि,
मकरें चिंता तेण ॥ ५ ॥ बलि अनोपम तुजने कहुं,
सुंदर एक सलोक ॥ सरवकाल ते चिंतवे, थाशे सघजा
थोक ॥ ६ ॥ तद्यथा ॥ विधत्तेय विधिस्तत्स्या, (चिम
स्कारपामीने) न्नस्यात् हृदयचिंतितं ॥ एवमेवोत्सुकंचि
त्त, मुपायां श्रितयेद्बहून् ॥ १ ॥ दोहा ॥ वरण उकेखा
ढांकणे, इम लागा तस चित्त ॥ तेह प्रशंसे चित्तचकी,
ए श्लोक सबल सुपवित्त ॥ ७ ॥ सुखिया होजो साज
ना. कशह्या होजो पंथ ॥ देजो वेग भेलावडो, ग्रहे

जो लखमी गंध ॥ ७ ॥ कहे वाला नरी जीवणा, रे
 ठयला ठोगाल ॥ नेह नवल तुज खटकरो, जिम तन
 खुतो शाल ॥ ८ ॥ सुत मोहोलथी नीतरी, आधी च
 द्या केकाण ॥ नियत प्रयाणे चालतो, पोहोतो पु
 हवी ठाण ॥ ९ ॥

॥ डाल त्रोथी ॥ करेलणां पढिदे रे ॥ एदेशी ॥

॥ तात चरण थावो नम्यो, थापे अनोपम हार ॥

वीरधवल दीधो मुने, इम कही कूढ तिवार ॥ १ ॥ नयिक

जन सांजलो रे, मजयानो अधिकार ॥ २ ॥ एतो सु

एतां हरे अपार ॥ ३ ॥ ए थांठणी ॥ राय कहे तुज

चातुरी, दीठी अधिक बदीत ॥ थांडादिनमां जेहवी, वा

धी एवढी प्रीत ॥ ४ ॥ इम कहीने कंठे ठव्यो,

कुमरें मायने हार ॥ घणुं सराहें पुत्रने, राणी पण

तेणीवार ॥ ५ ॥ ३ ॥ राज कुमर इम चिंतवे, पण

बांध्यो में जेह ॥ कन्या किम परणी हवे, साचो करणुं

तेह ॥ ६ ॥ ४ ॥ तिणे अदसर एक थाविउं, वीरधवल

नो दूत ॥ प्रणमी नृपने वीनवे, सांजल नर पुरुदूत

॥ ७ ॥ ५ ॥ पुत्रि अमचा स्वामीनी, मजया सुंदरी

नाम ॥ तास स्वपंवर मांमीउं, करीने प्रतिज्ञा आम

॥ ८ ॥ ६ ॥ पनुप पूर्व पणिया तणुं, वज्र सार ठे

सार ॥ जे नर तेह चढावशे, वरशे तेह कुमार ॥ ज० ॥
 ॥ ७ ॥ देशदेशावर रायनां, नंदन तेढण काज ॥ दू
 त मोकल्या राजीये, हुं मूक्यो तुमराज ॥ ज० ॥ ८ ॥
 देव महाबल मोकलो, कुमार काम श्रवतार ॥ कुं
 णजाणे एह्यो विघे, योग निख्यो थानार ॥ ज० ॥
 ९ ॥ ज्येष्ठ कृष्ण एकादशी, आज थइ तिथि खास ॥
 आगामी चौदशि दिने, होसे स्वयंवर तास ॥ ज० ॥
 १० ॥ बांटे हुं मांदो थयो, तेहंयी दूउ विलंब ॥ क
 री उतावलो मोकल्यो, लगन अठे अविलंब ॥ ज० ॥ ११ ॥
 सनमानी ते दूतनें, शीख करे नूपाल ॥ कुमार सना
 मां सांनली, चिंतवे इम हरखाल, ॥ ज० ॥ १२ ॥
 देवें मुज करुणा करी, नोठा दुःख संयोग ॥ सुखमां
 हे नोजन मले, तिम ए दीसे योग ॥ ज० ॥ १३ ॥
 काज हतुं सांसें पड्युं, सिखाग्रहुं ते आज ॥ विश्वा
 वीश दया करी, मुज कपर महाराज ॥ ज० ॥ १४ ॥
 तात दीए मुज आगन्या, तो तिहीं जइ तत्काल ॥
 राजपुत्र कुल श्रवणी, हुं परणुं ते बाल ॥ ज० ॥
 ॥ १५ ॥ तव नृपनिरखी पुत्रने, कहे चउ तुं शुनका
 ज ॥ बल बाहनना घाटस्यो, रातें सधावो आज ॥
 ज० ॥ १६ ॥ कहे कुमार विनयें जखो, तात वचन

परमाण ॥ बल सज कीधुं तावजी, बोझो दारखें रा
 ण ॥ न० ॥ १७ ॥ लखमी पूंज मनोहर, सुत ह्यो
 सार्थे दार ॥ कुमर कहे ते हारनी, यात सुणी निर
 धार ॥ न० ॥ १८ ॥ खनां मुज निगिनें समें, करें उ
 पइव कोइ ॥ बल सज नृरण दरे, गुन बीदावें सोइ
 ॥ न० ॥ १९ ॥ मात कनेयी में ग्रही, दार उच्यो मुज कं
 ॥ २० ॥ हार गयो जाणो दरे, माता धारे दुःख ॥
 करी प्रतिज्ञा में तिहा, माताने अनिमृग ॥ न० ॥ २१ ॥
 जो नापुं दिन पांचमां, ते मुंनावली हार ॥ तो मुंज
 काया आगमां, दहेवी ए निरधार ॥ न० ॥ २२ ॥ हार
 कदापि नवि जहुं, तो मुज मरण सहाय ॥ करे प्र
 तिज्ञा आकरी, डार धरती इम माय ॥ न० ॥ २३ ॥
 अदृश नहे जे रातिमां, राहुन के चूटेज ॥ पोहोर
 एक बे रही इहां, नाखुं तम पग जेज ॥ न० ॥ २४ ॥
 स्वयं कर्मा तेह डुटनें, सेई हार जजिनांति ॥ सुंयो
 माताने पठे, चाजीज पाठलो राति ॥ न० ॥ २५ ॥
 राय प्रशंसे पुत्रनां, सादस सत्त्व विशाल ॥ बीजे म्वं
 ए कही, कांति चोथी ढाल ॥ न० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमर मंदिर गयो, अलवे त्यांथी कवि ॥
 वार लडी खांहुं ग्रहा, बेगो दीवा पूठ ॥ १ ॥ मध्य
 रयणीनें थांतरें, चंचल सबल जस टेक ॥ गोख मा
 र्गथी मलपतो, पेसैं कर तिहां एक ॥ २ ॥ कुमर वि
 चारे पूर्वपरें, करते कांइ विरुद्ध ॥ तेह थकी पहेली
 जली, थापुं शिक्षा छुद्ध ॥ ३ ॥ सोवन घूडी खलख
 लें, उपें कंकण रेह ॥ तेह जणी कर नारिनो, एठे
 निस्संदेह ॥ ४ ॥ देवी अथवा दानवी, थावी ठे इहां
 कोय ॥ देव सक्तिनां बल थकी, दृष्टें नावे सोय ॥
 ॥ ५ ॥ जो नाखुं खांहुं खरुं, तो बली जासे जागि ॥
 चढशे हाथ न माहरे, नहों थावे बली लाग ॥ ६ ॥
 एम विचारी कठव्यो, त्रिवली जालें चाडि, चढि बेगो
 कर ऊपरे, ग्रही वे हाथें गाडि ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ तट यमुनानोरे अतिरजिया
 मणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ मंदिरमांथी रे ते कर कंपतो रे, गयणें चढिउं
 थांटा स्वाय ॥ सुर अमुरनां रे कुल बीवरातो रे, उ
 लट पलट करी चाढ्यो जाय ॥ मं० ॥ १ ॥ निरजय
 बेगो रे कुमर ते ऊपरें रे, तेहनें जारें कर लचकाय ॥

ए ॥ किहां मुज माता रे किहां तात माहरो रे, किह
 हुं ए किम थासे खल ॥ हार नपामे रे जतनी जो हवे
 रे, करजो जीवितनुं प्रतिकूल ॥ मं० ॥ १० ॥ माय
 वियोगें रे चली मुज तातजी रे, घरवा प्राण थये थ
 समथ ॥ हैहै दीसे रे कुलक्षय माहरो रे, इम चिंता
 नर बेवो तथ ॥ मं० ॥ ११ ॥ खरखर बागो रे तव
 रव नूमिनो रे, नूपति सुत निरखे तरुमूल ॥ नारिग
 लीने थरधी थावतो रे, नजर पड्यो थजगर एक धू
 ल ॥ मं० ॥ १२ ॥ कुमर विचारे रे ए प्राणी गली
 रे, थावे तरु थाफलवा कोय ॥ ए बिगोडायुं रे जो
 जोरो करी रे, तो मुज थातम सफलो होय ॥ मं०
 ॥ १३ ॥ साहस धारी रे तरुयी कतखो रे, बेवो वा
 नें थावा गौड ॥ थजगर थापो रे देवा चिंटनी रे,
 कुमर ग्रहे तस मुख थति प्रीट ॥ मं० ॥ १४ ॥ य
 दन विदायुं रे हांठ बिन्दे ग्रही रे, ते माहेंयो काढी
 एक नारि ॥ बचन कदंनी रे माहारे इण समे रे, श
 रण होजो महाबल एक तारि ॥ मं० ॥ १५ ॥ ना
 न गुणीनें रे पोतानुं तिहां रे, विस्मय विकसित लो
 चन थाय ॥ दूरें ऊहाडी रे थजगर नासीठ रे, देवे
 थवला सुखगत ठाय ॥ मं० ॥ १६ ॥ मजपा सरसीरे निर

॥ दोहा ॥

॥ जणे कुमर ह्रीणोदरी, मांजी कहे तुं वात ॥ अ
जगर वदने किम पढी, राखीर्तजिटात ॥ १ ॥ कहे कु
मरी हु नवि लहुं, अजगर वदन प्रवेश ॥ सुणो कवि
एथइ जे कहुं, अवर दात लंबलेश ॥ २ ॥ तेहया
मां पग रव थकी, जाण्यो जन संचार ॥ कुमर विचारे
रातिमां, केहनो एह विहार ॥ ३ ॥ आंवे ठे साहमो
धस्यो, रसीयो के लुंटाक ॥ व्यसनी मव पीयो अठे,
के कोइ जार लडाक ॥ ४ ॥ के कोइ परिचित नारिनो,
आवे ठे इणियाट ॥ मीट न पाहुं गोरढी, ए अवसर
ते माट ॥ ५ ॥ एम विचारी शिर थकी, काढी गुटिका
टाल ॥ आंबानां रसमां धती, कखुं तिलक तस जाज
॥ ६ ॥ पुरुष थयो नारि टली, कुमर कहे मत शंक ॥
रूप पाजट्युं तुळमैं, आवत नर आशंक ॥ ७ ॥ ज्यां
नहिं मांजुं थूंकथी, त्यां लगें तुज नर रूप ॥ पुरुष गं
या मांज्या पठी, थाजो मूल सरूप ॥ ८ ॥ आपण वे
ए एक ठे, सुखें पधारो आंहिं ॥ इम कही निरखत
वाटडी, दीवी नारी त्यांहिं ॥ ९ ॥ तरुणी हरिणी परें
धती, आवे थिरकित गात ॥ नृप नंदन मधुरे स्वरें,
पूठे तस थवदात ॥ १० ॥

ल सामिनी; पण नाव देखे कोइ, किहां अवगुण क
 णी ॥ ६ ॥ नृप पुत्री नर रूप, रही पूठे इक्षुं; ते साथे
 ईम रोप, तणु कारण किक्षुं ॥ कुमर कहेसंतान, हो
 वे जो शोकनां; शोकतणे मनशाल, समा हुए सहेज
 नां ॥ ७ ॥ नारी नणे ए साच, कहा ठे जेहवो; जो
 तां तेहनां ठिड, समय केतो हवो ॥ आजूनी अधरा
 त, थइ कौतुक कथा; दीठी कहुं तुज आगे, नहो ते
 अन्यथा ॥ ८ ॥ नामे लखमी पूंज, गले कनका तणे;
 हार ठव्यो किए आइ, गगनथी चुंप पणे ॥ कुमर
 विचारे हार, ठव्यो तेणे व्यंतरी; निश्चय कोइक
 नेह, कारणथी कतरि ॥ ९ ॥ पामी नहिं में छुट,
 किहां हमणा जगें; ते पाम्यो हवे वात, सवे होसे व
 रें ॥ सोमा कहे मुज हार, देखाडी श्रीमुखें; वारी हुं
 ए जान, किहां कहेती रखे ॥ १० ॥ हार रखण ब
 हु मूल, लुपाडी एकमने; मुजनें साथे लेइ, गइ न
 पति कनें ॥ अवसर देखी दोष, कषाडे अतिघणा;
 विरस पणे एम आल, लवे मलया तणा ॥ ११ ॥ स्वा
 मी सुणो अवदात, कहुं पुत्रीतणा; नयणे वीठा आ
 ज, निपट असुहामणा ॥ पुहवो गण नगरजो, नूप
 यखाणियें; सूरपाल तस पुत्र महावज्र जाणियें ॥ १२

॥ ठठी ढाल रसाल, ए बीजा खंमनी; कांतें कही,
मीठास, जरी मधुखंमनी ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रोप गहिल नरपती तिहां, अमने करी विदाय ॥
चंपकमाला जामिनी, बोलावी विलखाय ॥ १ ॥ व्य-
तिकर सर्व सुणावियो, राणीने राजान ॥ निजपुत्री
उपर तिका, थई रोप असमान ॥ २ ॥ मांगो हार
मनोहर, जो नवि देसे वाल ॥ तो व्यतिकर सधलो
खरो, इम कहे चंपक माल ॥ ३ ॥ कन्या तेडी मांगीयो,
हार रपण ततकाल ॥ अमजुली मौनें रही, मनमां
पेठी जाल ॥ ४ ॥ चित्त विकल्पी कूड इम, उत्तर दीधुं
एण ॥ तात हार मुज कंठयो, अपहरि लीयो केण ॥ ५ ॥
अवगुण इंधण अति सबल, वचन पवन नृप कुंम ॥
रोप अनल कुमरी बहन, वागो जई ब्रह्मंम ॥ ६ ॥

॥ ढाल सातमो ॥ जीणा मारुजीनी करहलडी, करह-
लडी केशररो कूपो मने थालाहो राज ॥ एदेशी ॥

॥ नृप कहे निज पुत्री जणी, फिट पापिणी हति
यारी, सुखहुं कांई देखाडे होराज ॥ अलगी रहे मुज
नयणथी, कुजखंपणी मति हीणी, मुजकां लाज ल
गाडे होराज ॥ १ ॥ न्हानी पण दोर्ये जरी, जिम वि

पहली दादा, अगले जागी मारे होमज ॥ कल्या
मारे नेमणी थु जागी उपमणी वेर दिमाय दगारे
होमज ॥ ॥ अगले, वृद्ध दिमाय मग्यनी, चरित
विमल अर्जुन उमा उमा मग्यनी जाग होमज ॥
म्यान अगले ना उम कर, अगले वर ना उम कर
अगले अगले अगले अगले अगले अगले अगले
अगले अगले अगले अगले अगले अगले अगले
अगले अगले अगले अगले अगले अगले अगले
अगले अगले अगले अगले अगले अगले अगले

ज ॥ ७ ॥ बाह्मी पण बैरणी दूई, जिम विपथरीयें मंकी
 थागुली होय डुवालही होराज ॥ रिपुकुलने जा न
 वी मले, ते पहेली ए हणवी, पाप न गणवो काह्मी
 होराज ॥ ८ ॥ दुःख जरी रंयणीनें गमी, प्रह कालें
 नृप तेडी, सेवकनें इम जासे होराज ॥ मलपाने ह
 णजो तुमें, हुकम फरी मत पूगो, रखे किहां किण ए
 नासे होराज ॥ ९ ॥ मंत्रि सुबुद्धि सुण्यो सवे, अति
 कर ए कन्यानो, थावी नृपने जेटे होराज ॥ करजोडी
 इम बीनवे, असमंजस ए मांढ्यो, जूप कहो किण
 खेटें होराज ॥ १० ॥ सुं थपराधि कन्यका, नेह गयो
 प्या पहेलो, धरता जे एह साथें होराज ॥ विपतरु
 वर पण कापवो, नघटे जेह ठठेल्यो धुरथी, थापणें
 हाथें होगज ॥ ११ ॥ देव विचारी कीजीपें, जिम न
 होवे पठतावो, पठे फल पाकंतां होराज ॥ सकल वि
 चार सुणावीठ, सचिव जणी नृप धुरथी, सचिव न
 यो जाखंतां होराज ॥ १२ ॥ मौनधरी मंत्रि रह्यो,
 सेवक नृप आदेजो, मलया मंदिर थावे होराज ॥ गद
 गद कंठें इम कहे, तुज वर नृप रुठो, थाणा वध
 फुरमावे होराज ॥ १३ ॥ दीन वदन कन्या कहे, वीरा
 नृप रिम कोप्यो, ते कहे नजहुं काई होराज ॥ क

की, आवे नृपनै पास ॥ कुमरीनां संदेसदा, इम संज
लावे तास ॥ ३ ॥

॥ ढाल आवामी ॥ कोइलो परवत धुंधजो

॥ होलाल ॥ ए देशो ॥

॥ संदेसो मलया कहे होलाल, सानिल पुरना ईत
॥ नरिंदजी ॥ गुनह करी में राबलो होलाल, थलवें
पाई रीत ॥ न० ॥ १ ॥ सं० ॥ अवगुण स्वमजो महारो
होलाल, कीधा जे में थजाण ॥ न० ॥ भरण तरणमें
ते सिरें होलाल, दंन कखो परमाण ॥ न० ॥ सं० ॥
२ ॥ आबुं प्रद्यु पद नेटवा होलाल, तुम वचनैं महा
जाग ॥ न० ॥ अतिथि दूथा परलोकना होलाल,
जहेसुं तेवली लाग ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ इम नग
मेंतो इहां थकी होलाल, ग्रहेजो प्रणति थनेक ॥
न० ॥ प्रणति वली बिहुं मायने होलाल, कहेजो सु
ज सुविवेक ॥ न० ॥ सं० ॥ ४ ॥ थनरथ जेमें आच
खो होलाल, ते जांखो निरसंक ॥ न० ॥ दोष देखा
डी मारतां होलाल, नहुवे कालकजंक ॥ न० ॥ सं०
॥ ५ ॥ नूप विचारे देखजो होलाल, करी बैरीनां काम
॥ सुलोचनी ॥ गुनह पुठावे थापणो होलाल ॥ थण
जाणी थइ थाम ॥ सुलोचनी ॥ ६ ॥ चरित्र जजो मल

सीयां होलाल, पूठे बोले एम ॥ सु० ॥ च० ॥ १४ ॥
 जो तुज मनमां एवडी होलाल, हुंती ताती रीत ॥
 सु० ॥ कांई स्वयंवर मांझीने होलाल, तें तेदया थव
 वनीत ॥ सु० ॥ च० ॥ १५ ॥ पाव्याजे पोता वटें हो
 लाल, पहेलां पोरी लाम ॥ सु० ॥ ते किंकर कुलने
 हंवे होलाल, येठे कां दुःख हाड ॥ सु० ॥ च० ॥ १६ ॥
 किम करणुं रहेसुं किहां होलाल, तुम विरहें तरसं
 त ॥ सु० ॥ लागे ए थलखामणो होलाल, फीटल
 प्राण रहंत ॥ सु० ॥ च० ॥ १७ ॥ लोक घणा नगरी
 तणा होलाल, विलख वदन कहे वेण ॥ सु० ॥ कु
 मरी रयण सीधावते होलाल, जगत दुजं गत रेण
 ॥ सु० ॥ च० ॥ १८ ॥ राय सुता पगमां चुजे होलाल,
 तीखा कंटक कोडि ॥ सु० ॥ मान रक्त रसिया मुखें
 होलाल, पैसे पगतल फोडि ॥ सु० ॥ च० ॥ १९ ॥
 थाई कूथा कंठडे होलाल, बोले इम मुख वाच ॥
 सु० ॥ कुमार महावलनो इहां होलाल, सरण हजो
 मुज साच ॥ सु० ॥ च० ॥ २० ॥ वाल जंपावे कूपमां
 होलाल, पडती जिम जलवाल ॥ सु० ॥ पुरजन तव
 हा हा रवें होलाल, पूरे गगन विचाल ॥ सु० ॥ च० ॥
 ॥ २१ ॥ सिंचे धरणी थासुयें होलाल, निंदे नृपने

सु० ॥ देता दैव संतनडा होलाज, थाव्या
 लेय ॥ सु० ॥ च० ॥ २२ ॥ खबर कही जे
 होलाज, संतुठो नरपाल ॥ सु० ॥ बीजे खमे
 होलाज, कांत कही ए ढाज ॥ सु० ॥ च० ॥ २३ ॥
 ॥ दोहा ॥

इये नरपति हरख्यो हीये, चितमा चिंते एम ॥
 पुत्री छुटने, थपो वंशने खेम ॥ १ ॥ आमंठ्या
 जे, तात जणाबुं वात ॥ मुज तनुजा व्यापे
 ति थावो किण घात ॥ २ ॥ बजी पूवुं कनका
 मुज उपकारक एह ॥ इम विचारी सचिवबुं,
 होतो तत गेह ॥ ३ ॥ बार जडवा देखो ति
 मे चित्र सरूप ॥ कुंघी विवर कमाडनो, तेहमां
 नूप ॥ ४ ॥ गर्न नवन दीपक करी, छेई द्वार
 ॥ दीगी नूपे विवरथी, करति इम मनोहार ॥ ५ ॥
 ल नवमी ॥ केशर वरणोहो काढ कसुंघो
 रा लाल ॥ ए देशी ॥ थथवानेमि पयंपेहो
 प्रीति संनालो महारा लाल ॥ एदेशी ॥
 द्वार ठविला हो करुणा धरजो ॥ मारा लाल ॥
 हरजो हो मंगल करजो ॥ मा० ॥ दुर्जन जायो
 रमणि बीजो ॥ मा० ॥ दीगो ताहारां हा सवज

पतीजो ॥ मा० ॥ १ ॥ राख्यो गोपवी हो गानो पहे
 लो ॥ मा० ॥ नूप नंजेरी हो कीधो घहेलो ॥ मा० ॥
 वैरिणी मलया हो कूप नखावी ॥ मा० ॥ संपत्ति स
 यली हो मुज घर आवी ॥ मा० ॥ २ ॥ ते सांनजिने
 हो नूपति बोळ्यो ॥ मा० ॥ इण पापिणीयें हो मुजनें
 जोळ्यो ॥ मा० ॥ कपट करीने हो पोतें चोखो ॥ मा० ॥
 मलया माथे हो दूषण उंखो ॥ मा० ॥ ३ ॥ धिग तुज
 जीळ्युं हो अधम उगारी ॥ मा० ॥ वांक विदूणी हो
 मलया मारी ॥ मा० ॥ कदिही न तेणें हो कीडी ड
 हवी ॥ मा० ॥ उंचे सासें हो बोले न तेहवी ॥ मा०
 ॥ ४ ॥ हैहै वंच्यो हो कपट पवाडे ॥ मा० ॥ इम
 कही वारे हो हाथ पठाडें ॥ मा० ॥ गाळें पोकारी
 हो धरणी ढलीठ ॥ मा० ॥ दुःखडे दाधो हो मूर्ख
 मजिठ ॥ मा० ॥ ५ ॥ लोक सुणोने हो दोडो था
 च्या ॥ मा० ॥ शुं थयुं नृपने हो इम कहेताच्या ॥
 मा० ॥ तेहवा मांहे हो कनका त्रावी ॥ मा० ॥ गोख
 मारगधी हो कूदी नावी ॥ मा० ॥ ६ ॥ हुं पण पुतें
 हो जई ऊपावी ॥ मा० ॥ कनका पासें हो तत्कण
 आवी ॥ मा० ॥ गुने मंदिर हो खूणे पेठां ॥ मा० ॥
 सुणियें वातो हो जणनी घेठां ॥ मा० ॥ ७ ॥ चेतन

वाल्युं हो नृपनुं लोकें ॥ मा० ॥ नृपति रोवे हो जा
 री पोके ॥ मा० ॥ चंपकमाला हो आवी कोडी ॥ मा० ॥
 रीउने पूठे हो बेकर जोडी ॥ मा० ॥ ७ ॥ एह थ
 मारुं हो प्राण निपातन ॥ मा० ॥ छुं मामुं ठे हो शो
 ग संतापन ॥ मा० ॥ प्रगट प्रकाशे हो रीता मंत्री ॥
 मा० ॥ कनकवतीना हो करणीसूत्री ॥ मा० ॥ ९ ॥
 चंपकमाला हो नृप गल बलगी ॥ मा० ॥ दुःख
 पायकनी हो जाला तलगी ॥ मा० ॥ गदगद सादे हो
 रोवा लागी ॥ मा० ॥ करति दुःखनां हो लोक विनागी
 ॥ मा० ॥ १० ॥ सचिव बिदुनें हो इम समजावे
 ॥ मा० ॥ मूश्रा जगमाहि हो पाठा नावे ॥ मा० ॥ तो
 पण देखो हो कूप एकंती ॥ मा० ॥ जाग्यें जहीयें
 हो जइ जीवन्ती ॥ मा० ॥ ११ ॥ कूश्रा कंठे हो नृपति
 आब्यो ॥ मा० ॥ जण पेसाडी हो ते शोधाब्यो ॥
 ॥ मा० ॥ मज्जया नावी हो मीटे क्यांथी ॥ मा० ॥
 आशा जुटी हो नृपनी तिहांथी ॥ मा० ॥ १२ ॥ मं
 दिर पोहीतो हो मन दुःख करतो ॥ मा० ॥ कनका
 धामें हो आवे फिरतो ॥ मा० ॥ वार बघाडो हो रा
 एो जांखे ॥ मा० ॥ पापिणी नावी हो अणियें आ
 खें ॥ मा० ॥ १३ ॥ जोवा पगलां हो किहां गइ जागी

॥ मा० ॥ आणो बांधी हो केहें लागी ॥ मा० ॥ राय
 कहाथी हो तस घर लुंठयो ॥ मा० ॥ परिजन तेहनो
 हो पकडी कूटयो ॥ मा० ॥ १४ ॥ चाकं विना जे हो
 पुत्री मारी ॥ मा० ॥ अति पठतां हो ते चित्ता
 री ॥ मा० ॥ सूरज उगे हो राणी साथें ॥ मा० ॥ नर
 पति बलशे हो चयमां हाथे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जिहां
 तिहां जमती हो नृप नट पेखी ॥ मा० ॥ कनका बी
 हिनी हो करणी देखी ॥ मा० ॥ इंस मुज नांखे हो
 बिहुं बिठडीयें ॥ मा० ॥ रहेतां चेलां हो हाथे पडीयें
 ॥ मा० ॥ १६ ॥ हारादिक सवि हो ले निज संगें ॥ मा० ॥
 मुजने ठोडी हो दोडी रंगें ॥ मा० ॥ मगधा वेश्या हो
 मिलती पहेली ॥ मा० ॥ ते घर पेउी हो धमकी बहे
 ली ॥ मा० ॥ १७ ॥ हुं एकलडी हो रही त्यां न शकी
 ॥ मा० ॥ रातें कठी हो बनमां चसकी ॥ मा० ॥ इहां आ
 बीहुं हो नय धूजंती ॥ मा० ॥ बात कहो में हो जेह
 बी हुंती ॥ मा० ॥ १८ ॥ हवे हुं जाखुं हो रयणि वि
 हाणी ॥ मा० ॥ इंस कही सोमा हो आगें उजाणी
 ॥ मा० ॥ ढाल ए नवमी हो बीजे खमें ॥ मा० ॥ कांति
 पंपे हो वचन अखमें ॥ मा० ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ दाज दशमी ॥ हरि कोइ जोवनीयांनो ल

टको दाहाडा चारजो ॥ एवेसी ॥

॥ द्वारे चारी विहुं तिहां वेखे काव तणी घे फादजो,
पहेजो रे जेहमांघी नृप राणी लह्यो रेजो ॥ द्वारे वा
री कुमर ते वेखी तेहमां विनर विचाल जो, धूणीरे
शिर घिसमां चिंति इम कह्यो रेजो ॥ १ ॥ द्वारेवारी
तीन कारज हवे करवां माहारे आहिजो, एकतो
रे नृप बजतो थपमांघी राखवो रेजो ॥ द्वारे चारी
बीहुं ए तुज परणुं नृपनी आहिजो, श्रीहुं रे जननी
गप्ते द्वार ते नाखवो रेजो ॥ २ ॥ द्वारेवारी लखमी
पुंज अनोपम नागो द्वार जो, ते हुं रे तुज देखि वा
हाडा पांचमां रेजो ॥ द्वारे चारी इम पण पांघ्यो जन
नी आगे सार जो, सफजो रे करवो ते सांगी याचमां
रेजो ॥ ३ ॥ द्वारे चारी तेमाटे तुं पुरमां फरि नर रू
पजो, सांजेरे मगधा घरे जाजे हांमहुं रेजो ॥ द्वारे वा
री तिहां रहीने कनकाहुं निरखीश रूपजो, करतो रे
वज्र बज्र सुतावजी पामहुं रेजो ॥ ४ ॥ द्वारेवारी हुं
पण जइ नय घजता नृपने मंग जो, वाहरे नवनी
वृद्धि कोइ केतवी रेजो ॥ द्वारे चारी नामांजित सुन
ये तुज सुझा नंगजो, प्रदेसो रे एदघी तुज को गोरी

छपी रेलो ॥ ४ ॥ हारे वारी छुड़ा दीपी ते थारि शि
 र थापजो, इम कदोरे इहां ठानी फरता फापवो रे
 लो, हारेवारी आजनी रजनी मगधा घरे धिर थापजो,
 मजजो रे काले साजे ठे चायदो रेलो ॥ ५ ॥ हारे
 पारी साधी फारज सपजा काले साजजो, आवीश रे दे
 धीजज नरने हुं बली रेलो ॥ हारे वारी कुमर वचन
 धितपारी ते पुरमाहिंजो, आवीरे नर येशे किणही
 न अदकजो रेलो ॥ ७ ॥ हारे वारी आगामी जे फर
 वां फाम अशेष जो, ते सविरे निरधारी पुर आघ्यो
 धती रेलो ॥ हारे वारी नृपनंदन नैमित्तिकनो सेइ वे
 शजो, तरुतलेरे बांध्यो एक गज देखे रती रेलो ॥
 ८ ॥ हारेवारी ते गजहुं बहुला जण सेइ ठाणजो,
 दीशारे जाजनमा जजहुं गालता रेलो ॥ हारेवारी कु
 मरे पृथ्वा कहे कारण परमाणजो, गतदिन रे नृप
 सुत इहां थाव्या मालता रेलो ॥ ९ ॥ हारे वारी र
 मतमा तेषो सोवन साकज एकजो, विंटीरे सेलढीपे
 नांखी गजदिशा रेलो ॥ हारेवारी पढती लै गज मुख
 मा घाली ठेक जो, ताणीरे थाक्या तिहां केइ महा
 वत जिस्या रेलो ॥ १० ॥ हारेवारी नृप थावेसें गालीजे
 एह ठाणजो, तेहनारे इहां खंन कदाचित् पामीयेरे

जो ॥ हारेवारी काढी महाबल केश थकी सुविनाण
 जो, मुझारे पूजामां उबी गजने दीये रेलो ॥ ११ ॥ हारे
 वारी चावण लागो गयवर पूजो तेहजो, तेहवेरे नृपति
 सुत थारें चालीजे रेलो ॥ हारे वारी गोजा कंठे मजिठ
 लोक थठेह जो, करतो रे कोलाहल कुमरें जालिठ रे
 लो ॥ १२ ॥ हारेवारी कुमर विचारे चाव्यो हुं जिण का
 मजो, पुरवरें रे कारज एह तेहनो मेलव्यो रेलो ॥ हारे
 वारी चयमांथी उललते थति वदामजो, दीसेरे य
 ण धूमें नचतल जेलव्यो रेलो ॥ १३ ॥ हारे वारी
 जुज वंचा करी दोहे कुमर तिवारजो, कहेतो रे इम
 मधुरवचन गाढे स्वरें रेलो ॥ हारेवारी जीवे ठे तुम
 पुत्री मलय कुमारिजो, खेले रे साहस कां जोजा इणी
 परें रेलो ॥ १४ ॥ हारे वारी कर्ण सुधासम सुणीने
 तेहनो वयणजो, साहामारे आव्या लख लोक वजा
 यने रेलो ॥ हारेवारी जीनें लवण वतारुं तुजने स
 यणजो, क्पांठे रे कहो मलया तेह वतायने रेलो
 ॥ १५ ॥ हारेवारी इम सुणी बोले तेह निमित्तनो
 जाणजो, काढारे नृप राणी चयथी वेगजा रेलो ॥
 हारेवारी तो नांखुं आगमगति हुं इणें वाणजो, इम
 सुणीरे चयमांथी काढ्यां करी कला रेलो ॥ १६ ॥

॥ हारेवारी कुंथर कहे चसुधाधिप कां अकुलायजो,
 किहां एक रे मलया वे निश्चं जीवती रेलो ॥ हारेवा
 री निमित्ततणे बल जाण्युं में महारायजो, मतिबल्लेरे
 कहुं तुं हुं तुमने तेवली रेलो ॥ १७ ॥ हारेवारी हवे
 नृप पूवे मलया केरी वातजो, करजो रे थात कौतुक
 महाबल इहा वली रेलो ॥ हारेवारी बीजे खंमे ए थ
 इ दशमी ठाल जो, नाखी रे इम कांति विजय रंगे
 जली रेलो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृप कहे सुण निमित्तिया, दुःखियो हुं धिण ना
 ग ॥ देखुं मलया जीवती, एवढो किहां मुज जाग्य
 ॥ १ ॥ काल कृही सम कूपमां, नाखी न मरे केम ॥
 थहो देवनी चित्रता, न मुइ नाखे एम ॥ २ ॥ शो
 धी पण लाधी नही, जिम निर्धन धन कोडि ॥ छट
 कियों जल थलचरें, खाधी होजो मरोडि ॥ ३ ॥ तेह
 नणी मुजनें सुखें, होजो अग्नि सहाय ॥ वचन सुणी
 इम नृपनां, बोळ्यो कुमर बनाय ॥ ॥ ॥

॥ ठाल थगीथारमी ॥ सूवटिथालाइ ॥ ए देशी ॥

॥ नृपतिजी रुडा, सांजल चतुर सुजाण हारेहां ॥
 वात न जाखुं कूअढो ॥ नृ० ॥ आजदिवस सुख ठा

ए होरेहां ॥ वारंश तिथि थइ रूथडी ॥ जू० ॥ १ ॥
 आजयी त्रीजे दिवसें होरेहां, दोष पोहोर वासर च
 टे ॥ जू० ॥ वेठा सहु अवननीश होरेहां, मंमप आ
 मंवर मडे ॥ जू० ॥ २ ॥ शोनित तनु शण्णार होरे
 हां, कुमरी दरिसण आपरो ॥ जू० ॥ देखीत सहसा
 कार होरेहां, अचरज सहुने व्यापरो ॥ जू० ॥ ३ ॥
 रचि स्वर्णवर छुन एह होरेहां, आवत नृप मत वारजे
 ॥ जू० ॥ जो ठे तुज संदेह होरेहां, तो अहिनाणी ए
 धारजे ॥ जू० ॥ ४ ॥ मजया मुडिरियण होरेहां, का
 लें तुम कर आवरो ॥ जू० ॥ तो साचां मुज वयण
 होरेहां, वेद वाणी गुण पावरो ॥ जू० ॥ ५ ॥ चौद
 शने परजात होरेहां, पूरवदिशि पुर बाहिरें ॥ जू० ॥
 नृपनां बज मन त्यांत होरेहां, परखावण तुज कुजसुरी
 ॥ जू० ॥ ६ ॥ पट करणो एक अंन होरेहां, पोत समीपें
 आपरो ॥ जू० ॥ लहेता लोक अचंन होरेहां, देख
 त रंग नधापरो ॥ जू० ॥ ७ ॥ ते छेइ तेणिवार होरे
 हां, थिरथापे मंमप तलें ॥ जू० ॥ जेदरो थानो ते
 ह होरेहां, (धनुष वज्रसार होरेहां,) बाण सहित
 पूजा जलें ॥ जू० ॥ ८ ॥ थापे थाना ठेह होरेहां,
 जे नर तेह चढाश्ने ॥ जू० ॥ जेदरो थानो तेह ही

रेखां, होशे वर तुज जाईने ॥ नू० ॥ ए ॥ अनोपम
 से अतिनाति होरेहा, पूजाविधि ते थननी ॥ नू० ॥
 जाण्या ए अवधान होरेहा, निमित्त कलायें अनुम
 नी ॥ नू० ॥ १० ॥ मजसे ए अहिनाण होरेहा, नि
 मित्त बलें जाण्या अत्रे ॥ नू० ॥ न मले जो निरवा
 ण होरेहा, मन मान्युं करजे पठें ॥ पंमितजी कडा
 ॥ ११ ॥ लोक कहे शिरनाम होरेहा, अम जाग्यें तुं
 आवियो ॥ पं० ॥ द्धानी तुं जस पास होरेहा, उप
 कार धुर ठावियो ॥ पं० ॥ १२ ॥ ताद्वारा ए उपका
 र होरेहा, बीतरशे नहों जीवते ॥ पं० ॥ आप्यो ए
 अधिकार होरेहा, जगदोसें तुज गुण ठते ॥ पं० ॥
 १३ ॥ थाले हरख निधान होरेहा, कंचन मणि नू
 पण घट्टु ॥ पं० ॥ ते कहे जो वपुं दान होरेहा, तो
 उपकार कियो कहुं ॥ पं० ॥ १४ ॥ करजे तुंहिज ते
 ह होरेहा, थन तणा पूजा बढी ॥ पं० ॥ नृप वचन
 वेहडे एह होरेहा, बांधे छुकननी गांवडी ॥ पं० ॥
 १५ ॥ नृप कहे कन्या कंत होरेहा, किण नामें होसे
 कहो ॥ पं० ॥ आगम निगम थनंत होरेहा, प्रगट
 पणे शास्त्र लहो ॥ पं० ॥ १६ ॥ पोहवीपुर सूरपाल
 होरेहा, महावल नंदन परबडो ॥ पं० ॥ वरशे ते ह

जवाल होरेहां, कुमर कहे एम परगडो ॥ पं० ॥ १० ॥
 ॥ दिवस थयो मध्यान्ह होरेहां, नृप आवे नगरी न
 णी ॥ पं० ॥ कुमर घणुं सनमान होरेहां, साथें जे
 पुरनो धणी ॥ पं० ॥ १० ॥ सामंवर महाराय होरे
 हां, आयो मंदिर ऊजमें ॥ पं० ॥ कुमर नृपति ति
 ण्ठाय होरेहां, साथें बली जोजन जमे ॥ पं० ॥ ११ ॥
 वीती करतां यात होरेहां, अरध दिवसने ते निशा
 ॥ पं० ॥ गह मह दुइ परजात होरेहां, रवि कगे
 पूरवदिशा ॥ ज० ॥ २० ॥ बीजे खंने एह होरेहां,
 पूरण ढाल इग्यारमी ॥ जू० ॥ कांति कहे ससनेह
 होरेहां, सुणतां श्रोताने गमी ॥ जू० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पहेजा नृप मूक्या जिके, गालण गजनूं ठाण ॥
 तेह प्रजातें आविया ॥ सेवक जिहां महिराण ॥ १ ॥
 करजोडी कौतिक नखा, बोल्या तिहां एम वयण ॥
 लाधुं गजमल गालतां, ए प्रभु सुझा रयण ॥ २ ॥ नृ
 प जीधी ते मुडिका, रनस पणें ससज्जुण ॥ वांचत
 नाम सुता तणुं, इम बोझो शिर घूण ॥ ३ ॥ अज्ञां
 अचंनो मुडिका, किन आवी गज पेट ॥ बली निमि
 त्त ए कारण, मजतां दीने नेट ॥ ४ ॥ तव बोझो झा

नो ईसु, निमिन विफल नवि हुंत ॥ कुलदेवी फार
 ए इहा, संनयिमें खितिकंत ॥ ५ ॥ दूरख्यो नृप वि
 शेषयी, करे स्वयंवर काज ॥ लोक कहे कुमरी विना,
 ह्यो मांमे नृप साज ॥ ६ ॥ कथन थकी किम रा
 चिये, होये जूठके साच ॥ पेटे पड्या पतीजीये, ईम
 बोले केई याच ॥ ७ ॥ कन्या विण लघुता पणी,
 लहेसे नृप नृप मांहि, मल्या नृप विजल्या घई, धुक
 ल करसे प्राहिं ॥ ८ ॥ साज समय तेरस दिने, था
 व्या नृपनां नंद ॥ थाप्यां मंदिर जूजूया, त्यां यत
 खा नरिंद ॥ ९ ॥

॥ ढाल धारमी ॥ रहो रहो रहो बाजहा ॥ ए देशी ॥
 ॥ कानी कहे इम रायने, जो थापो थम सीख लाल
 रे ॥ मंत्र थई में साधिठ, ते साधु मन ईव लाल रे
 ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांनजो ॥ ए आकणी ॥ जो
 नवि साधु ए समे, तो बलतुं न सथाय लाल रे ॥ कोई
 विघन छन काममां, थण लाण्या ठहराय लाल रे
 ॥ सु० ॥ २ ॥ थाबुनी एक रातिनो, थापो जो थव
 काश लालरे ॥ साथी मंत्र प्रजातमां, थावीश हुंतुम
 पात लालरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ शीख देई नृप इम कहे,
 मंत्र साधनने काज लाल रे ॥ जोईये ते थापुं हजो,

छेता न करशो लाज लाल रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ धन खेई
 केतुं तिहा, कुमर गयो वन माहि लाल रे ॥ रयणि
 गमाढी दोहिजे, राजार्ये चित चाहि लाल रे ॥ सु०
 ॥ ५ ॥ प्रहकार्जे पग नूपना, नेटे नाणी धाय लाल
 रे ॥ नृप कहे तुज मंत्रनी, तिखि यई निरपाप लाल
 रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ कुमर कहे काईक थई, कांईकरही ठे शेष
 लाल रे ॥ अर्चन थंनतणुं करी, जाईश बली तेणे
 देश लाल रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ खबर करावा थंननी, प
 हेजो मूक्यो जेह लाल रे ॥ सेवक ते तिहा आईने,
 बोव्यो धरी ईम नेह लाल रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ तुम
 आवेशें हुं गयो, पुरयाहिर परजात लाल रे ॥ पोहोज
 तणी माबी दिशें, बीगो थंन सुजात लाल रे ॥ सु० ॥
 ॥ ९ ॥ ईम सुणी राजा कठीउ, ते नर साथे लेय
 लाल रे ॥ थंन समीपें आवीउ, निरखें दृष्टि नरेय
 लाल रे ॥ सु० ॥ १० ॥ लोक सहित पुर राजियो,
 आवे पूजण थंन लाल रे, तेहवे तेह निमित्तिउ,
 बोव्यो ईम धरी दंन लाल रे ॥ सु० ॥ ११ ॥ अड
 शे जे ए थंनने, समज्या विण नर कोई लाल रे ॥
 तो कुलदेवी कोपशे, करशे अनरथ सोई लाल रे ॥
 सु० ॥ १२ ॥ राय प्रमुख पाठा खिसे, मनमां धी

हीना अवेद लाल रे ॥ नृप नणो पूजो तुमैं, पूज प्र
 नृति सेइ एइ लाल रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ विधि पूर्वक
 नाणी तिहा, पूजो बेगो ध्यान लाल रे ॥ छीपद मुख
 धी छमरी, मेले भाया तान लाल रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
 दोढ पद्मोर वासर चढे, सेवक नृप आवेश लाल रे ॥
 थंन उपाही पुर जणी, पावन थई सविशेष लाल रे ॥
 सु० ॥ १५ ॥ मंमपमा थामंघरें, थाप्यो थाणी का
 र लाल रे ॥ पटकरणी पठर शिला, कुमरें करावी
 स्यार लाल रे ॥ सु० ॥ १६ ॥ वनो खोसे भंमपें,
 धरती मांहे वे हाथ लाल रे ॥ थंन निपुण निज सं
 चधी, लेइ बांध्यो ते साथ लाल रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ वें
 कर मुख वंचे रहे, शिला चकी ते थंन लाल रे ॥ बा
 ण धनुष तेहथी ठवे, पठिमनैं थारंन लाल रे ॥ सु०
 ॥ १८ ॥ सिंहासन नृपनां ठव्यां, दक्षिण वत्तर नाग
 लाल रे ॥ गंधर्वें मांमयो तिहा, गावा मधुरो राग
 लाल रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ थंन धनुष पूजावीने, नृप
 पासैं ततकाल लाल रे ॥ कुमर कहे नृपति प्रतें, ते
 हाव्या नरपाल लाल रे ॥ सु० ॥ २० ॥ नाणी नृपनी
 चीढमां, देखी थवसर खास लाल रे ॥ जई बेगो गांध
 र्वमां, पलटी वेश प्रकाश लाल रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ वंठा नृप

तिहातने, देव जिस्या सोहंत लाल रे ॥ परिवारिया
परिवारणुं, रूपें जग मोहंत लाल रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ ठाज
पईए बारमी, धीजे सभें वदार लाल रे ॥ काति कहे
इहां परणसे, महाबल मजया नार लाल रे ॥ सु० ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूप न ऐले कुमरने, तव बोझो अकुजाय ॥ रे
जोयो नाणी किहां, गयो बखर ज्यो जाय ॥ १ ॥ क
हे सेवक जोई तिहां, आब्यो नहीं थम मोट ॥
करयो नूटो किहां गयो, जिम फल पाके धींट ॥ २ ॥
नूप जणे पहेजा इणो, साधयो मंत्र सुसाज ॥ साधन
अई रह्यो हतो, गयो हरो तन काज ॥ ३ ॥ वचन स
वे तेहना मझ्यां, पण न मझ्यो एक बोज ॥ कन्या घर
महाबल कह्यो, एतो वचन टकोज ॥ ४ ॥ अवसरें
इहां आब्यो नहीं, नहीं योग होनार ॥ निमित्त वचन
निःफल होसे, हे हे सरजण हार ॥ ५ ॥ कुथर सुणी
तिहां बखसुं, ठाकी वदन हसंत ॥ सर्व जणासे ठेहडे,
इम मनमाहें कहंत ॥ ६ ॥ वात लही कन्या तणी,
नूपें सकल यथार्थ ॥ मांहो मांहि ते कहे, आब्याहुं
शे अर्थ ॥ ७ ॥ मलया वाजा वापडो, मारी विण थप
राध ॥ हवे नूपने किम बालशे, उत्तर देई अबाध ॥ ८ ॥

एहवांमां नृप कहेणधी, उंचे स्वर संजलाई ॥ निपुण
 नकीव कहे ईस्युं, राजसनामां थ्याई ॥ ए ॥
 दाज तेरमो ॥ चित्रोढा राजा रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ सुणो नृप हवाला रे, नरपति ठोगाला रे, थ्याउं
 वजमाला विकथा ठोढीने रे ॥ मंमपतलें आयो रे,
 निजशक्ति जगावो रे, यज्व सार चढावो दावो जो
 ढीने रे ॥ १ ॥ शर पुंखी जोरें रे, थांजा मुख कोरें
 रे, करे घात कठोरें ये दलें जुजुथां रे ॥ ते नृप महा
 चलने रे, प्रगटी ठलकलिने रे, वरसे थटकलीने थम
 नृपनी धूआ रे ॥ २ ॥ लाट देशनो राणो रे, ठठयो
 सपराणो रे, थावे हर्ष जराणो मंमपनें तलें रे ॥
 इंद धनुषयी जारी रे, दीसे एह करारी रे, मनमां
 इम धारी ते पाठो बले रे ॥ ३ ॥ चौड नृपति नामें
 रे, कठयो तिहां हामें रे, थाव्यो मंमप ठामें थईने
 सांसतो रे ॥ निरखी चिलकारा रे, जिम तपत थं
 गारा रे, एतो जगत संहारा इम कहे नासतो रे
 ॥ ४ ॥ गौढाधिप हसतो रे, थाव्यो धसमसतो रे,
 ते तो दरिउं खिसतो धनुष ठपाडतो रे ॥ हूंतो
 ए रसिउं रे, पण देवें मुनिउं रे, इम नृपगण
 हसियो ताली पाडतो रे ॥ ५ ॥ करणाटक स्यामो

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं खामी बल करतो
 थडे रे ॥ शर नाखी वंको रे, थयो ते साशंको रे,
 जिम हुये सुकुल कलंकोरे तिम जाखो पडे रे ॥ ६ ॥
 केता नवी ऊठे रे, केई वेठा पुठें रे, केई शरनी मूठें
 जेदे थंनने रे ॥ पण थंन न जेयो रे, नृप टोली खे
 द्यो रे, निज दर्प उठेयो बल थारंजीने रे ॥ ७ ॥
 मरडक मूठाला रे, लाज्या नूपाज्या रे, करता ठकचा
 ला निंदे आप थापने रे ॥ माटी पण मूक्या रे,
 छुजनुं बल चूक्या रे, साहामा बली दूक्या कोई न
 चापने रे ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी तवि
 लासें रे, प्रगटी नहीं पासं जनमां लाजनुं रे ॥ मह
 बल ते तेहवे रे, थंन पासं एहवे रे, थाब्यो धसि के
 हवे वीणा साजनुं रे ॥ ९ ॥ तिहां वीण बजावी रे,
 थाकाश गजावी रे, मूक्या रीजावी जण तंती रसें रे ॥
 बली धनुष ठपाडी रे, बोव्यो थति त्राडी रे, परणीश
 हुं लाडी मुज बलने वशें रे ॥ १० ॥ गांयर्व ए पीवो रे,
 एहने विधि रुठो रे, नहीं ठे इहा मीवो खावो जीखनो
 रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महबलनुं सुसता रे, र
 हेशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ तांण्यो
 धनुष ते सीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणो मद पीधो नृ

प गण लोटव्यो रे ॥ शर चाढो खंचे रे, नाखे परपंचे
 रे, खीजीने तंचे चानो चोटव्यो रे ॥ १२ ॥ संपुट च
 पडिठ रे, माघे जे जडिठ रे, अजगो जई पडिठ वाणे
 आहण्यो रे ॥ तेहमाथी सारी रे, नरनाथ कुमारी रे,
 प्रगढी मनोहारी वेश नजो बन्यो रे ॥ १३ ॥ श्रीखं
 रु कपूरें रे, कस्तूरी पूरें रे, अंगरने चूरें लेपी वेड्डी
 रे ॥ दिव्याजंकारें रे, अति शोना धारें रे, श्रीपुंजने
 हारें ठवी वमणी चढी रे ॥ १४ ॥ बीडी कर मावे
 रे, जिमणे कर तावे रे, वरमाल सुहावे हावें ते नरी रे ॥
 दीपे द्युति नारी रे, जिम रतिपति नारी रे, जाणे ना
 गकुमारी थंनमां ऊतरी रे ॥ १५ ॥ पेढी किम कावें
 रे, फ्यारें किणे ठावें रे, पूढे इति पावें नृप कन्या प्रत्ये
 रे ॥ जीवी जल शक्ते रे, कन्या कहे विगतें रे, जाणे ते
 जुगतें कुलदेवी मते रे ॥ १६ ॥ नृप कहे में चूपें रे,
 नाखी ते कूपें रे, राखी इणे रूपें अम कुलदेवीयें रे ॥
 वरशोमां जूंमो रे, एहने वर रूढो रे, आलोचीने उंमो
 चित्त देवी तियें रे ॥ १७ ॥ नृपतिना वारु रे, बल परखण
 सारु रे, रचियो ए वारु थंनो काठनो रे ॥ कनकाथी
 लीथो रे, श्रीहार प्रतिघो रे, तुजने तेणे दीथो सुंदर
 ठाठनो रे ॥ १८ ॥ चर्चित अति रूढे रे, मणि सोव

रे, आयो गजगामी रे, राखे नहीं खांमी बल करतो
 थडे रे ॥ शर नाखी बंको रे, थयो ते साशंको रे,
 जिम हुये सुकुन कलंकोरे तिम जाखो पडे रे ॥ ६ ॥
 केता नवी कठे रे, केई चेठा पुठे रे, केई शरनी मूठे
 जेदे थंजने रे ॥ पण थंजन जेयो रे, नृप टोलो खे
 द्यो रे, निज दर्प छेद्यो बल थारंजीने रे ॥ ७ ॥
 मरडफ मूठाला रे, लाज्या नूपाजा रे, करता ठक्या
 ला निंदे थाप थापने रे ॥ माटी पण मूक्या रे,
 छुजतुं बल चूक्या रे, साहामा बली ठूक्या कोई न
 चापने रे ॥ ८ ॥ वीरधवल विमासे रे, कुमरी सवि
 लासे रे, प्रगटी नहीं पासें जनमां लाजगुं रे ॥ मह
 बल ते तेहवे रे, थंज पासें एहवे रे, थाव्यो धसि के
 हवे वीणा साजगुं रे ॥ ९ ॥ तिहां वीण बजावी रे,
 थाकाश गजावी रे, मूक्या रीजावी जण तंती रसें रे ॥
 बली धनुष उपाडी रे, वोव्यो अति ज़ाडी रे, परणीश
 हुं लाडी मुज बलने बरो रे ॥ १० ॥ गांधर्व ए धीगो रे,
 एहने विधि रुगो रे, नहीं ठे इहा मीगो खावो जीखनो
 रे ॥ इम कही नृप हसता रे, महबलगुं सुसता रे, र
 देशो कर घसता कहुं मग शीखनो रे ॥ ११ ॥ ताण्यो
 धनुष ते सीधो रे, टंकारव कीधो रे, जाणो मद पीधो नृ

પ ગણ લોટવ્યો રે ॥ શર પાઠી સંવે રે, નાલે પરપંચે
 રે, સ્ત્રીજીને સંવે પાંજો પોટવ્યો રે ॥ ૧૨ ॥ સંપુટ
 ઘડિંઠ રે, માથે જે જડિંઠ રે, અલગો લઈ પડિંઠ બાણે
 ગ્રાહણ્યો રે ॥ તેહમાંથી સારી રે, નરરાય કુમારી રે,
 પ્રગટી મનોહારી વેણ જનો વન્યો રે ॥ ૧૩ ॥ શ્રીલં
 મ કપૂરે રે, ફરતૂરી પૂરે રે, અંબરને ચૂરે જેણે દેહડી
 રે ॥ વિધ્યાનંકારે રે, અતિ શોના ધારે રે, શ્રીપુંજને
 શરે ઠઠી ઘમણી ચઢી રે ॥ ૧૪ ॥ ઘોડી કર માથે
 રે, જિમણે કર ઠાથે રે, ગરમાલ સુદાથે હાથે તે જરી રે ॥
 ઘીવે ધુતિ જારી રે, જિમ રતિપતિ નારી રે, જાણે ના
 ગકુમારી ધંજમાં કતરી રે ॥ ૧૫ ॥ પેઠી કિમ કાઠે
 રે, ક્યારે કિણે ઠાઠે રે, પૂઠે ઇતિ પાઠે નૃપ કન્યા પ્રવ્યં
 રે ॥ જીવી જસ શકે રે, કન્યા કહે જિગને રે, જાણે તે
 જુગતે કુલદેવી મને રે ॥ ૧૬ ॥ નૃપ કહે મેં જુગે રે,
 નાલી તે કૂપે રે, રાણી ઇણે કૂપે અમ કુલદેવીયે રે ॥
 ગરશોમાં નૂનો રે, એહને ચર રુઢો રે, આજોચીને ધમ
 ચિત્ત દેવી તિયે રે ॥ ૧૭ ॥ નૃપતિના ચારુ રે, યજ્ઞ પરચા
 સારુ રે, રચિયો એ ચારુ ધંજો કાવનો રે ॥ કનકા
 લીપો રે, શ્રીહાર પ્રસિદ્ધો રે, તુજને તેણે દીર્ઘો સું
 ગાવનો રે ॥ ૧૮ ॥ અર્ચિત અતિ રુઢે રે, મણિ

न धूरे रे, उंगी बाजूड कोमल बाहडी रे ॥ कुनरेवी
 रुपायी रे, वरमाजा धारी रे, थंन माहिं उतारी तुं
 अमने जडी रे ॥ १९ ॥ दुःखहुं मुज नातुं रे, कारज
 थगुं फातुं रे, पण लागे ए मातुं जे मद्रावज नही रे ॥
 जेण थंन उवाढयो रे, नृप गर्व जताडयो रे, गंवर्य दे
 खाढयो ते नाग्ये वही रे ॥ २० ॥ ईम शोचे तिया
 रें रे, नृपति दुःख नारें रे, महावज तेणि वारें मुख
 टांकी दमे रे ॥ थांनानी निकसी रे, कुमरी कहे विक
 सी रे, नाख्यो थंन चकसी ते नर क्यो वसे रे ॥ २१ ॥
 देखादे प्रकाशें रे, धाई मात वलासें रे, कनो थंन
 पासें श्लोक ते गोठगे रे ॥ नृपतिनी बाला रे, सुंदर
 वरमाजा रे, महावजन विशाला कंठें लोठवे रे ॥ २२ ॥
 महावज वर वरीठ रे, नाग्ये अति नरीठ रे, रतिपति
 अवतरीठ रूप समाजगुं रे ॥ बीजे खमें दाखी रे, डाल
 तेरमी नाखी रे, लेजो रस चाखी कांतिकहे ईशुं रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपति कोपें धडहड्या, बोले विपम वचन ॥
 जूठ परीक्षा एहनी, वरीठ पुरुष रतन ॥ १ ॥ नृप
 मणि ठांमी आदखो, मूर्खपणे ए काच ॥ देव जि
 सी पात्री दुवे, ए वखाणो साच ॥ २ ॥ सहेगुं किम

चित्त, पूछे कवण साधु कहो मित ॥ मो० ॥ ते कहे
 इहां नहीं ठे संदेह, माहावल नामे कुमर होय एह
 ॥ मो० ॥ आ० ॥ ४ ॥ बाध्या जेदने हाथा हेठ, उल
 खीये नहीं किम ते नेठ ॥ मो० ॥ नृप कहे साधु नि
 मित्तनुं वयण, आज दूठ मित्त ते नररयण ॥ मो० ॥
 आ० ॥ ५ ॥ आब्यो हरो एह गयणने माग, के वली
 धरणी तलमां लाग ॥ मो० ॥ अकल कलाधी करतो
 केलि, अम जाग्ये पायो गजगेल ॥ मो० ॥ आ० ॥ ६ ॥
 पूठीश पावे सघली वात, पहेलां नृपनी टालुं घात ॥
 मो० ॥ एम विमासी नृप आश्वास, समजावी या
 ह्या आवास ॥ मो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ जीमाड्या सर
 कच्या वेह, जोजन मूके नृपने तेह ॥ मो० ॥ जोव
 राब्यो ते नाणी राय, पण नबि लाधो किणहीं वा
 य ॥ मो० ॥ आ० ॥ ८ ॥ राय विमासे ते नरलोच,
 पवन परें न लहे किहां थोच ॥ मो० ॥ चंपकमाला
 साथें नृप, जुंजे जोजन सरस अन्नूप ॥ मो० ॥ आ० ॥ ९ ॥
 लगननो बाहाडो लीधो समीप, करे सजाई अति थ
 वनीप ॥ मो० ॥ समराब्या जल ठांठ्यां सेर, शणगारी
 नगरी चोफेर ॥ मो० ॥ आ० ॥ १० ॥ समीआणा ता
 एसा वली खास, जाणे वताब्या सुर आवास ॥ मो० ॥

(१२०)

कृष्णामरुना वृषभृश्वंत्, आकाशं पृथग् यद्वत्त्वं ॥
मोक्ष ॥ आ० ॥ १ ॥ ॥ तेषां माना काश्च जमान, यश्च
वृषभृश्वंत् यश्च यश्च ॥ मोक्ष ॥ वाच मंत् यश्च
तात्कालिकं दे मृत्ता वृषभृश्वंत् ॥ मोक्ष ॥ आ० ॥ १ ॥

पणोजी ॥ सुरतरु मोहन वेली, सरिखां दीसे विट्ठु नि
 रूपाणोजी ॥ १ ॥ वाजे जंगल जेरि, ताज कंताल न
 फेरी नादशुंजी ॥ सणगाखा गजराज, श्यामज वाजे
 थति शनमादशुंजी ॥ २ ॥ चामर ठत्र ढजंत, फरह
 रते केसरीये चावे सज्योजी ॥ निरुपम थाप्यो मोड,
 श्रीकज करमां सुंदर राजतोजी ॥ ३ ॥ कुंकुम तिल
 क वनाथ, तंझुज जालें चोढया ठजजाजी ॥ परवरिया
 घमसाण, तोरण थाप्यो वर वधती कलाजी ॥ ४ ॥
 मोती थाल वधाव, पधराव्या वर कन्या चोरीयेंजी ॥
 नट नणे जयमाल, सोहजा गाथा सरजें गोरीयें
 जी ॥ ५ ॥ ब्राह्मण जणते वेद, पंचामृतना होम ति
 हां कीयाजी ॥ चारे चोरी थंग, दीरे जिम पुरुवारय
 योंटोयाजी ॥ ६ ॥ विट्ठुना नेहडा बोध, चारे फेरे मं
 गज वरतीयाजी ॥ प्रीति जिस्या सुसवाद, सार कंसा
 र तिहां थारोगोयाजी ॥ ७ ॥ विधिपूर्वक कमनीय,
 पाणी ग्रहण महोत्सव तिहां कियोजी ॥ नृप रा
 णी थाशीय, वचन इस्यो थति हेजें ठज्योजी ॥ ८ ॥
 चंद्रिका चंद्र समान, थविचल होजो तुमची जोड
 लीजी ॥ द्यवगपरय धन फोडी, करमांचन वेलायें वे
 चनीजी ॥ ९ ॥ वरकन्या मन रंग, मोहजामाहे तिहां

पधरावियाजी ॥ संतोष्यो परिवार, मान महोत वै सद्ग
 राजी कियोजी ॥ १० ॥ लोक कहे लख कोडि, मलती
 जोडी विधाता मेलवीजी ॥ मुझ नंग समान, रतिपतिना
 यकनी जोडी हवीजी ॥ ११ ॥ अक्सर लही अवन
 श, पूरे त्यां माहावलने खांतुंजी ॥ एकाकी इंणे ता
 म, लगन समय आघ्या किए जांतुंजी ॥ १२ ॥
 कुमर नणे महाराय, जाणुं नहिं किए देवी आणी
 ठजी ॥ नृप कहे सघलुं ताच, कुजदेवी निपजावे जा
 णीठजी ॥ १३ ॥ बली माहावल कहे एम, शीख क
 रो तो चालुं पर नणीजी ॥ मुज विरहें मा तात, कर
 तां दोशे चिंता मन घणीजी ॥ १४ ॥ वार पदोरमां
 जाई, न मलुं तो ते मरगे नेहवीजी ॥ करि करुणा क
 रुणाल, शीख दीयो हवे मुजने तेहवीजी ॥ १५ ॥
 पडवेने दिन सूर, कम्पा पहेलो जो जाई मलुंजी ॥
 जीवंता मा वाप, तो देखुं हवे कहुं वजी केटलुंजी
 ॥ १६ ॥ राय कहे सुण धीर, धैर्य धरो मत थाठ आ
 कलाजी ॥ सघलानी मुज चिंत, करवी में जाणो गु
 ण आगलाजी ॥ १७ ॥ वाशठ योजन दूर, पोहवी
 ठाण नगर इहांची अठेजी ॥ आज रयणी एक याम,
 पढखोजी बोलावीश हुं पठेजी ॥ १८ ॥ करहलिया

करी साज, करवतियां धर काटण कोरडीजी ॥ संप्रेडो
 श ततकाल, असवारी मनवारी ए ठडीजी ॥ १९ ॥
 कोप्या जे नरपाल, सतकारी वोलावुं तेहनेजी ॥ त्यां
 लगें धीर धराय, रहो रहो इमहिज करतां ए बनेजी
 ॥ २० ॥ इम कही ऊठयो नूप, बीजे खंमैं सरस सोहा
 मणीजी ॥ ए पन्नरमी ढाल, कांतिविजय सविजास
 पणे नणीजी ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर कहे कन्या प्रत्ये, रहस्य पणें तंजी ला
 ज ॥ करी प्रतिष्ठा तुज सुखें, ते में पूरी आज ॥ १ ॥
 गत दिवसें देवी गृहे, मिल्या रजसमां जेह ॥ कही न
 सक्या निज निज कथा, हवे कहीजें तेह ॥ २ ॥
 एहवे वेगवती तिहां, मलयानी धामा ॥ आवी
 कर जोडी बिन्हे, पूवे एम हसा ॥ ३ ॥ कारज ए
 देवी तणां, थयवा थवर उपाय ॥ अम मन संशय
 आफले, कही सुजग समजाय ॥ ४ ॥ कहे कुमरी
 ए माहरे, वीरवासणी ठे स्वामी ॥ सुखें कही शंका
 तजी, एह मुज जामणि ताम ॥ ५ ॥ गजमुख दीधी
 मुझ्फा, तेह प्रमुख सुचरित्र ॥ नांखीने दिन थपर
 नुं, संध्यानुं कहे चित्र ॥ ६ ॥

(१२१)

॥ टाल साँलमी ॥ सखीरी थायो वन्हालो
थटारहो ॥ ए देशी ॥

॥ पिपारी सोज समय घीजे दीने, वीजे दीने, नृ
पथी मोफी प्रपंच ॥ मृगाही साँनलो ॥ पिपारी मंत्र
जाधन मिश नीकल्यो, नीकल्यो नूप कनें लेई लंच ॥
मृ० ॥ १ ॥ पि० ॥ ते इव्ये सूतारना ॥ सु० ॥ उपक
रण लेई मूल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ रंग अनेक लीया बली ॥

ली० ॥ मृगमद प्रमुख अतूल ॥ मृ० ॥ २ ॥ पि० ॥
सामग्री इम संमही ॥ सं० ॥ आव्यो देवी धाम ॥ मृ० ॥

पि० ॥ बिवर सहित ते फाजिका ॥ फा० ॥ कीधी घडी
अनिराम ॥ मृ० ॥ ३ ॥ पि० ॥ खीजी ठानी तेहमां,
ते० ॥ बेसारी करी संच ॥ मृ० ॥ पि० ॥ साज संचे

मुख टांकणो ॥ मु० ॥ नीपायो परपंच ॥ मृ० ॥ ४ ॥
पि० ॥ एहवे त्यां केइ तस्करा ॥ के० ॥ मूकी नीत
मंजुष ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तस्कर एक ठवी गया ॥ व० ॥

ते पुर चोरी हुंश ॥ मृ० ॥ ५ ॥ पि० ॥ पूर्व सामग्री
गोपवी ॥ गो० ॥ हुं थयो चोर समान ॥ मृ० ॥ पि० ॥

जाणी एकाकी ते कनें ॥ ते० ॥ ठजो रह्यो करी शान
॥ मृ० ॥ ६ ॥ पि० ॥ मुजने निरखी इम कहे ॥ इ० ॥
ते अति लोचने व्याप ॥ मृ० ॥ पि० ॥ तालुं नांजी

नचि शकुं ॥ न० ॥ तुं मुज खोली थाप ॥ मृ० ॥ ७ ॥
 पि० ॥ तुरत बघाडी में दीयो ॥ में० ॥ लीयो तिणे स
 चि माल ॥ मृ० ॥ पि० ॥ ताणी बांधे पोडली ॥ पो० ॥
 इव्यतणी लोनाल ॥ मृ० ॥ ८ ॥ पि० ॥ बीहीतो मु
 जने इम कहे ॥ ई० ॥ झुकी सतनी मूठ ॥ मृ० ॥ पि० ॥
 जायंतो हवे घोर ते ॥ चो० ॥ के नृप जन करे पूठ ॥
 मृ० ॥ ९ ॥ पि० ॥ मारे मुजने मूल्ययी ॥ मू० ॥ थरके
 तेहथी चित्त ॥ मृ० ॥ पि० ॥ थानक मुज जीव्या त
 एं ॥ जी० ॥ देखाडो कोई मित्त ॥ मृ० ॥ १० ॥ पि० ॥
 पद्मशिजा ते जवननी ॥ ते० ॥ में बघाडी खांच ॥
 मृ० ॥ पि० ॥ माल सहित ते चोरने ॥ ते० ॥ घाव्यो
 घंचे खांच ॥ मृ० ॥ ११ ॥ पि० ॥ तिमहीज कपर
 ते ठवी ॥ ते० ॥ विवर अंतर राख ॥ मृ० ॥ पि० ॥ क
 तरतां थंगण तलें ॥ थं० ॥ दीगो बडतरु जाख ॥ मृ०
 ॥ १२ ॥ पि० ॥ दोडी बड कपर चढ्यो ॥ क० ॥ रुहुं
 जोतो तुज वाट ॥ मृ० ॥ पि० ॥ दीगो बडनी कूखमा
 ॥ कू० ॥ नूपण वसननो थाट ॥ मृ० ॥ १३ ॥ पि० ॥ अपह
 रि लीधा देवीयें ॥ दे० ॥ पहेलो मुज समुदाय ॥ मृ० ॥
 पि० ॥ ते तिण ठाना गोपव्या ॥ गो० ॥ दीसे ठे ए प्राय
 ० ॥ १४ ॥ पि० ॥ में लीयो ते उलखी ॥ उ० ॥

तराखु बेगो गुल्ल ॥ मृ० ॥ वि० ॥ ऊरट बाटें आ
 वती ॥ आ० ॥ नजरें पडी तुं मुल्ल ॥ मृ० ॥ १५ ॥
 वि० ॥ बडतरुयी हुं कतरयो ॥ हुं ॥ साहामो आ
 व्यो दोड ॥ मृ० ॥ पिपारिचेहुं मयां ए माहरी ॥ मा० ॥
 यात कही ठज गोड ॥ मृ० ॥ १६ ॥ वि० ॥ बीजे
 खंमैं शोजमी ॥ शो० ॥ ए थई निरुपम ढाल ॥
 मृ० ॥ वि० ॥ कांति कहे मलया हवे ॥ म० ॥ कहेरो
 यात रसाल ॥ मृ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

कुमर नणो में छगतिगुं, जांख्यो मुज विरतंत ॥
 तुं पण कहे ताहरो हवे, मूलथकी जिम हुंत ॥ १ ॥
 ते कहे तुम शिद्धा ग्रही, पेवि हुं पुरमांदिं ॥ पुरुष वे
 प मगधासदन, पुंहुं पग पग ठाहिं ॥ २ ॥ घर न
 मली पुरमां नमी, किहांई न दीठी स्वाम ॥ बेठी देव
 ल एकमा, दीठी मगधा नाम ॥ ३ ॥ नाखी वांके
 फांकहे, धूरत एके घूत ॥ जावा लाग लहे नहीं, रो
 की सवल कुसुत ॥ ४ ॥ कारण में पूट्या थकी, बो
 ली करती रींग ॥ अहो सुगुण मुज पाठले, बलगो
 ठे एक विंग ॥ ५ ॥ धूरत एह पूर्त पढयो, लंपावे ठे
 मुल्ल ॥ दूण दूण थइ विरुड नहे, घूमड जेम अरु

॥ ६ ॥ निःकारण मुंजनें इणो, जोडी संकट माहि ॥

वात कहुं ते आदिथो, सुणजो चित्तनी चाहिं ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ दक्षिण दोहिलो हो राज ॥ ए देशी ॥

गतदिन बेगी हो राज, मंदिर बारें राज, धूरत त्या
रें रे, एतो आब्यो माब्हतो ॥ १ ॥ हात करीने हो

राज, में बोलाव्यो राज, इमतो नं जाण्यो रे धूतारो
जन एह ठे ॥ २ ॥ मुज तनु मरदे हो राज, खांते क

रीने राज, कांश्क आपुं रे हुं तुमने रुश्चहुं ॥ ३ ॥ व
चन सुणीने हो राज, आब्यो समीपें राज, मर्दो मा

हारी रे इणो देह चोलीने ॥ ४ ॥ हुं पण तूवी हो राज,
मनमां वारु राज, जिमवा सारु रे मेंतो एहनें नोतखो

॥ ५ ॥ एह कहे माहरे हो राज, काम नहीं ठे राज,
जोजन न करुं रे कांश्क मुने दे हवे ॥ ६ ॥ पीत प

टोली हो राज, छे नहीं देतां राज, सोगमे देतां रे दामें
राजी ना थयो ॥ ७ ॥ नाम नं नांखे हो राज, कांश्क

मागे राज, आज ए आवीरे जागो पूर्वे माहरे ॥ ८ ॥
वेहरे बेसारी हो राज, मुंजनें लंघावे राज, जावा नं

दीपे रे क्पाहिं फीटणो बाहिरें ॥ ९ ॥ तव में विचा
रुं हो राज, जो हुं दुःखमां राज, जगडो निवेडो रें

वेण्याने ठोडवुं ॥ १० ॥ तो मुज थावे हो राज, कारज

हाथ ते ॥ २२ ॥ फणधर मद्दोहो हो राज, हाथे
 बलगो राज, न रहे थलगो रे बाँको कर थाठाडता
 ॥ २३ ॥ ते कहे इहां तो हो राज, कांश्क बीते
 राज, मगधा दसतीरे जांखे एह ठे ताहरो ॥ २४ ॥
 में मुज बोख्यो हो राज, ते एह दीखो राज, तुज के
 णापी रे कीधो माहारे बूटको ॥ २५ ॥ लोक दसंता
 हो राज, कहे तिहां बहुलां राज, एहने दीधुं रे
 एणो कांश्करुअहुं ॥ २६ ॥ विपधर मंख्यो हो राज,
 ते नर भूख्यो राज, तोतिल नामें रे देवी केरें बारणें
 ॥ २७ ॥ मुजने तेडी हो राज, मगधा साथें राज,
 निजघर थावी रे पाड माहरो मानती ॥ २८ ॥
 बीजे खंमे हो राज, ढाल सत्तरमी राज, कांति उमंगें
 रे जीखी रुडी नेहखुं ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ द्वार रही में तेहने, थाप्यो इम उच्चाट ॥ तुज
 घर नृपदेपी बसे, पेसुं नहीं ते माट ॥ १ ॥ इम सु
 णी ते बिलखी थइ, चिंते एहबुं चित्त ॥ ए नाणो ठे
 कोइक नर, जाणे रहस्य घरित्त ॥ २ ॥ बीहती मन
 मां वापडी, मुजने इम कहे वाण ॥ रखे सुगुण कहे
 ता किहां, कहुं तुं जोडी पाण ॥ ३ ॥ किहां भुपाहुं

तुम थकी, न रहे मानी नेट ॥ कहो त्रिपायो किहां
 सिपे, दाई आगल पेट ॥ ४ ॥ चने कपट करवो ति
 हो, जिहां कपटनो लाग ॥ कोईक दिन तेहवो मले,
 काढे सपलौ ताग ॥ ५ ॥ सुईविइ करे तिता, पूरण
 धागा सारख ॥ सलून सहेजे गुण करे, दांके अथगुण
 लाख ॥ ६ ॥ एहथी मुज पानुं पढयुं, तेतो पूरव नो
 ॥ गले महीनै फाढया, हवे बन्यो ठे जोग ॥ ७ ॥
 ॥ ढाल अढारमी ॥ चंदनरी कटकी जली ॥ ए देशी ॥
 ॥ वरिधवलनी गोरही, कनकवती नामेण ॥ नाणि
 हा दो राल, चरित्र सुणो एहवी नारीना ॥ कपट करी
 ने नृपनंदनी, कूपें नखावी एण ॥ ना० ॥ १ ॥
 कूढ कपट जाणी नृपें, रोकीती निज मेह ॥ ना० ॥
 नात्ती निशि थाली रही, मुज घर पूरव नेह ॥ ना० ॥
 च० ॥ २ ॥ बलती जेहवी गामरी, पेती घरने खूण
 ॥ ना० ॥ मुज परथी काढो परी, करीनै कोईक दूण
 ॥ ना० ॥ च० ॥ ३ ॥ मानीश दुं उपगारहो, बीजो ए
 गुण जोई ॥ ना० ॥ पारथीयां होये सारथी, सारथ
 विण जग कोय ॥ ना० ॥ च० ॥ ४ ॥ तव में मगधा
 ने फसुं, फाहुं जो करी ख्याल ॥ ना० ॥ वैर वधे तो
 वेहुमा, जाथो पण जंजाल ॥ ना० ॥ च० ॥ ५ ॥

तोपण तुज ठपरोधयी, करखुं दुं ए काज ॥ ना० ॥
 ते मुज रातें मेलवे, जिम करुं काढण साज ॥ ना०
 ॥ च० ॥ ६ ॥ गणिकायें अति आदरें, जांजत मुजने
 दोध ॥ ना० ॥ रातें एकांतें मुने, कनका मेलवी सीध
 ॥ ना० ॥ च० ॥ ७ ॥ मुज साथें रागें नरी, वदती
 मीठा बोल ॥ ना० ॥ जाग जणी मुज प्रारये, करती
 नयण कछोल ॥ ना० ॥ च० ॥ ८ ॥ में नाखुं तेहने
 ईस्युं, मुज वालो ठे एक ॥ ना० ॥ ते अति अरथी
 नारिनो, मनमय रूपे ठेक ॥ ना० ॥ च० ॥ ९ ॥ प
 ण कामें गामें गयो, आज करी संकेत ॥ ना० ॥ मु
 ज मलशे देधी घरें, रातें काले सहेत ॥ ना० ॥ च०
 ॥ १० ॥ मुज साथें तुं थावजे, देगुं जाग घनाय ॥
 ना० ॥ नहीतो पण ए थापणी, प्रीति किहां नही
 जाय ॥ ना० ॥ च० ॥ ११ ॥ कहे कनका क्याथी
 तुमें, थाव्यां कुंण तुम जात ॥ ना० ॥ में कसुं धिहुं
 रुझी अमें, चाव्या विदेश सखात ॥ ना० ॥ च० ॥
 ॥ १२ ॥ मुज वचनें ते वीरमी, नाखे निज अवदात
 ॥ ना० ॥ गोष्टि करतां रातही, पीती पयो परजात
 ॥ ना० ॥ च० ॥ १३ ॥ पृथुं प्रपंचे में बली, तेह
 ने प्रजातें ताई ॥ ना० ॥ ठे तुज पासें के नही, आ

नरणादिक कहे ॥ ना० ॥ च० ॥ १४ ॥ तब मुजने
 देखादीवा, आनुपण तेणे काडि ॥ ना० ॥ दृगती में कसे
 पोहलो, ते कहे इम रत पाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १५ ॥
 द्वार अत्रे मादारे गली, नामें जालमीपुंज ॥ ना० ॥
 पुन धलो ते काढतो, धावे ठे मुज गुज ॥ ना० ॥
 च० ॥ १६ ॥ में पुण्यु ते प्या पयो, ते कसे घडुटा
 मोहि ॥ ना० ॥ शुना घर पामें यदो, कीनिं घन ठे
 त्याहि ॥ ना० ॥ च० ॥ १७ ॥ ते नीनें जंमारीपो, ते
 क्षमा मुखो माट ॥ ना० ॥ न शकुं जाया वातरें, मर
 ती हुं तिण घाट ॥ ना० ॥ च० ॥ १८ ॥ रातें आज
 जई तिदा, थाणीश तेद ठिपाय ॥ ना० ॥ जाई शके
 जो हुं तिदा, तो सेई आय सकाई ॥ ना० ॥ च० ॥
 १९ ॥ नही तो सजे मुकने, कहेजे जेदुं होय ॥
 ना० ॥ इम आलोच कसो पणो, मांदोमाहे रत ठो
 य ॥ ना० ॥ च० ॥ २० ॥ मानयकी हुं उतरी, आ
 बी मगधा नाज ॥ ना० ॥ धीजे खमें अदारमी, कांते
 जणो इम टाल ॥ ना० ॥ च० ॥ २१ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ मगधा कहे मुजने हसी, कदो केतो ठे डीज ॥ में
 कसुं ए दुज घर अकी, काढी ठे अदखीज ॥ १ ॥ सं

च कस्यो ठे एहवो, पूरी पूरण पूठ ॥ वारंता पण-रा
 तमा, जाशे कनका कठ ॥ २ ॥ सामग्री नोजन तणी,
 करे मगधा अति नेह ॥ जमी रमी तिहांथी वली, ग
 ई दिवसने ठेह ॥ ३ ॥ ठाना थानक थंननो, जोता
 न जह्यो हार ॥ रातें कनकाने वली, जई जांख्यो सु
 विचार ॥ ४ ॥ हार छेई तुं आवजे, देवी नयन मजा
 र ॥ पुठीने मगधा प्रत्ये, हुं चाली निशिचार ॥ ५ ॥

॥ ढाल अंगणीशमी ॥ आवे लालनी देशी ॥

॥ रयणी अंधारी माहे, वहेती हुं चित्त चाहे, आवे
 लाल ॥ अध मारगे जूली पढी ॥ आफलती पुर सेर,
 खाती धारण फेर, था ॥ जिम तिम पामी वाटडी
 ॥ १ ॥ आवी हुं तुम पास, जांखी वात प्रकाश,
 था ॥ कनकवती जोइ आवती ॥ हार छेइने एह,
 आवे ठे अतिनेह, था ॥ कनका तुमने चाहती ॥ २ ॥
 वात सुणी इम नाह, आवी टेक अथाह, था ॥
 प्रीति वचन ते उद्यप्या ॥ बोलबुं नही घटमान, एह
 थो होय नुकशान, था ॥ इम कही ये ठाना ठिप्या
 ॥ ३ ॥ कनका मन उत्कंठ, आवी मुज उपकंठ ॥
 था ॥ तब में इम कसुं तेहने ॥ आवी म कर कांई
 सोर, वेठा ठे इहां चोर, था ॥ दे मुज जे होय तु

ज कने ॥ ४ ॥ राखु बिगडी क्याहि, तव ते आपे त्या
 हिं, आ० ॥ बगचो दाखें ठचकी, में तेहमाथी टा
 लि, काढी वस्तु निहालि, आ० ॥ हार अने बली कं
 चूकी ॥ ५ ॥ वाकी सवि समुवाय, बांध्यो एक निजा
 य, आ० ॥ चोर मंजूपें ते धखो ॥ में कहुं तेहने ए
 म, थरके ठे तुं केम, आ० ॥ पानक में ताहरें कह्यो
 ॥ ६ ॥ ज्यालें चोर न जाय, त्यां लगे तेन खमाय,
 आ० ॥ पेश मंजूपें ते नणी ॥ पेठी ते निर्जाक, में
 धारी मन ठीक, आ० ॥ ताखुं दीधुं आहणी ॥ ७ ॥
 थापण बे अति दुम, ऊपाढीने मंजूप, आ० ॥ गोला
 मां बहेती करी ॥ वैर प्रथमनुं वालि, बाढी नीर वि
 चाल, आ० ॥ करताखुं करीयें खरी ॥ ८ ॥ मांज्युं पि
 व ततकाल, थूकें मादारुं नाल, आ० ॥ रूप सहज
 तुं हुं जही ॥ तुम थाणाथो अंग, दीधुं धिलेपण चंग,
 आ० ॥ पहेरी पटोली में बही ॥ ९ ॥ पहेखां कुंम
 ल खास, रविशशी मंमल नास, आ० ॥ लाथो जे
 वडने थडें ॥ पहेखो कंचुक साग, कंठें ठायो ते हार,
 आ० ॥ वरमाजा धारी नलें ॥ १० ॥ पेठी संपुट मां
 हि, गुहिर विवर थवगाहि, आ० ॥ त्यारें मुज सवि
 शीखवी ॥ निमुणे बीणा घोर, तव ए खीजी चोर,

आ० ॥ काढे इहांथी नीववी ॥ ११ ॥ इम कही बी
 छुं खंम, थाप्युं शीश अखंम, आ० ॥ तेहमां वसी खी
 ली जडी ॥ राख्या पवननां माग, नीचें ठानें लाग,
 आ० ॥ चतुराईशुं ते घडी ॥ १२ ॥ जाणुं एती वात,
 कही आगें अवदात, आ० ॥ में न लह्या तिहां संक
 मी ॥ बीजे खंम एह, काति कहे धरी नेह, आ० ॥
 ढाल जणी उगणीशमी ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कहे माहाबल मानिनी सुणो, आगें जे दुई वा
 त ॥ थंज तिस्यो में चीतखो, जिम जाणो नवि जा
 त ॥ १ ॥ रंग प्रमुख जे कगखा, ते बाह्या जलपूर ॥
 एहवामां फरी चोर ते, आख्या जवन हजूर ॥ २ ॥
 चोर सहित पेटी तिकें, जिहां तिहां जोतां दीठ ॥ तस
 शानें बोलावता, कीधा आदर इठ ॥ ३ ॥ मुज पूढे मंज
 शशुं, दीठो एक किहां चोर ॥ बीडुं में वेई आदरें, कसुं
 एम तिण गोर ॥ ४ ॥ थंज एहजो पूर्वनी, पोलें मूको
 आज ॥ तो देखाहुं चोर ते, व्यवहारें नहीं लाज ॥ ५ ॥
 ॥ ढाल बीशमी ॥ थें तोनें आया उलगुं, उलगाणाजी ॥

जिरमट खाश्यो गाल जण्या ॥ ए देशी ॥

॥ चोर कहे इम उमही ॥ गुणवंताजी ॥ राज नले

मर्या नाग्ययकी ॥ काम करे छुं ए वही ॥ वज्रमंता
 जी, खरये अवसर एह तकी ॥ १ ॥ गुण करता गुण
 कीजीये ॥ गु० ॥ एहमा पाद न कोइ इहां ॥ कहोतो
 काढी दीजीये ॥ उ० ॥ जीव सरखो काज जिहां
 ॥ २ ॥ जीवजीवातन सारखो ॥ गु० ॥ ते जात
 होय इख पणो ॥ पोतावटीनुं पारिखुं ॥ उ० ॥
 लदीये थये सरे वमणो ॥ ३ ॥ इम कही ते यया
 एकठां ॥ गु० ॥ धन दाटी तेह सिंधु तहें ॥ ठपाडे मली
 सामटा ॥ उ० ॥ थंन तिहांपी एक धटें ॥ ४ ॥ ते
 पूतें हूं चानियो ॥ गु० ॥ पूरव पोल समीप गया ॥
 बंठित थन देखाडियो ॥ उ० ॥ ते तिहां मूकी निचिंत
 थया ॥ ५ ॥ में जाण्यो जो गोपव्यो ॥ गु० ॥ वेखाहुं
 ते चोर हवे ॥ तो ए टोलो कोपव्यो ॥ उ० ॥ धन लोर्जे
 तस लोदी पीवे ॥ ६ ॥ इम घारी अंतर वटें ॥ गु० ॥
 वत्तर कहुं एम कसुं ॥ लोन वशें तेणें चोरटे ॥ उ० ॥
 ताहुं कपाढी इष्य यसुं ॥ ७ ॥ गोला सिंधु प्रवाहमां
 ॥ गु० ॥ तरती मूकी मंजूष सुखें ॥ तेह ठपर चढी
 राहमां ॥ उ० ॥ नदीयें चई ए जाय मुखें ॥ ८ ॥ दी
 ग में सपली परें ॥ गु० ॥ पासैं कजे चरित पणो ॥
 चोर सहइ इम ठहरे ॥ उ० ॥ साच चरित ए चोर त

ए॥ ए॥ रात्रि सुधी ते नीरमा ॥ गु० ॥ जाशं तरतो
 नूनि कीती ॥ देशुं बड जंजीरमा ॥ उ० ॥ महिगुं करजे
 जेय थिती ॥ १० ॥ जाशे ए किहां वेगलो ॥ गु० ॥
 चोटी एहनी हाथ थठे ॥ हमणां मूख्यो भोकलो ॥
 उ० ॥ जेजे फल रत पाक पठे ॥ ११ ॥ इम कहतां
 मन आमले ॥ गु० ॥ चोर गया निज काज वगे ॥ यत
 न करी में एकले ॥ उ० ॥ राख्यो थंज प्रजात लगे ॥
 १२ ॥ प्रहकारे जण नूपनो ॥ गु० ॥ आव्यो निरख
 ए थंज तिहां ॥ हुं थई थलख स्वरूपनो ॥ उ० ॥ वेवो
 आवी ठे नूप जिहां ॥ १३ ॥ इत्यादिक वीती कथा
 ॥ गु० ॥ कहीने वली महाबल नणे ॥ काहुं चोर ते स
 वैया ॥ उ० ॥ शिखर ठव्यो जे शुवन तणे ॥ १४ ॥
 चालीश जो हुं निजपुरे ॥ गु० ॥ तो मरजे तिणे जीड
 पडयो ॥ चढो पाप खराखरे ॥ उ० ॥ इणो फिकरे मुज
 चित नडयो ॥ १५ ॥ तुं इहां रहेजे हुं वही ॥ गु० ॥ आवी
 शं तेहनी खल करी ॥ कहे मजया रहेगुं नहीं ॥ उ० ॥
 सार्थे आवीश रंग धरी ॥ १६ ॥ तव कुमर विचारो चि
 तर्मा ॥ गु० ॥ वेगवतीने एम नणे ॥ जो नृप आवे तुर
 तर्मा ॥ उ० ॥ तो कहेजो इम निपुण पणे ॥ १७ ॥
 गोलातटे देवी नमी ॥ गु० ॥ आवजो कुमर इहां ह

॥ ठाल एकवीशमी ॥ धिग धिग धणनी प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ नरराज अति चिंता करे, मनमा पोशी दाह
रे ॥ वर कन्या बिहुं किहां गया, ए तो थचरिजे रे
दोसे जगनाह ॥ १ ॥ जूपति त्रटकीने कहे रे, कुंण

जायो रे एह अकज सरूप ॥ जोया पण लाधा नहीं
रे, थयुं होशे रे कोइ विपरिय रूप ॥ जू० ॥ २ ॥

किहां नगरी चंडावती, किहां नगर पोहवीगण ॥

किहां कन्या महाबल किहां, एतो विघ्नम रे रचना

अहिनाण ॥ जू० ॥ ३ ॥ अथवा देवें वेहुनो, संयो

ग इम किम कीध ॥ इंडजाल परें कारिमो, वेखाडी

रे किम जडपी लीध ॥ जू० ॥ ४ ॥ तुज शिक्ता

एहवुं हतुं, करवुं देव अनिए ॥ तो मूजसकी परग

ट करी, क्या पाडयो रे एह माहारी दृष्ट ॥ जू० ॥

॥ ५ ॥ नवि दीधुं नोजन नलुं, नहीं दीधुं लीध थ

वालि ॥ मणि हीणुं नूपण नलुं, पण पडिठ रे जश

मणि ते टालि ॥ जू० ॥ ६ ॥ हण्णा डुट किण पै

रीपें, अथवा निरुध्या केण ॥ के किण देवें थपह

खां, इंपती दोइ रे आख्या नहीं तेण ॥ जू० ॥

॥ ७ ॥ रूप करी महाबल तणुं, आख्या हतो कोइ

चोर ॥ परणी निज देजो गयो, मुल कन्या रे काल

जानी कोर ॥ नू० ॥ ७ ॥ कुमर कुमरी रूपें करी,
 प्रांति मुज मन घालि ॥ मरण थकी वारी गया, करु
 णाला रे केइ थयवा विचालि ॥ नू० ॥ ८ ॥ भुं करु
 केहने रुहुं, कुंण लहे मुज मन पीढ ॥ इम कहेतो
 गलहथ करी, नृप बेगो रे पढयो पिंता जोढ ॥ नू० ॥
 ॥ ९ ॥ वेगवती बेगें कहे, प्रभु धरो मनमां धीर ॥
 तेहिज मजया एहती, तेह हुतो रे एह महबल वीर
 ॥ नू० ॥ १० ॥ पण रातमां जातं वनें, उल गेतघां
 ततखेव ॥ कोइक बैरी विरोधयी, संजवियें रे हरि
 या कियें देव ॥ नू० ॥ ११ ॥ देशावर पुर पर्वतें,
 बनजूमि विषम प्रवेश ॥ मूकी नर विशवासिया, जो
 रावो रे तनी थपर किलेश ॥ नू० ॥ १२ ॥ प्रथम
 सुहवीगण पुर दिशि, गुरत करवी शोध ॥ किणहीक
 कारणथी कदे, नारी लेई रे गयो होय तिहां योध
 ॥ नू० ॥ १३ ॥ सूरपाल नरिंदनें, एह समय जणावो
 यात ॥ तेपण खबर करे वली, करता इम रे सांव था
 बशे पात ॥ नू० ॥ १४ ॥ जलुं जलुं नृपति कहे, तें
 कल्यो साहु उपाय ॥ वेगवतीने सराहतो, तिम कर
 वा रे नरपति सज थाय ॥ नू० ॥ १५ ॥ मलयकेतु
 निजपुत्रनें, देई शीख नृप ससनेह ॥ सूरपाल दिशि

रे ॥ मोहन रंगीला ॥ वात कहुं नवली जली होला
 ल ॥ सांजलजो अवनूत रे ॥ मो० ॥ १ ॥ जूत बडो
 कहे वातडी हो लाल ॥ ए आंकणी ॥ कुमर सुणे
 रह्यो हेठरे ॥ मो० ॥ रहस्य मरम जोता वजी हो
 लाल ॥ वेधक पामे नेठ रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २ ॥ पु
 हवी ठाण नरिंदनो रे, माहावल नामे कुमार रे ॥ मो० ॥
 ठे मतिवंत गुणायरु होलाल, रतिपतिने अणुहार
 रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ३ ॥ तस जननी पदमावती रे,
 तेहना गलानो हार रे ॥ मो० ॥ किणहीक अलख
 पर्णे लीयो हो लाल, माय करे दुःख नार रे ॥ मो० ॥
 ॥ जू० ॥ ४ ॥ इम पण बांध्यो आकरो रे, वालण
 हार कुमार रे ॥ मो० ॥ हार न दौं दिन पांचमे हो
 लाल, तो मुज अगनि आधार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥
 ॥ ५ ॥ मातार्ये पण आदखो रे, पण तेहयो निर
 धार रे ॥ मो० ॥ पांच दिवसमां ते लहुं हो लाल,
 तो रहुं जीवित धार रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ ६ ॥ ख
 वर नहीं ठे कुमरनी रे, हार केहें गयो कठ रे ॥ मो० ॥
 पंचम दिन कालें दुशे हो लाल, सूरज कग्या पूठ रे
 ॥ मो० ॥ जू० ॥ ७ ॥ नृपनंदन सुगतावली रे,
 मजवा दुर्जन बेह रे ॥ मो० ॥ ते दुःख मरचुं आ

॥ १५ ॥ पुर पासैं गोला तटैं रे, नामे धनंजय यह
 रे ॥ मो० ॥ जूत गया तस देहरे हो लाल, करवा
 कौतुक लह रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १६ ॥ निजपुर उ
 पवन जूमिनी रे, परिचित तरुना वृंद रे ॥ मो० ॥
 कुमरें निहाली उजखी हो लाल, पाभ्यो परमानंद रे
 ॥ मो० ॥ जू० ॥ १७ ॥ कुमर जणै मजपा जणी रे,
 दीसे पुण्य प्रमाण रे ॥ मो० ॥ जेहथी ए चड कपडो
 हो लाल, थाब्यो पुहवीगण रे ॥ मो० ॥ जू० ॥
 ॥ १८ ॥ चड कोटरथी नीसरी रे, जइयें वपवन कूज
 रे ॥ मो० ॥ सुर शक्तें बली कडरी हो लाल, तो कर
 स्या श्यो खल रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ १९ ॥ एम विचारी
 नीसखा रे, चड कंदरथी दोष रे ॥ मो० ॥ कदली वन
 छे ठूकडूं हो लाल, तिहां जइ बेठा सोय रे ॥ मो० ॥ जू० ॥
 ॥ २० ॥ कपडतो गयणागणें रे, देखे चड बली तेम रे
 ॥ मो० ॥ मांहो मांहे कहे इहां थको हो लाल, जाशे
 थाब्यो जेम रे ॥ मो० ॥ जू० ॥ २१ ॥ जो रहेता ए
 हमं वसी रे, तो जातां क्रिण थान रे ॥ मो० ॥ पडतां
 विपसी जोलमां हो लाल, जिम पवनें तरु पान रे
 ॥ मो० ॥ जू० ॥ २२ ॥ ग्रीजे खमैं ए कही रे, सुंदर प

हेली ढाल रे ॥ मो० ॥ कांतिविजय कहे पुण्यथी हो
नाल, बाधे सुजश विशाल रे ॥ मो० ॥ नू० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमार नितुणे तदा, विनताना आकंद ॥ दया
पणे नयणें नरे, करुणा जल निस्पंद ॥ १ ॥ थावीश
हु वहेलो प्रिये, चिंता सुज न करेश ॥ इम कही नर
रूपे त्रिया, तिहां उबि चव्यो नरेश ॥ २ ॥ निरखत पिपु
नी वाटही, शूने रंजाकुंज ॥ रपणि गमावे नारि ते, दायी
डुखने पुंज ॥ ३ ॥ पीत वरण प्राची दुवे, पाम्या क
मल विवांध ॥ बंधनपरथी बध जिम, वूटा अजिकुंज
योध ॥ ४ ॥ गुंजा पुंज समान तनु, उदयो बालो सूर ॥
आलें किरणजालें हणी, कखा तिमिररिपु दूर ॥ ५ ॥
॥ ढाल बीजी ॥ वृषजान सुयने गई दूती ॥ ए देशी ॥
॥ मजया मन एम विचारे, जाचं हुं पुरमां करारें ॥
माय बापने मजवा कामें, सुज नाह गयो झुगे धामें
॥ १ ॥ चाही इम बालो चुंपे, थावी यही पुरनी खुंपें ॥
पेते जब पुरनें डुवारें, रोक्री तव नगर तजारें ॥ २ ॥
दिव्य वेश निहालो चमक्यो, कहे कुण तुं थायो घम
क्यो ॥ बोलाव्यो तिहां उजर नापे, दश दिशिमां लो
चन पापे ॥ ३ ॥ मजिया केई नगर निवालो, निरखे तत

रूप प्रकाशी ॥ कुंमलने डुकूलनी फाली, उजलया म
 हवलनां जाली ॥ ४ ॥ तलवर कहे किहांथी लाया,
 थानूपण कुमरनां बाधां ॥ इम कही नृप पासें लाव्यो,
 देखी नृप चित्त चमकाव्यो ॥ ५ ॥ कहे कोण पुरुष
 ए नवलो, सोहे नृपणें करी जांतीजो ॥ मुज सुतनां
 पहियां दीते, थानूपण विश्वावीसें ॥ ६ ॥ तलवर क
 हे ए हिसंतो, पकड्यो पुरमां पेसंतो ॥ पूढ्यो पण
 उत्तर नापे, पूढो बली जो हवे थापे ॥ ७ ॥ नृपति
 कहे कुंण तुं किहांथी, आव्यो कहे साच जिहांथी ॥
 मलया मनमाहे विमासे, तातुं इहां जूतुं जाते ॥
 ॥ ८ ॥ कहिशुं अम चरित्र वखाणी, कोइ तर्हहरो नही
 प्राणी ॥ कहेवुं नही पीठडा पाखें, जावी मटरो नही
 लाखें ॥ ९ ॥ इम धारीने मलया बोले, महवल ह
 ज मित्रने तोले ॥ ते माटे ए वेश प्रसिद्धो, मुजने तें
 ए पेहेरण दीधो ॥ १० ॥ शूरपाल कहे तेह क्यां ठे
 सा कहे इहांहिज जिहां त्यां ठे ॥ नृप कहे होये जं
 इहां गावे, मुज मलया तो किम नावे ॥ ११ ॥ जूतीतदि
 यात प्रकाशी, चोकस न पढी विण राती ॥ महवल
 थी प्रीति वखाणे, तो सेवक कोइ बुज जाणे ॥ १२ ॥
 इत्यादिक वचन सुणीनें, रही मौन धरी मन हीने ॥ वं

यो नरपति हुकरी, एह बात हेतु थपथारी ॥ १३ ॥
 अणदीनां मुज नंदनना, वसनादिक लीषां तनना ॥
 लोजतार नामें जेणे चोरें, रहे ते गिरिफंदर गोरें ॥
 ॥ १४ ॥ चोखो पुरनो जेणें माल, पंकड्यो ते माटे
 हवाल ॥ काजे तस नियह कीयो, तस बांधव दीसे
 ए सीयो ॥ १५ ॥ निजबंधु बियोगें बलतो, सूत्रि सेया
 शब्दो बलतो ॥ पहरी मुज सुतनो वेश, इणें पुरमां
 तीव प्रवेश ॥ १६ ॥ मुज सुत हणीत इणें मजीनें,
 मुज पैरी ए अटकलीनें ॥ लोजतार कन्हें जई हणजो,
 इहां पाप किर्युं मत गणजो ॥ १७ ॥ मलया मनमां ई
 म ध्यावे, असमंजस कर्मनें दावे ॥ प्राणांतिक थापव
 मोटी, दीसे ते इहां बलो खोटी ॥ १८ ॥ चिंतवती पूर्व
 सलोक, रही मौन धरी अतिशोक ॥ तय बोळ्यो सदि
 व विचारी, महाराज जुवो थपथारी ॥ १९ ॥ जिम
 साह नहीं ए साचो, तिम चोर करी मत खांचो ॥ था
 चरणा दीसे रुडी, शिर थावी तो मति कूडी ॥ २० ॥
 इहां उचित करावो धीज, होये शुद्ध अशुद्ध पतीज ॥
 इम करी हणशो तो थावे, कोई दोष न वेजो पावें
 ॥ २१ ॥ नृप कहे शी धीज यतावो, तय ते कहे सर्प
 मंगावो ॥ साचो घट सर्पनी धोजें, होजे तो चरण न

मीजे ॥ २२ ॥ नृप गरुडविद अविजने, मूके तप
 शैल अलवे ॥ दुहर विपधर थाणेवा, गया हतता
 ते ततखेवा ॥ २३ ॥ वस्त्र कुंमल नूपे लेई, तलवरने
 सोंप्यो तेई ॥ बंध थावी मलया राणी, पण ठाले व
 हेरो पाणी ॥ २४ ॥ ब्रीजे खंमे बीजी ठाल, इम
 फाति कहे सुरसाल ॥ केई कौतुक दोरो थागे, सांज
 लजो श्रोता रागे ॥ २५ ॥ इति ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ एहवे पटराणी तणी, महुजणी थानी दोड ॥
 गजगलनी नृप थागले, कहे एम कर जोड ॥ १ ॥ देव
 खयर नहीं कृमरनी, पंचम दिन ठे थाज ॥ नेट अ
 निट इहां किधुं, दीसे ठे नर राज ॥ २ ॥ पुत्र रतन
 कुंजन दूठ, हार तणी शी वात ॥ शैल अलंघायी पढी,
 करगुं ते दुःख घात ॥ ३ ॥ अविनय जे कोया दुवे, ते
 ग्वमजो नरनाथ ॥ संदेशा तुम राणीयें, इम दीया
 मुज दाय ॥ ४ ॥ समयोचित चिनमां धरी, करो था
 प हित जाणी ॥ इम सुणी नरपति तेहने, पनणे थ
 वगर वाणी ॥ ५ ॥

॥ ठाल ब्रीजी ॥ छुंवायदानी देशी ॥
 मुज वचने इम जाखजो रे, राणी समीपें जाय ॥ स

दुलणी आगे वदंत ॥ स० ॥ मुज सुत वल्लन आवि
 यो रे, कहेवा सुधि कुण खंत ॥ स० ॥ १० ॥ अथवा
 कोईक वैरीयें रे, कुमर हण्यो मल खेल ॥ स० ॥ कुं
 ल वसन लीपां तिकें रे, ते आव्यां इणि बेल ॥ स०
 ॥ ११ ॥ ते माटे निखुं हवे रे, करतो धीज विष्ट
 ५ ॥ स० ॥ इम कही यक्षगृहें गई रे, परिकर सायें
 मुष्ट ॥ स० ॥ १२ ॥ नृप पहेलो तिहां आवियो
 रे, वांटयो जणने थाट ॥ स० ॥ आव्या तव विप
 र ग्रही रे, गारुडी जोतां वाट ॥ स० ॥ १३ ॥ नृप
 तिनें फहे गारुडी रे, देव अलंभा देव ॥ स० ॥ वि
 वर अनेक निहालतां रे, लाधो फणिधर नेव ॥ स०
 ॥ १४ ॥ फुंकारे तरु बालतो रे, कालो काजल वान
 ॥ स० ॥ मंत्रप्रयोगें कुंनमां रे, घाल्यो आणी निदा
 न ॥ स० ॥ १५ ॥ यक्ष धनंजय आगलें रे, सूकावे
 नर कुंन ॥ स० ॥ नर न्हवरावी आणीयो रे, सुजटें
 फरी संरंज ॥ स० ॥ १६ ॥ रूप निहालो तेदनुं रे,
 फहे राणी पुरलोक ॥ स० ॥ एहवा गुण इम दूषवी
 रे, विधि रचना दुई फोक ॥ स० ॥ १७ ॥ चंड अंगारा
 जो खरे रे, पायक जल विभ्राम ॥ स० ॥ दाह अमृ
 जो हुवे रे, तो एहयो ए काम ॥ स० ॥ १८ ॥

दिव्य कनिष्ठ ए गङ्गाने रे देवी मन न बहंत ॥ म० १॥
 दांप नहि जपनि नणे रे, गुणद्वी एम जहंत ॥ म० ॥
 ॥ १० ॥ समसूरी वातां मध्ये रे, नाथे सुजय श्रुतायाः ॥ म० ॥
 जाग्य सुवर्ण युवाशने रे, नाथो ले गुण नाम ॥ म० ॥
 ॥ १० ॥ नमः ना विनता निहा रे, जपनी मन नव
 का ॥ म० ॥ नोकरव्य विगमना रे, कथाडे घट
 दा ॥ म० ॥ ॥ १० ॥ निज कर्मले श्रांति रे, नि
 दास प्रनि गंधन ॥ म० ॥ नर नाथो श्रवणि
 नर न, निज निष्पन्न नाथ ॥ म० ॥ ११ ॥ नम
 दूरे निवेद सदा कर्म नर वदन निहा ॥ म० ॥
 नर निविट मन पुत्रां रे नर नर नर ॥ म० ॥ १२ ॥
 नाथ नाथ ईश कर्म नर नर नर ॥ म० ॥
 नाथ नाथ ईश कर्म नर नर नर ॥ म० ॥ १३ ॥

॥ दासः ॥

केन कर्म कर्मने, कर्म सुवर्ण नाथ ॥ ने
 कर्मना रे रे रे, सुवर्ण नाथ ॥ १ ॥ ने नि
 ना, निमन कर्म, नर प्रमन पुत्र नाथ ॥ नाथ पि
 सुवर्ण ईश कर्म, कर्म नाथ नाथ ॥ २ ॥ नाथ पि
 पुत्र निहा नाथ, नाथ नाथ नाथ ॥ नाथ नाथ नाथ
 नाथ नाथ नाथ नाथ नाथ ॥ ३ ॥ नाथ नाथ

क नरनो चढी, चाटे जव थहिराव ॥ दिव्यरूप तरु
णी दुई, तव ते मूल स्वभाव ॥ ४ ॥ विस्तारी फणि
मंमली, रह्यो उपर धरी ठत्र ॥ जोतां जण थदैत र
त, लहे चित्र सुपवित्र ॥ ५ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ माली केरे वागमां,
वो नारंग पक्के रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ थर थरतो नरराजीयो, नणो एहवी वाचा लो
॥ अहो न० ॥ देखी तिहां अचरिज मोटोरे लो ॥ विण
विगतें में मूरखें, काम कीधां काचां लो ॥ अ० ॥ देखी०
॥ १ ॥ पुरजण देवी वारता, थनरथ उगडयो लो ॥ अ० ॥
जरनिंदें सूतो इहां, मृगराज जगाडयो लो ॥ अ० ॥ दे०
॥ २ ॥ नहिं सामान्य जुजंग ए, कोइ देव सरूपी लो
॥ अ० ॥ निरखत रचना एहनी, रही मनढे खुंपी लो
॥ अ० ॥ दे० ॥ ३ ॥ शक्ति सहित ए वे जणां, दां
की निज वाना लो ॥ अ० ॥ पुरमां कार्य उदेशयी,
थ्याव्यां कोई ठानां लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ४ ॥ परमारथ लहे
तो नथी, थाराधी वेहुनें लो ॥ अ० ॥ जगतें सूधां
रीजवी, पुडु गति एहुनें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ५ ॥
इम कहेतो धूप वखेतो, कुंकुमांजल ढोवे लो ॥
० ॥ फणीधर मूको सुंदरी, कही इम मुख जोवे

लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ६ ॥ अविनय मुज पन्नग प्रह,
 कीधो ते खमजो लो ॥ अ० ॥ जेते वश होय वेव
 ता, ईम जाणी समजो लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ७ ॥ नि
 सुणी नृपति वीनति, मलया अहि मूक्यो लो ॥ अ० ॥
 नृप पयपात्र धरुं तिहां, पीया जइ दूक्यो लो ॥
 अ० ॥ दे० ॥ ८ ॥ संतोष्यो पयपानथी, नरपति आ
 देशें लो ॥ अ० ॥ गारुडोयें पाठो ग्रहो, मूक्यो गिरि
 देशें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ ए ॥ नृपति पूजे नारीनें,
 जोतां जण पासें लो ॥ अ० ॥ नरथी नारी किम हई,
 एह कौतुक नासे लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १० ॥ कुण
 ते किम थावी इहां, केहनी तुं वेटी लो ॥ अ० ॥
 रहस्य कहो सवि चित्थी, अंतर पट मेटी लो ॥ अ०
 ॥ दे० ॥ ११ ॥ मलया एहबुं चिंतवे, मूल रूप ए च
 लट्ठुं लो ॥ अ० ॥ नाल अमृतथी मांजतां, पहेलुं
 पण ठलट्ठुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १२ ॥ रूप ए विप
 हर चाटतां, कहो किम बदलाणुं लो ॥ अ० ॥ हार
 लह्यो पीयु करतणो, थचरिज इहां जाणुं लो ॥ अ० ॥
 ॥ दे० ॥ १३ ॥ कारण ए मुज पीवनां, विण कारण सीयां
 लो ॥ अ० ॥ कारणें नाग थई तिणें, कारज शुं कीयां
 लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १४ ॥ समजण मुज पडती नथी,

श्यो उत्तर थापुं लो ॥ अ० ॥ जेतुं इहां कहेतुं घटे,
 तेतुं पिर थापुं लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १५ ॥ लाजें मुख
 नीचुं करी, कहे मलया बाली लो ॥ अ० ॥ दक्षिण
 दिशि चंडावती, वीरधवलें पाली लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १६ ॥
 हुं ते नृपनी नंदनी, जीवितथी प्यारी लो ॥ अ० ॥ नामें
 मलया सुंदरी, चंपक उरधारी लो ॥ अ० ॥ दे० ॥
 ॥ १७ ॥ नूप कहे जुगतुं नहीं, ए वचन विशेषें लो
 ॥ अ० ॥ प्रथम कसुं तुं तेदथी. मजतुं नहीं लेखे लो
 ॥ अ० ॥ दे० ॥ १८ ॥ कारण यज्ञें ते नूपने, पुत्री
 जो आई लो ॥ अ० ॥ केताइक जण थावरो, तो पुतें
 धाई लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ १९ ॥ हार सहित एहने
 हये, देवी तुज पासें लो ॥ अ० ॥ सुखशानाशुं राख
 जो, वंचे आवासें लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २० ॥ राणी
 मलयाने तिहां, राखे मन खांते लो ॥ अ० ॥ चौथी
 प्रीजा खंमनी, ढाल नांखी कांते लो ॥ अ० ॥ दे० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपति कहे सुण नामिनी, पंच दिवसने अंत ॥
 हार रयण थणजाणित, लाघो थति चाहंत ॥ १ ॥
 कीथो महयज्ञ नंदने, प्राणातिक पण जेम ॥ सुख
 ॥ अंगें साहसी, पूछो दीसे तेम ॥ २ ॥ वचण सु

जी राणी हूँ, दुःख जारें दिलगार ॥ आतम १ ॥
रवे, नयण जारेंती नीर ॥ ३ ॥

॥ डाल पांचमी ॥ सासू काठा हे गहुं पी
साय, आपण जास्या हे मालवे, सोई
नारी जणे ॥ ए देशी ॥

॥ पीया वेठा हे कांई निचिंत, कान ढालीनें हे ई
लिपरें ॥ सुत नायो परें ॥ पीया विरहो हे अति खट
कंत, सुतनो हे दीपडा नीतरें ॥ सु० ॥ १ ॥ पीया
मुलथी हे रहुं न जाय, लंजा दीहा किम नीगमुं ॥
सु० ॥ पीया रयणि हे चैरणी थाय, नोंद गई शुनी
जमुं ॥ सु० ॥ २ ॥ पीया बाळुं हे नवलख हार, पु
त्र रतन जेहथी गम्यो ॥ सु० ॥ पीया जेई हे रतन
उदार, पाहाण कारज थागम्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ पीया
दोळ्युं हे सरस पीपूर, हार उदकने कारणें ॥ सु० ॥
पीया कापी हे सुरतरु रुंख, बाव्यो धंतुरो वारणे ॥
सु० ॥ ४ ॥ पीया जीवुं हे हूं हवे केम, पुत्र रहित
दोनागिणी ॥ सु० ॥ पीया गिरि हे कंभावीश जेम,
निवृत्त होई जीवित जणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रीया वारी
हे में समजाय, पहेंलां पण तुजनें घणुं ॥ सु० ॥ प्री
या जेहेणुं हे पुण्य पताय, हार परें सुत आपणुं ॥

सु० ॥ ६ ॥ प्रीया बचनें हे ईम थासास, पुत्र विगो
 दी हे गोरीने ॥ सु० ॥ प्रीया आब्यो हे निज थावा
 स, मन वींध्युं दुःख कोरीने ॥ सु० ॥ ७ ॥ प्रीया पो
 होता हे निज निज यान, लोक जखां अचरिज चिते
 ॥ सु० ॥ प्रीया साले हे साल समान, नृपराणीने वि
 रह ते ॥ सु० ॥ ८ ॥ प्रीया बोझो हे तपता दीत, रा
 ति विहाणी दोहिजे ॥ सु० ॥ प्रीया जाणे हे दुःख
 जगदीश, के जस बीते ते कजे ॥ सु० ॥ ९ ॥ प्रीया
 आया हे जन परनात, कुमर खबर पाम्या नहीं ॥
 सु० ॥ प्रीया चित्तमां हे अति अकुलाय, दंपती चा
 ल्यां गिरि वही ॥ सु० ॥ १० ॥ प्रीया पडवा हे घाली
 हाम, नृप राणी वंवां धसे ॥ सु० ॥ प्रीया सासें हे
 जरीयां ताम, पुरुष केशक आब्या तिसें ॥ सु० ॥
 ॥ ११ ॥ प्रीया नृपनें हे ते कहे एम, गोला तट वड
 माजियें ॥ सुत पायो वडे ॥ प्रीया टांग्यो हे वागु
 ली जेम, मह्यज दीतो गोवालीये ॥ (कनालिये)
 सु० ॥ १२ ॥ प्रीया बांध्यो हे जे लोनसार, चोर अ
 ने मुख जिण वडे ॥ सु० ॥ प्रीया जीडये हे माज
 र, तुम नंदन तिहां तडफडे ॥ सु० ॥ प्री
 जाण्यो हे नहीं परमायी ॥

सु० ॥ प्रीया सुणीने हे इम नरनाथ, वचन अमृत
 करी चाखीपुं ॥ सु० ॥ १४ ॥ प्रीया पाम्यो हे विस्म
 य हरे, समकाले ते राजवी ॥ सु० ॥ प्रीया बांध्यो
 हे मन वरकरे, मरवा इष्टा नाजवी ॥ सु० ॥ १५ ॥
 प्रीया सुतनां हे दरिण चाहि. चाल्यो नृप वढ सनसु
 खें ॥ सु० ॥ प्रीया साथें हे मलया उमाह, चाली प्री
 तमनी रुखें ॥ सु० ॥ १६ ॥ प्रीया श्याया हे वढतरु
 पास, नृपराणी मलया मली ॥ सु० ॥ प्रीया दीगो
 हे उंचो आकाश, टांग्यो न शके सलसली ॥ सु० ॥
 १७ ॥ प्रीया करशे हे सुत संनाल, नयनी विधि नृ
 प आगमी ॥ सु० ॥ प्रीया त्रीजा हे खंमनी ढाज, फां
 तें कही ए पांचमी ॥ सु० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नपणें श्रांतुं नाखतो, पूढे सुतनें नूप ॥ लेखन
 निपट कृतांतनो, ए तुज कवण सरूप ॥ १ ॥ लोन
 सार टांग्यो घडे, तुं पण तिम तस कूज ॥ देखीने तु
 ज इर्दशा, गयो सुदि हुं जूल ॥ २ ॥ धिग मुज चल
 जीवित कला, प्रभुता थई आकाज ॥ जेह ठते तें थ
 नुनवी, दोहिजिम दुःख समाज ॥ ३ ॥ इम कही तेज्यो
 वर्धकी, वेदावी वढ माल ॥ यतनें सुतने जीवतो,

फाटे नृप करुणाल ॥ ४ ॥ वचन हीण पीडित तनु,
 गीजे शीतल वाय ॥ चेत बली बेगो दुःख, बोलाव्यो
 तव माय ॥ ५ ॥

॥ टाल ठही ॥ मारगडामां जावुंजी,
 थावे प्यारो कान ॥ ए देशी ॥

माता सुतनें जाखेजी ॥ नंदनजी गुणवंत ॥ कहो
 मननी थनिलापेजी ॥ नं० ॥ किहा विचखो थम पाखे
 जी ॥ नं० ॥ बांध्यो किण वडसाखेजी ॥ नं० ॥ कहे
 सुख दुःख ते किहां किहां लाधुं, करते हार दिशुं ॥
 ॥ मा० ॥ क० ॥ कि० ॥ बा० ॥ १ ॥ निंददशा नि
 रधारीजी ॥ नं० ॥ निरखे नयण कषाडीजी ॥ नं० ॥
 वेठी थागल माडीजी ॥ नं० ॥ पूठें मलया लाडीजी
 ॥ नं० ॥ निजव्यतिकर ते कहेवा लागो, सुख थई
 नृपनंद ॥ नि० ॥ २ ॥ थाव्यो कर थावासेंजी ॥ नं० ॥
 गोख थई मुज पासेंजी ॥ नं० ॥ हुं बेगो तस वासें
 जी ॥ नं० ॥ ठाव्यो ते थाकार्जेजी ॥ नं० ॥ ईम इत्या
 दिक कदली वन थाव्या, तिहां सुधी कही वात ॥
 था० ॥ ३ ॥ रोती कोईक नारीजी ॥ नं० ॥ निमुणी
 में वनचारीजी ॥ नं० ॥ कदली वन बेसारीजी ॥ नं० ॥
 तुम वहुथर निरधारीजी ॥ नं० ॥ थाकंदने थनु

सारें तिहांची, चाल्यो हुं वन माहि ॥ रो० ॥ ४ ॥ आ
 गल जातें दीजीजी ॥ नं० ॥ करी पावक अंगीगीजी
 ॥ नं० ॥ सोवन पुरितो ईछोजी ॥ नं० ॥ साधे एक नर
 नेगीजी ॥ नं० ॥ ते कहे मुजने साहमो आवी, आ
 गीजी बहजाग ॥ आ० ॥ ५ ॥ मंत्र इहां आराधुंजी
 ॥ नं० ॥ सोवन पुरितो साधुजी ॥ नं० ॥ सहायक
 यि लाधुंजी ॥ नं० ॥ तेहयो कानूं बाधुंजी ॥ नं० ॥
 उत्तर साधक तुं माहरे, जिम होये कुशले तिरु ॥ नं०
 ॥ ६ ॥ मन उपगार नरीनेंजी ॥ नं० ॥ न शक्यो बोली
 करीनेंजी ॥ नं० ॥ वचन प्रमाण करीनेंजी ॥ नं० ॥ हाथें
 खड्ग धरीनेंजी ॥ नं० ॥ उपसाधक थई वेगो पासं, कर
 तो कोठी यतन ॥ म० ॥ ७ ॥ कहे योगी अवधारी
 जी ॥ नं० ॥ जिहां रोवे वे नारीजी ॥ नं० ॥ तिहां वे
 पढतरु नारीजी ॥ नं० ॥ करो कुमर दुशीपारी जी ॥
 नं० ॥ घोर सुलक्षण शाखें बांध्यो, ते आणो जई वेग
 ॥ क० ॥ ८ ॥ वचन सुणो हुं चाल्योजी ॥ नं० ॥ वध स्व
 दग फर जाल्योजी ॥ नं० ॥ वनें रही जय जाल्यो
 जी ॥ नं० ॥ बांध्यो घोर निहाल्योजी ॥ नं० ॥ चोर
 तले गिरले सर रोती, दोडो तिहां एकनारि ॥ व० ॥ ९ ॥
 में पुठपुं का रोवेजी ॥ नं० ॥ कां दुःख देह विगांवे

नकटो मरतो तितरेंजी ॥ नं० ॥ मुज खांधायी उत
 रेंजी ॥ तं० ॥ कहेवा लागी इतरेंजी ॥ नं० ॥ किए न
 गरें तुं विचरेजी ॥ नं० ॥ नाम थानादिक में ते था
 गें, नाख्युं सघलुं साच ॥ नं० ॥ २१ ॥ मुज कपर
 विश्वासीजी ॥ नं० ॥ बोली ते उध्वासीजी ॥ नं० ॥
 सुणो कुमर सुविलासीजी ॥ नं० ॥ मुज नाता रुजा
 सीजी ॥ नं० ॥ तव हुं पीउनुं इव्य गुफामां, देखा
 हीश तुम आय ॥ सु० ॥ २२ ॥ इम कही ते पर
 चालीजी ॥ नं० ॥ हुं चढोठ वड मालीजी ॥ नं० ॥
 ठोडघो घोर संजालीजी ॥ नं० ॥ नाख्यो नीचो जा
 लीजी ॥ नं० ॥ उतरि जोवं तो तिण साखें, बांध्यो
 तिमहीज दीठ ॥ इ० ॥ २३ ॥ में जाण्यो ततकाला
 जी ॥ नं० ॥ साधक देवी चालाजी ॥ नं० ॥ ठोडी
 मन ढकचालाजी ॥ नं० ॥ फिरि चढीयो वड माला
 जी ॥ नं० ॥ बंधन ठोडी केश ग्रहीनैं, कतरियो व
 ली हेठ ॥ में० ॥ २४ ॥ खंध चढावी लीधुंजी ॥ नं०
 ॥ अरुत शव परसीधुंजी ॥ नं० ॥ जई योगीनैं दीधुं
 जी ॥ नं० ॥ इम पर कारज कीधुंजी ॥ नं० ॥ ब्रजि
 खंमें ढाल ए ठछी, कांतें कही रस रेल ॥ खं० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ चरित्र छुणो चित्तमात्रमात्र जसविहारी तेन चूरन
 अद्भुत जप आनंद दुःख, हास्य सोयरे वापूर ॥ १ ॥
 बली विगत महबल कहा मृतक तेह नवराइ ॥ चं
 दन रस चर्चित करी, थापुं मंमज ठाइ ॥ २ ॥ अ
 ग्निकुंभ दीवा घिहुं, राख्यो साधक पाल ॥ पद्मासन
 बेसी जप्यो, मंत्र तिणें ततकाल ॥ ३ ॥ मृतक तुरत
 नज बल्ले, पडे न पावक कुंभ ॥ खिन्न थयो जप
 ध्यानथी, साधक चिंता मंम ॥ ४ ॥ तेहवे शय गय
 णांगणें, बढयो करतो हास ॥ अवलंब्यो तिमहिज
 जई, बढशाखा अयकाश ॥ ५ ॥ चूको कां एक ध्या
 नमां, तेणें न सीधो मंत्र ॥ साधेगुं फिरि आवती, रा
 तें करीछुं तंत्र ॥ ६ ॥ लुझ बलें साधन तणी, थाजें
 बहेली तिछ ॥ रह्यो सुनग योगी कहे, उपगरवानी
 बुद्ध ॥ ७ ॥ वचन प्रमाणी हुं रह्यो, थई उपसाधक
 पात ॥ योगी मरतो मुजनें, बोल्यो एम प्रकाश ॥ ८ ॥
 ॥ ढाल सातमी ॥ न्हानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥
 ॥ उपसाधक जो तुं थयो रे, तो सधि याज्ञे काम
 ॥ नंदन रायना रे ॥ पण चोलो मुज चित्तमां रे, ए
 हवो एक इण वाम ॥ नं० ॥ १ ॥ मुज संगें जो वे-

शो रे, तुजने नृप जण वृंद ॥ नं० ॥ तो जई कहे
 शो जोलव्यो रे, अवधूतें तुम नंद ॥ नं० ॥ २ ॥ प्रा
 ण पिपाणुं माहरे रे, होशो अचिंत्युं आय ॥ नं० ॥
 तेमाटे तुम फेरबुं रे, कहोतो रूप बनाय ॥ नं० ॥ ३ ॥
 जाशो मां मुज पासथी रे, लखमीपुंज अनेय ॥
 नं० ॥ इम धारी मुखमां ठवी रे, कथन ग्रंथ में तेय ॥
 नं० ॥ ॥ ॥ ताममूली घसी योगीयें रे, मंत्री तिज
 क मुज कीध ॥ नं० ॥ तास प्रनावें हुं ययो रे, पद्मग
 विप आवीध ॥ नं० ॥ ५ ॥ मूकी मुज गिरि कंदरें रे,
 व्याप गयो कोइ काम ॥ नं० ॥ पवन जखी सुखमां रहूं
 रे, ठानो बिलने ठाम ॥ नं० ॥ ६ ॥ गिरियल जोता
 गारुडी रे, आध्या मुजनें हेर ॥ नं० ॥ मंत्र प्रयोगें व
 श करी रे, घटमां घाव्यो घेर ॥ नं० ॥ ७ ॥ यक्ष छु
 वनमां मूकीयो रे, कुंज करावी धीज ॥ नं० ॥ तुम
 आदेशें जे नरें रे, काढयो हुं विण खोज ॥ नं० ॥ ८
 ॥ तेहने तुरतज उजखी रे, काढी मुखयी द्वार ॥ नं०
 ॥ कंठें धखो तेहयी दुवो रे, ते नारी अस्तार ॥ नं० ॥
 ॥ ९ ॥ आराधी गिरि कंदरें रे, मूक्यो पाठो नाग ॥
 ॥ नं० ॥ इत्यादिक बीती कया रे, थइ तुम प्रत्यक्ष
 माग ॥ नं० ॥ १० ॥ नृप कहे ते किम हूउ रे, जो

ती नारी सांग ॥ नं० ॥ महवल नाखे तातने रे, शेष
 कथा एकांग ॥ नं० ॥ ११ ॥ जाती नारी पावले रे, गु
 टिका तिलक रचेय ॥ नं० ॥ नारी नर रूपे करी रे,
 मुज वस्त्रादिक देय ॥ नं० ॥ १२ ॥ ते फणधर हुं क
 र ग्रहो रे, धीज समय इणो बाल ॥ नं० ॥ नाल ति
 लक चाटुं चढी रे, में एहनुं ततकाल ॥ नं० ॥ १३ ॥
 नर फिटी नारी दुइ रे, ए परमारथ बात ॥ नं० ॥ नू
 प प्रमुख सहु रोजीया रे, सुणि अहुत थवदात ॥
 ॥ नं० ॥ १४ ॥ नूप कहे में थाचखुं रे, अणघटतुं प्र
 तिकूल ॥ नं० ॥ लोक कहे न मिटे लिखुं रे, जे सर
 जित विधि मूल ॥ नं० ॥ १५ ॥ राणी मजयाने कहे
 रे, बेसारी ठत्संग ॥ नं० ॥ कां न प्रकाश्यो थातमा रे,
 वत्से ते दुःख संग ॥ नं० ॥ १६ ॥ अथवा ते जा
 एयुं कयुं रे, यात न खाती पाड ॥ नं० ॥ विण थवत
 र जे नांखिये रे, न चढे तेह सिराड ॥ नं० ॥ १७ ॥
 दुःखमां मौन धरी रही रे, नांखि न एका टोक ॥ नं० ॥
 ए विरतत कही जनो रे, मानत नहिं को लोक ॥
 ॥ नं० ॥ १८ ॥ रूहुं दैवे कयुं दशे रे, पाम्यां दुःखनो
 पार ॥ नं० ॥ अम गुनहो खमजो हवे रे, सतियां कु
 ल शणमार ॥ नं० ॥ १९ ॥ ईम कहेती नृपनी प्रिया

रे, जे जीवितनी थाय ॥ नं० ॥ आनूपण मणि ते
हस्ती रे, आपे मलया हाथ ॥ नं० ॥ २० ॥ अजि रे
मे सातमी रे, ए थई अनुपम ढाल ॥ नं० ॥ कांति कहे
सुणतां सदा रे, लहिये मंगल माल ॥ नं० ॥ २१ ॥

॥ बोहा ॥

॥ तात कहे विपधर पणे, रहेता शैल अलंब ॥ का
रण गुं गुं अनुनय्यां, कहीपे ते अविजय ॥ १ ॥ पय
न नखत गिरि कंदरे, निर्गत दुठ दिनेश ॥ रजनी स
मय साधक धसी, आब्यो मुज ठहरा ॥ २ ॥ दिनक
र तरुना दुग्धधी, पस्थुं जाल मुज तेण ॥ देखी मूल
सरूप दृग, बोलाब्यो नेहेण ॥ ३ ॥ आबो कुमार क
ला निजा, करीये मंत्र विधान ॥ ईम कही पायक कुं
म तट, लाब्यो वे सनमान ॥ ४ ॥ साधक बचने ब
डपकी, थाणी दीवं शब फेरि ॥ येतो जपवा तेह तय,
हुं पण वेगो पेरि ॥ ५ ॥

॥ ढाल थावमी ॥ हरिदां सुकानी

साहेब मेरा वे ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम जाप जपे ते योगी, थाहति ये अवसाना
तिम तिम शब कपडी पडे, तडफडतुं रोप निदान ॥ ६ ॥
योगिणी थाई ये, थरिदां रीत जराई ये ॥ १ ॥

॥ ह० ॥ आधी रातिमा गगन विचाले, बागां ममरु
 नाक ॥ यीर बावन आगें घले, पाडंता पोढी हाक
 ॥ ह० ॥ १ ॥ अन्नयकी उडूनट उतरती, शक्ति क
 हे रे पीठ ॥ मृतक अशुद्ध आणी किष्पुं हूं, तेढी कां
 नूपीठ ॥ ह० ॥ २ ॥ इम कहेती योगीनें साही, नाखे
 अगनिनें कुंम ॥ नागपाशने बंधने मुज, वे कर बांध्या
 प्रचंद ॥ ह० ॥ ४ ॥ सुंदर रूप कुमार तेमाटे, मारी
 ले कुण पाप ॥ इम कहेती जन मारगें, विहुं पग
 यही कढी थाप ॥ ह० ॥ ५ ॥ वे शाखा विच हूं प
 न जीडी, उंचा पग शिर हेव ॥ टांगी मुजनें ए वडे,
 वढी गई लेती कुलेव ॥ ह० ॥ ६ ॥ शत्र ते तिमहिज
 वढी तिहांधी, बलगुं गुंमाले थाय ॥ पुरलोकें जोधुं
 चली, तिहां पाठी कोट फिराय ॥ ह० ॥ ७ ॥ लोक
 कहे दीसे वे बांधु तो, किम अशुचि ए कीध ॥ नृप कहे
 मुखमां एहने, नासा पल दोरो कुशुद्ध ॥ ह० ॥ ८ ॥
 लोक कहे इम कहिजतां राजा, जोबरावे जण पात ॥
 दीठो बलगी दांतमा, नासा तिण थायो वितात
 ॥ ह० ॥ ९ ॥ एमें साधकनें न जणाव्युं, कुमार करे इ
 न खेद ॥ नूप कहे जवितव्यनां, मंटीजे केम उमेद
 ॥ ह० ॥ १० ॥ नूप कहे केम करथी नूट्या, बांध्या वि

पधर पाश ॥ सुत कहे तेहनुं पुंठहुं, मुज मुखमां था
 व्युं उकास ॥ ह० ॥ ११ ॥ कोय जरि चाब्युं में तेहयो
 पीडयो पन्नग जोर ॥ नर्म थई हेगो पढयो, न चढपुं विर
 संत्रथी घोर ॥ ह० ॥ १२ ॥ दोय पहोर रखणीना काढया,
 दुःखमां में विललात ॥ संकट सहु टलियां हवे, मलतां
 क्रम योगें तात ॥ ह० ॥ १३ ॥ वचन कणुं सुरशक्ति
 मृतकें, ते मलियुं प्रत्यक्ष ॥ मुज विरतंत कह्यो सवे, तु
 म आगल पूरी पक्ष ॥ ह० ॥ १४ ॥ लोक प्रशंसे शिर
 धुणंतां, अहो हो अतुल बल वीर ॥ थोडा काल मांहे
 घणी, जल सांसयो पीड शरीर ॥ ह० ॥ १५ ॥ नावे वचन
 पथ मन नवि मावे, कहेतां पण जे बात ॥ ते संकट
 जलराशिनो, तारु एक तुंहिज तात ॥ ह० ॥ १६ ॥ अ
 हो साहस निर्णय पण माया, बुद्धि महोद्यम खास ॥
 उपगारक करुणापणुं, दृढता मति पुण्य प्रकाश ॥ ह०
 ॥ १७ ॥ नारि लहो लक्षण लाखीणी, मजियो अ
 मनें वेग ॥ लोक अनेक करे तिहां, इम वर्णन गुणमति
 जेग ॥ ह० ॥ १८ ॥ जूष कहे नंदन मंमल ते, देखाडो
 ठे कपांहि ॥ कुमार नृपति जण विंटीउं, देखाडे जईने
 त्यांहि ॥ ह० ॥ १९ ॥ दरखें लोक मझ्या उत्कर्ष, नि
 रखे पावक कुंम ॥ सोवन पुरिसो तिहां तिणें, दीगो

(१६९)

जलदलती दम ॥ ह० ॥ २० ॥ ठेका पण निशिमा
है नाथे, शीश विना जस अंग ॥ पुरसी तेह कटावोने,
जमर धखो नृप चंग ॥ ह० ॥ २१ ॥ सकुटुंबो निज
मंदिर आब्यो, रंग नखो नर नेत ॥ वस दिन रंग व
धामणां, परताब्यां मंगल हेत ॥ ह० ॥ २२ ॥ प्रोजा
खंमनी आठमी ढालें, जाग्या विरह वियोग ॥ कांति
विलय कहे पुण्यघी, लहियें मनवंचित नोग ॥ ह० ॥ २३ ॥

॥ बोहा ॥

॥ हवे नगर वन शोषतो, मजयकेतु मतिवंत ॥ पुहवी
ठाण नरिंदनें, वेगें थावी मिलंत ॥ १ ॥ वात प्रका
शी विगतथी, वर कन्यानी एण ॥ जगिनीपति जगिनी
बिहुं, मेलवियां नृपतेण ॥ २ ॥ कुशल प्रश्न पूर्वक सद्गु,
हरखित वेगें ठाण ॥ वरकन्यार्यें थापणुं, दाख्युं चरि
त्र बखाण ॥ ३ ॥ मजयकेतु शिर धूणतो, पामे मन
थचरिऊ ॥ नवली वार्ते केदुं, चित्त न चित्र जरिऊ
॥ ४ ॥ गोष्टि महारस सागरें, करता हर्षण केजि ॥
नूख तया निझा प्रमुख, न गिणे रसनें खेलि ॥ ५ ॥
मळण जोजन वखथी, सत्काखो नृपनंद ॥ बांध्यो
वेहेनी नेदनो, रहे तिहां स्वछंद ॥ ६ ॥ केताईक दि

चल तस हूं प्रिया, कनकावती इति नाम ॥ १ ॥ मोप
 रि फोप्यो महीपति, एक दिवस विण फाज ॥ तव दु
 रुठी नीकली, मूकी सकल समाज ॥ २ ॥ मख्यो वि
 देशी मुझाने, तरुणो एक व्यद्व ॥ तस संकेत सुनि
 गृहें, मजो राति हूं हद्व ॥ ३ ॥ देखाडी नय चोरनो,
 बखादिक मुज लोध ॥ मुत्तावलीनें कंचुकी, थाप हथ
 तिणें कीध ॥ ४ ॥ शेष जणस साथें मुने, घाली पेटी
 माहिं ॥ कपट करी ते धूरतें, दीड पत्र नटकाहिं ॥
 ५ ॥ संकेती बीजो तिहां, थाव्यो धूरत दोडी ॥
 बिहुं वषाडी मंजूपडी, नाखी नदीयें रोडी ॥ ६ ॥ अ
 यजंवन विण पवनथी, खाती जोज अढेह ॥ गुहिर
 नदी गोला जळें, तरी तरी जेम तेह ॥ ७ ॥ कुमर क
 हे किणो कारणें, नाखी तुजनें नीर ॥ अथवा तेहने
 उलखे, जो वना होय तीर ॥ ८ ॥ तेह कहे कारण
 किशुं, हता अजाण्या धूत ॥ निकारण वैरी इत्या, गया
 करी करतूत ॥ ९ ॥ कुमर कहे हो धूरतें, कीधो अनुचित
 खेज ॥ शीश धूणंतो आगलें, पूढे कथा अकेल ॥ १० ॥

॥ ढाल दशमी ॥ वेडले नार घणो ठे

राज, वातां केम करो ठो ॥ ए देशी ॥

॥ जलपूरें ते तरती पेटी, प्रात समय इहां थावी ॥

यह धनंजय जयन समीपें, गोला कठ ताया ॥ १ ॥
 साची बात कहां ठां राज, जे बीती ठे थममां ॥ तिलन
 र लूठ कहुं नहिं मोहन, मलताना संगममां ॥ सा
 चो ॥ १ ॥ आरुणी ॥ लोनसार चोरें जलमाथी, काढी
 नार गरिछी ॥ ताहुं नांजी जोतां मांदे, वख सहित
 हुं दीजी ॥ सा० ॥ २ ॥ गेल अलंब विषम कंदरमां,
 छेई गयो मुज ठाने ॥ इय सहित मंदिर पोताहुं, दे
 खाहुं बहुमानें ॥ सा० ॥ ३ ॥ नेहरसें मीजी मुज
 नीजी, तस संगें मन मोदें ॥ पोहोर दोष रही तिहां
 थी इणें पुर, आब्यो काज बिनोदें ॥ सा० ॥ ४ ॥ पा
 प बिहाथी नूपें साही, सांजे बडले बांध्यो ॥ पर्वत शि
 खर रही में जोतां, मोहन बिहंवन सांध्यो ॥ सा० ॥
 ॥ ५ ॥ राति समय गई पासें रहती, तिहां मजी हुं
 हुमने ॥ आगज बाव सकज जाणो ठो, ए बीत्युं ठे
 धमने ॥ सा० ॥ ६ ॥ आयो इय धणुं देखाहुं, इम
 सुणी महाबल कठे ॥ फणुं तातने तात कुमरछुं, आ
 व्यो त्यां तस पूवें ॥ सा० ॥ ७ ॥ वस्तु इती जे जे
 इनी तेहनें, दीधी सर्वे संचाली ॥ शेष इय छेई नर
 पति नगरें, आब्यो पाठो चाली ॥ सा० ॥ ८ ॥ धन
 थापी सत्कारी कनका, थावे कुमर निवासें ॥ लखमी

पुज सहित मलया ल्या, देखी बैठी पासैं ॥ सा० ॥ ९ ॥
 चमकी चित्त विचारे ए किम, इहां आवी जीवन्ती ॥ कू
 पथकी निकशी किम परणी, ए मुज वैरणी हुंती ॥
 ॥ सा० ॥ १० ॥ फरके थधर शके नहिं पूठी, रही
 वदन निरखन्ती ॥ रखे चरित्र मुज चावां पाड़े, मन
 मां इम बीहन्ती ॥ सा० ॥ ११ ॥ लग्यमीपुंज मनो
 हर महारो, लीधो तो जिण धूतें ॥ ए पापणीने आ
 णी दीधो, दीसे तेण कुपूतें ॥ सा० ॥ १२ ॥ जाणु न
 हों के लीधो इहुंणो, खेडी नवजो फंदो ॥ हवणां तो ए
 हिज मुज वैरी, कीधो इम दिल मंदो ॥ सा० ॥ १३ ॥
 कहे मलया माता ठो रुडां, एकाकी किम आव्यां ॥ कुश
 ल न दीसे नाक जणीकां, के कियो कमें संताव्यां ॥
 ॥ सा० ॥ १४ ॥ कुमर जणो पदमिणी मत पूठो, क
 हेणुं हुं तुम आगें ॥ दिन न स्वमे कारज ठे बहुजां, क
 देतां बेला लागे ॥ सा० ॥ १५ ॥ शीख करी नकटोनें
 आप्यो, शूने मंदिर पासैं ॥ मुख मीठी हियडामां धी
 ठी, वासी तिण आवासैं ॥ सा० ॥ १६ ॥ प्रति दिव
 सें मलया उपकंठें, आवे कनका रंगें ॥ थई विशवा
 विखवासिणी ते, नव नव कथा प्रसंगें ॥ सा० ॥
 १७ ॥ ठिइ निहाले मलया केरां, शोक समी निश

अवगुणं तो लागे कुललाज ॥ कीर्त अनुज्ञा
 जिम साधु जइ काज ॥ ७ ॥ नयणें आसू सींचती,
 खे मुख नीसास ॥ प्रीतम वहेला आवजो, वात
 म उदास ॥ ८ ॥ लेइ अनुमति कणे मनें, बांधी
 वेग ॥ पाठी मीटें निरखतो, चढ्यो जवनथी वेग ॥ ९ ॥
 ॥ ढाल अगीश्रारमी ॥ अब घर आवो रे
 रंगसार ढोलणा ॥ ए देशी ॥

॥ कनकवती मुखें मोठी रे धोठी, कपट महा विपवे
 लि ॥ अहनिशि जोवे रे ठज मलया तणुं ॥ अनुया
 थी बेसे रमे रे धोठी, वात करे मन मेल ॥ अह
 नि ॥ १ ॥ एकलडी जवनें रही रे धोठी, मुज नाग्यें
 ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठल केलवी रे धोठी,
 आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेठी मुख करमा
 सवी रे गोरी, करती मन उदवेग ॥ प्रमदा निहाली रे
 ऊरते लोयणां ॥ बेसे पामें आवीनें रे धोठी, पूढे इःख
 घरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेलवी
 धोठी, रीजावे रति आणि ॥ प्रम० ॥ दिवस गमावे
 रे गोरी, कनकाद्युं रसमाणि ॥ नवनव जांतें रे
 तेजणां ॥ ४ ॥ कहे मलया माता इहां रे जोजी
 विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमा चो

जलणी ॥ पयमां साकर जेजवी रे धीमी, चिंतयती ॥ ५ ॥
 न ताम ॥ वचन प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
 दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, कग्यो दिनकर प्रा
 त ॥ तव इम बोली रे करती घालणां ॥ तुज पूर्वे
 एक राहती रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नय नव
 नांतें रे करती खेलणां ॥ ६ ॥ में दीगी जर रातमां
 रे गोरी, काढी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
 ध्यादिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
 नावे रे मनमां घोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
 थई रे गोरी, टाळुं एहनुं गम ॥ जिम तुज नावे० ॥
 मजया मन जोलापणे रे गोरी, माने साळुं ताम ॥
 तव इम बोले रे करती घोलणां ॥ ८ ॥ जोहा दंत
 जलाववी रे गोरी, जे शीखवुं तुझ ॥ तव० ॥
 मया करी मुज कपरें रे जोली, करो उचिन जे
 शुळ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां घोलणां ॥ ९ ॥
 नगरीमां तेहवे समे रे धीमी, देखी मरगी ईति ॥ नव० ॥
 नूप कन्हे कनका गई रे धीमी, तेहने देइ प्रतीति ॥
 हस्य जहीनें रे कहे इम बोलाणां ॥ १० ॥ तुम ध्या
 ई एक वारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह० ॥
 तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो ये जोवित दान

अवगुणं, तो लागे कुजजाज ॥ दीउ अनुज्ञा सुंदरी,
 जिम साधुं लइ काज ॥ ७ ॥ नयणें आसू सींचती, ना
 खे मुख नीसास ॥ प्रीतम बहेजा आवजो, बोली ए
 म चदास ॥ ८ ॥ लेइ अनुमति कणें मनें, बांधी तरकस
 वेग ॥ पाठी मीटें निरखतो, चढ्यो जवनथी वेग ॥ ९ ॥

॥ ढाल अगीआग्मी ॥ अत्र घर आवो रे

रंगसार ढोलणा ॥ ए देगी ॥

॥ कनकयती मुखें मोठी रे धोठी, कपट महा विपवे
 लि ॥ अहनिशि जोवे रे ठज मजया तणुं ॥ अनुया
 यी बेसे रमे रे धोठी, वात करे मन मेज ॥ अह
 नि० ॥ १ ॥ एकलडी जवनें ग्ही रे धोठी, मुज नाग्यें
 ए नारि ॥ अ० ॥ चिंती इम ठज केजवी रे धोठी,
 आवी सदन मजारि ॥ अ० ॥ २ ॥ बेनी मुख करमा
 ठवी रे गोरी, करती मन चदवेग ॥ प्रमदा निहाजी रे
 ऊरते लोयणां ॥ येमे पामें आर्यानें रे धोठी, प्रेते ड ख
 धरी नेग ॥ प्रम० ॥ ३ ॥ अकथकथा कहे मेजवी रे
 धोठी, रीजावे गति आणि ॥ प्रम० ॥ दिनम गमाने
 रंगमा रे गोरी, कनकाकुं रसमाणि ॥ नवनय जानें रे
 करती खेजणां ॥ ४ ॥ कहे मजया माता इहां रे नांजी,
 रातें करो विश्राम ॥ जिम मुज नावे रे मनमां पो

लणां ॥ पयमां साकर जेजवी रे धीठी, चिंतयती म
 नं ताम ॥ वचनं प्रमाणी रे करे निशि गालणां ॥ ५ ॥
 दिन जिम रजनी नीर्गमे रे गोरी, कण्यो दिनकर प्रा
 तं ॥ तव इमं बोलती रे करती चालणां ॥ तुज पूर्वे
 एक राक्षसी रे गोरी, लागी ठे कम जात ॥ नय नय
 नांतें रे करती खेजणां ॥ ६ ॥ में दीठी जर रातमां
 रे गोरी, फाटी दूरें खेधि ॥ नव० ॥ जो तुं मुजनें
 आदिशे रें गोरी, तो नाखुं एहने वेधि ॥ जिम तुज
 नावे रे मनमां चोलणां ॥ ७ ॥ हुं पण ते सरखी
 यई रे गोरी, टाळुं एहठुं गम ॥ जिम तुज नाये० ॥
 मलया मन जोलापणे रे गोरी, माने साखुं ताम ॥
 तव इमं बोले रे करती चोलणां ॥ ८ ॥ जीहा दंत
 नलायवी रे गोरी, जे शीखवुं तुझ ॥ तय० ॥
 मया करो मुज कपरें रे जोली, फगे वचिन जे
 पुळ ॥ जिम मुज नावे रे मनमां चोलणां ॥ ९ ॥
 गरीमां तेहवे समे रे धीठी, देखी मरगी ईति ॥ नय० ॥
 घूप कन्हे कनका गई रे धीठी, तेहने देइ प्रतीति ॥
 रहस्य लहीनें रे कहे इमं बोलणां ॥ १० ॥ तुम आ
 गें एक बारता रे सामी, कहेवी ठे धरो कान ॥ रह० ॥
 तुज हितनी तेतो कहुं रे सामी, जो ये जोवित दा

॥ रह० ॥ ११ ॥ अजय हजो कहे राजीयो रं चोली
 कहेतां न कर संकोच ॥ जिम मुज नावे रे मनमां
 लणां ॥ जगमांहे तेहिज वाजहा रे नोजी, रेसां
 जो चोच ॥ जिम० ॥ १२ ॥ नेह कहे ए साहसी
 रे सामी, सुम बहूथर दीसंत ॥ नव० ॥ मुज बने
 नयि वीससो रे सामी, तो देखाहुं नत ॥ रह० ॥
 ॥ १३ ॥ रयणीमां रही वेगजा रे सामी, जो जो था
 ज थरिअ ॥ नव० ॥ रातें थई ए गह्वरी रे सामी
 साधे राक्षस मंत्र ॥ नव० ॥ १४ ॥ अंगणमां नावे
 हसो रे सामी, रमे नमे यज्ञगंत ॥ नव० ॥ दिसिदि
 सि नयणां फेरवे रे सामी, फेंकारी ३५ ॥ नव० ॥
 ॥ १५ ॥ फेंकारीथी छछुमे रे सामी, गुमां मगो रु
 छ ॥ बदशो जो जाई निरो रे सामी, हरा काई थ
 निह ॥ नव० ॥ १६ ॥ प्रातसमय सुनः क-द रे सा
 मी, करतां एदनें बंध ॥ जिम मुज नावे रे मनमां
 चोत्रां ॥ पहेंलां पण नृपनें बनो रे सामी, पूठयो
 कट निबंध ॥ रह० ॥ १७ ॥ एदरामां एदयी सुपुं रे
 सामी, कारण ए अजरज ॥ नव० ॥ तेदरी मन्त्र मन्त्र
 ॥ विन यन्त्रों गुनाज ॥

सामी, थाशे हे सकलंक ॥ नृपति० ॥ लोक कलंक
 न लागशो रे जोली, लागजो विपहर मंक ॥ नृप० ॥
 ॥ १९ ॥ रातें सर्व जणायशे रे जोली, बाहिर न जा
 खे वात ॥ सब इम बोली रे करती चालणा ॥ एव
 कथाहुं पारकी रे सामी, एहवी नही सुज धात ॥
 ॥ २० ॥ २० ॥ सतकारी नूपें तिका रे धीठी,
 पोहोती छंवन विचाल ॥ अहोनिशि जोती रे० ॥ त्री
 जे खंमै इग्यारमी रे मोठी, कातें कही ए ठाल ॥ नव
 नव नातें रे करती खेलणा ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ राक्षसनी विनता तणो, रजनीमां सजी साज ॥
 आबी मलयाने कहे, कनका कपट जिहाज ॥ १ ॥
 पुत्री तुं घरमां रहे, हुंतो बाहिर जाय ॥ हणी निशा
 घर नारिनें, आबीश बहेली धाय ॥ २ ॥ शिक्षा देई
 बाहिर गई, कूढ चरितनी कूप ॥ बख उतारे अंगथी,
 करवा रूप विरूप ॥ ३ ॥ विविध रंग वरणें करी, रंगे
 थाप शरीर ॥ ग्रहे ठमाडी बदनमां, बलबजती वे
 पीर ॥ ॥ ॥ रंममाल कंठें धरे, कर साहे करवाल ॥
 प्रत्यक्ष रूपें राक्षसी, थई खेले रोशाल ॥ ५ ॥ एहवे

ठाने रातिमां, थाव्यो जोवा नूप ॥ थपर समीप ग
हैं चढयो, निरखे छुट सरूप ॥ ६ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ होजी जुंवे जुंवे वर
सालो मेह, लशकर थायो दरिया
पाररो हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ होजी कामिणि करती नाच, देखे नृप ठाने रही
हो लाल ॥ होजी दीसे ठे ते साच, जे मुजनं कनका
पें कही हो लाल ॥ १ ॥ होजी नृप चिंतें चित्त एम,
कुजने दुपेश ए किछुं हो लाल ॥ होजी एहयो नहों
जण खेम, मुजने पण विरुडं किछुं हो लाल ॥ २ ॥
होजी करवी न पडे कचाट, पहेजी जां समजावीयें
हो लाल ॥ होजी तेह नणी वनमाहिं, एहने हवणी
हणवीयें हो लाल ॥ ३ ॥ होजी इम कहेतो नरनाथ,
कोपानलसुं परजव्यो हो लाल ॥ होजी तेडी सेवक
साथ, गुन पणें नणे जानव्यो हो लाल ॥ ४ ॥ होजी
मुज सुतरमणी एह, पापिणी मजपा सुंदरी हो ला
ल ॥ होजी रय घाटी वन ठेह, गुपत पणें हणजो
परी हो लाल ॥ ५ ॥ होजी करतां रातें काम, लोरु
जाणें गातही हो लाल ॥ होजी इम सुणी सुनट ठ
न, कठपा जीडी गातही हो लाल ॥ ६ ॥ होजी कर

लीधे करवाल, आवत सुनट निहालीनें होलाल ॥
 होजी जिह्वा ठे मलया वाल, कनका त्या गई चाली
 नें होलाल ॥ ७ ॥ होजी थरथरती विण सुज, जल
 फलती बोले इश्युं होलाल ॥ होजी नृप नट हणवा
 मुज, आवे ठे करवुं किश्युं होलाल ॥ ८ ॥ होजी तुज
 पासें हुं आन, नृप आदेश विना रही होलाल ॥ होजी
 तेमाटे महाराज, मुज ऊपर रुठा सही होलाल ॥ ९ ॥
 होजी क्यांहिक मुजने ठिपाड, जणनी मीट न ज्यां प
 डे होलाल ॥ होजी मन माने तिहां गाड, हाथ रखे
 कोइनो थने होलाल ॥ १० ॥ होजी मलयाने निर्देश,
 पेठी तेह मंजूपमां होलाल ॥ होजी रोती नागे वेश,
 बेसे माहे एकैगमां होलाल ॥ ११ ॥ होजी तुरतज
 तालुं दीध, अनय करी राखी तिका होलाल ॥ होजी
 आब्या सुनट प्रसिद्ध, करता रगत कनीनिका होलाल
 ॥ १२ ॥ होजी दीठी मलया तेण, बेठी रूप स्वभाव
 नें होलाल ॥ होजी ते कहे मरथी एण, बदल्यो सांग
 ऊटाकिनें होलाल ॥ १३ ॥ होजी फिटरे पापणी छ
 छ, जाणी तुं किम मारणे होलाल ॥ होजी लागी लो
 कां पुंठ, केटली सृष्टि संहारणे होलाल ॥ १४ ॥ होजी
 ईम कहीनें ग्रही वांदि, काढी रथ चाढी तिसें होला

ल ॥ होजी चाव्या थटवी राह, थापद जिहां वांका
 वसे होजाल ॥ १५ ॥ होजी करता थनादर इठ, दे
 खी मलया चिंतवे होजाल ॥ होजी दोसे काइक थ
 निष्ठ, इण सूले माहारे हवे होजाल ॥ १६ ॥ होजी
 हणवुं के वनयास, सुसरे निश्चय आदित्यो होजाल ॥
 होजी मुज अपराध प्रकाश, थणजाण्यो देख्यो कित्यो
 होजाल ॥ १७ ॥ होजी के मुज पूरव कर्म, उदित दु
 था फल थापवा होजाल ॥ होजी नहीं तो मांठा म
 र्म, वनी आवे किम एहवा होजाल ॥ १८ ॥ होजी
 कठिन थइ रे जीव, खमजे कीर्था थापण होजाल ॥
 होजी वारुण कर्म थतीव, ठूटे नहीं चारव्या विना हो
 लाल ॥ १९ ॥ होजी पूरव श्लोक संजारि, नणती
 नियति निहालिने होजाल ॥ होजी सूकी वन संचार,
 थाधुं पावुं जालनि होजाल ॥ २० ॥ होजी ठानी
 कनड पाहाड, विषम थलीमाहे धरी होजाल ॥ होजी
 प्रहसमे नीम निराड, थाव्या जण नगरें फरो होजाल
 ॥ २१ ॥ होजी प्रणमी नृपना पाय, वात सयल तिहां
 कही होजाल ॥ होजी मलया मंदिर थाय, नृपति
 इर करे वजी होजाल ॥ २२ ॥ होजी नाक रहित
 ॥ २३ ॥ नृप जोवरावी मंदिरें होजाल ॥ होजी दीवी

नहि किण वार, नूप नणे नारी खरी होलाल ॥ १३ ॥
 होजी धोजे खंम रसाल, ढाल कही ए धारमी होला
 ल ॥ होजी कांति विजय सुविनास, सुणजो ओता
 खलमी होलाल ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमर हवे दिन केटले, जींती तेह किरात ॥ ता
 त धरण आवी नम्यो, प्रिया विरह थकजात ॥ १ ॥
 मलया नवने संचरे, त्यां नृप साही पाण ॥ वीतक घ
 रित्र त्रिवा तणा, कहे सकल सुविनाण ॥ २ ॥ कु
 मर निसासो नाखतो, वे कर घसतो थाप ॥ गदगद
 फंठे फुंठ मन, करे एम छत्राप ॥ ३ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ नटीपाणीनी देशी ॥

॥ नूपतिनी काई कीधुं हो दुःख वीधुं मलया बाल
 ने, हाहा नूजो काहीं ॥ चित्तमां कां न विचार्यो हो
 नवि धार्यो अवसर थापणुं, प्रकृति पलटी प्राहीं
 ॥ नूप ॥ १ ॥ मुज आगम लगे नारी हो नवि धारी
 कामिनी धारीनें, कीधुं अनुचित कर्म ॥ जाला ज्युं चि
 त्त खटके हो थति नटके थग्रिसमा थइ, काम क
 र्यां विण मर्म ॥ नूप ॥ २ ॥ निर्माता ते नारी हो
 ठल नारी दाव रमी गई, जाणुं एहनां मूल ॥ जीव

रावो किहां दीसे हो पूठीजों कारण भूलथी, एहना
 एह कुसूल ॥ जू० ॥ ३ ॥ कुमर तणे कटु वयणें हो
 नृप वयणें श्याम पणुं धरी, मंद वचन कहे एम ॥
 जोवरावी नवि लाधी हो गई आधी रातें ते किहां
 कहो हवे कीजें केम ॥ जू० ॥ ४ ॥ कुमर सुणी नृ
 प वयणां हो जल नयणां पूरण नाखतो, इम कहे
 हाहा नाथ ॥ धूतारी गई नासी हो विशवासी सुज
 प्रमदा प्रत्यें, साचुं सहि नरनाथ ॥ जू० ॥ ५ ॥ धू
 तारीनैं वचणे हो कुल रयणें लंठन चाढीठं, गोत्र ठ
 मूळ्युं एण ॥ उलंजा इम वेतो हो नृपनंदन पोहोतो
 मंदिरें, अति पीडघो विरहेण ॥ जू० ॥ ६ ॥ वल्लभ
 सुतनैं पुर्वें हो नृप उगी आवे दूमणो, उघाडे घर ता
 ल ॥ इम कहे सुत में दीगी हो तुज ईगी दपिता रा
 द्दसी, रूपें करती चाल ॥ जू० ॥ ७ ॥ दोष नहिं को
 माहरो हो अवधारो नंदनजी इहां, दुई अपराधें दूम ॥
 बाहाली पण जे विणगी हो ते परगी दीजें त्रेदीनैं,
 बांहडली करी खंम ॥ जू० ॥ ८ ॥ कुमलाणा का म
 नमां हो मंदिरमां आवी आपणो, संजालो घर सा
 र ॥ अधमयकी जणहासो हो घर आय विणासो
 जाणीयें, उठा न सहे नार ॥ जू० ॥ ९ ॥ कुमर वि

भासे नूपति हो छुं कहे मलया राक्षसी, पीडे जणने
 केम ॥ सुपरें तेह जणाओ हो जो थाओ दरिण जीव
 तां, चिते बिरही एम ॥ नू० ॥ १० ॥ पय पाणीनो
 बहेरो हो थाओ मत चहेरो राजिया, धाउ काई अधी
 र ॥ इम कहि जोवा लागो हो जई वागो जिहां मं
 जूपडी, वषादे बल बीर ॥ नू० ॥ ११ ॥ दीठी तिहां
 विण नासा हो वसासा छेती राक्षसी, रूपे कामिनी
 एक ॥ झूकाणी दुःख नूखे हो तन लूखे दीन दया
 मणी, बख बिहूणी ठेक ॥ नू० ॥ १२ ॥ विस्मय
 कारी जारी हो ते नारी चरित्र निहालीनें, लोक रह्या
 थिरयंन ॥ कुमर पयंपे नृपनें हो जे दीठी रीठी रा
 क्षसी, तेहिज एह सदन ॥ नू० ॥ १३ ॥ खांची वा
 हेर काढी हो तिहां ताढी थामी मारथी, आप चरित
 कहे तेह ॥ नूपे कोपे निर्जुठी हो जणह थीकारे दृढी,
 काढी वेशा ठेह ॥ नू० ॥ १४ ॥ शोकाकुल बिरहाथी
 हो सुत हाथीनेहिं पासीउ, बेगो मौन धरंत ॥ मरवा
 ने थनिजाखे हो नवि चाखे थशन सुहामणा, है है
 मोह डरंत ॥ नू० ॥ १५ ॥ राजा परिजन राणी हो
 दुःख थाणी छुरे सामटां, सचिव घणा थकुजाय ॥
 चित्ता नागिणि नढोया हो पुरवासी पढीया संत्रमें,

सु० ॥ जा० ॥ सुखिणी। दुःखिणी प्राये रे हो सु० ॥
 परिवारके किहां एकली हो सु० ॥ ६ ॥ जो०
 ति तेडया तेह रेहो ॥ सु० ॥ वनमां जाणी सु०
 मूकी सुंदरी हो ॥ सु० ॥ जो० ॥ अजय बीडो तत
 नेह रेहो सु० ॥ आपीने पूठे मलया आशरी हो
 सु० ॥ ७ ॥ जो० ॥ कहो सेवक किणी रीत रेहो
 सु० ॥ माहरी आणायी मलया क्यां ठवी हो सु० ॥
 ॥ जो० ॥ ते कहे सा जय जीतरे हो सु० ॥ रोतीने मू
 की विकटाटवी हो सु० ॥ ८ ॥ जो० ॥ निरखी एहवा
 चिन्ह रेहो सु० ॥ अम मन जास्युं एहनें राक्षसी हो
 सु० ॥ जो० ॥ नृपतिमन निर्विघ्न रेहो सु० ॥ कुणही
 व्यामोहो खेलें साहसी हो सु० ॥ ९ ॥ जो० ॥ स्त्री
 हत्या महापाप रेहो सु० ॥ तिमही कुंण लेशे हत्या
 गाननी हो सु० ॥ जो० ॥ नहीं हणायें इहां आप रे
 हो सु० ॥ करणी ए नहीं ठे रुडा जाननी हो सु० ॥
 ॥ १० ॥ जो० ॥ स्वातिगिरितें ठेव रेहो सु० ॥ पडती
 आखडती जिम नावे बली हो सु० ॥ जो० ॥ एकलडी
 स्वयमेव रेहो सु० ॥ मरगो रडवडती रखडती थाफली
 हो सु० ॥ ११ ॥ जो० ॥ इम मन धारी बाल रेहो सु० ॥
 रोती वनमहिं मूकी जीवती हो सु० ॥ जो० ॥ थावी

नाखुं थाल रहेहो सु० ॥ जयंथी तुम थागें कही थ
 वती वती हो सु० ॥ १२ ॥ जो० ॥ नागी मुज थोजे
 ह रहेहो सु० ॥ सुहदे ते करुणा रुद्धें संमही हो सु० ॥
 ॥ जो० ॥ विणगी मुज मति ठेह रे हो सु० ॥ त्रागी ते
 पैगी नड होयदे वही हो सु० ॥ १३ ॥ जो० ॥ नृ
 प निदे इम थाप रहेहो सु० ॥ जणनें परशंते पुरजन
 देखतां हो सु० ॥ जो० ॥ परिघल चित्त समाप रहेहो
 सु० ॥ उत्तम जोशीने प्रणमे पेखतां हो सु० ॥ १४ ॥
 ॥ जो० ॥ कुमार कहे तुज वयण रहेहो सु० ॥ मलियुं ते
 साहुं अनुसारें तकी हो सु० ॥ जो० ॥ शोधो वाला र
 यण रे हो सु० ॥ एहेलें खोयुं ते निज हाथायकी
 हो सु० ॥ १५ ॥ जो० ॥ त्रीजे खंमैं ढाल रहेहो सु० ॥
 उपरें ए नाखी रूढी चौदमी हो सु० ॥ जो० ॥ कांति
 वचन सुरसाज रे हो सु० ॥ सुणतानें लागे सरस सुधा
 तमी हो सु० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमार नणे मलया तणा, जनक नणी थवदात ॥ क
 हेवा चर चंझावती, पूरियें प्रेपो तात ॥ १ ॥ वीरधवल
 पण थागमी, करशे पुत्री शोध ॥ तिहां कदापि जो
 पामीयें, तो मुज पुण्य प्रबोध ॥ २ ॥ करी प्रमाण

नुज नवि दीसे, गुं कीधुं जगदीशें हे ॥ स० ॥ कुमर गया
 जोवा दयिताने, इम कहे पीउ प्रमदानें हे ॥ स० ॥
 ॥ १४ ॥ लेहेशे आपद दुःख किम सहेशे, पग पालो कि
 म वहेशे हे ॥ स० ॥ नूमि शयन करशे किम बाजो,
 नंदन अति सुकुमालो हे ॥ स० ॥ १५ ॥ वधू सहि
 त सुत सुखहुं जोत्यां, तहीयें कृतारथ होत्यां हे ॥
 ॥ स० ॥ मात पिता इम चिंता दाहें, दोहिले क्वित
 निवाहे हे ॥ स० ॥ १६ ॥ नूख गई सुख निडा या
 की, नृप नंदन एकाकी हे ॥ स० ॥ गामागर पुर क
 रत प्रवेशा, निरखे देश विदेशा हे ॥ स० ॥ १७ ॥ श्री
 पंचासर पास प्रसादें, ज्ञान कथा संवादें हे ॥ स० ॥
 पन्नरमी मीठी रसनाला, पूरण कीधी ढाजा हे ॥ स० ॥
 ॥ १८ ॥ पूरण त्रीजो खंम वखाण्यो, मलय चरित्र
 थी आण्यो हे ॥ स० ॥ गलया सरस कथा इम ना
 खी, कांति वचन श्रुत साखी हे ॥ स० ॥ १९ ॥

इति श्री ज्ञानरत्नोपाख्यानापरनामनि श्रीमलयसुंद
 रीचरित्रे पंमित श्री कांतिकिजयगणिविरचिते प्राकृत
 प्रबंधे मलयसुंदरी श्वसुराजसमागमनामा तृतीयः
 संपूर्णः ॥ ३ ॥

। अथ श्रीचतुर्ग्रन्थं प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

॥ स्वस्ति श्री मोहनजता, वान वधारण मेह ॥ जि
न सज्जु शारद तणा, नमुं चरण सतनेह ॥ १ ॥ सु
एता मलयानी कथा, टले व्यथानी कोडि ॥ कहेना
जस मन अन्यथा, वृथा तेह पछु जोडि ॥ २ ॥ म
लय कथा वचितारथा, करे व्यथानो ठेह ॥ कथे
विने विकथान्यथा, वृथा यथा स स तेह ॥ ३ ॥ ग्रीजो
खंम कह्यो इहा, तरस वचन रस कुंम ॥ वृथाहिं आ
वर करी, कहेछुं घोषो खंम ॥ ४ ॥ दुवे महाबल या
जही, भूकी निज वन ठोर ॥ कल कविन थापद त
णा, सुखे नव्य अतिधोर ॥ ५ ॥ थरथगती माती
हिये, जारती आंसू नयण ॥ आरदती पटनी कंद,
विरहाला ईम वपण ॥ ६ ॥

॥ टाल पहेली ॥ अम्मा मोरो अम्माहि, अम्मा
मोरी पाणीठा गईती सलाय हे, हे मारुटे
मेहेयाती मेरा ताणीया ॥ ए देशी ॥

॥ अम्मा मोरो अम्मा हे, सुसरे न पूठरो सुज
को पंक हे, हे कोपेनें कजकजिपो राणो मोपरे हे

ना सेवक मेजी ते गया हे ॥ अ० ॥ कहिये को आग
 ल दुःख मुक्त हे, हे विण अपराधे नृप धीरा यथा हे
 ॥ १४ ॥ अ० ॥ जाउं इहांथी कथां हवे नाथ हे, हे
 पीयरहुंनै अलखुं वैरी सासरो हे ॥ अ० ॥ पडिया
 दुःखयी साही हाथ हे, हे राखे ते नवि दीसे कोई इ
 हां आशरो हे ॥ १५ ॥ अ० ॥ सुतरानीकुं पलटी बु
 धि हे, हे पठतावो हवे पाशे अहथी आगली हे ॥
 ॥ अ० ॥ पीउडे लीधी नहिं कोई सुखि हे, हे निगमे
 किम दाहाडा मो पाखे वजी हे ॥ १६ ॥ अ० ॥ जनमी
 कां हुं न मुई काई हे, हे दुःखडामा नवि पडती इणवेजा
 इहां हे ॥ अ० ॥ विजये मजवुं गोरी त्याहिं हे, हे रां
 नारे चित्त धारे श्लोक जणी तिहां हे ॥ १७ ॥ अ० ॥
 अटवीमें प्रगटी पीडा पेट हे, हे बालायें त्यां सुन प्रस
 थ्यो नजो हे ॥ अ० ॥ रविनो ताजो तेज समेट हे, हे
 अचतरीयो सुखरीयो पृथ्वें कजजो हे ॥ १८ ॥ अ० ॥ सु
 तनें खोजे उविनें माई हे, हे आपणयें तिहां थाप रति
 क्रिया करे हे ॥ अ० ॥ पनणो पुत्र यथावुं काई हे,
 पापिणी दु इण वेजा तुजनै आवरे हे ॥ १९ ॥ अ० ॥
 सुतवुं सुखहुं जोनी मात हे, हे दरसैं ने तिम परक
 वन देखी करी हे ॥ अ० ॥ रजनी बीतो यपो परना

त हे, हे कभीनै नावाने नदीयें वतरी हे ॥ २० ॥
 ॥ अ० ॥ निर्मेज जलमा न्हाई ताम हे, हे पावन
 यल्ले बेठी वाला काठडे हे ॥ अ० ॥ समरी गुरुनें अ
 रिहंत नाम हे, हे संतोपे निज आतम वनफल मीठडे
 हे ॥ २१ ॥ अ० ॥ ठानी वन कुंजें पाले वाल हे, हे
 दीपडलें हेजासे लालें गद्द गद्दी हे ॥ अ० ॥ चोथा
 खमनी पहेली ढाल हे, हे कातें ईम जलि जातें
 पनणी कमही हे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंथें बहेतो ते समे, सारथपति बजसतार ॥ आची
 नदीयें कतखो, बांटयो बहु परिवार ॥ १ ॥ अचल
 घनातां पायरी, नवल किनातां तांणि ॥ मेरा दीधा
 महकता, कारुजणें जलवाण ॥ २ ॥ जल वृण
 इंधण कारणें, पसखा जन वनमाहीं ॥ सारथपति
 पण संचरे, तनु चिंतायें न्याहीं ॥ ३ ॥ संचरतो वन
 कुंजमां, पोहोतो मजया ताम ॥ रुदन सुणी वालक
 तणुं, निरखे विस्मय पाम ॥ ४ ॥ वाल सहित वाला
 तिहां, देखी चिंते एम ॥ रूप अपूरव लवणिमा, व
 सती तरुण इहां केम ॥ ५ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ आवू मन लायुं ॥ ए देशी ॥
 ॥ सारथरति पूजे हसी, एकलडी कुंण आर्ही रे ॥
 गोरी कहे साचुं ॥ उत्तम कुल संजव प्रत्ये, कहे आकृति
 सुज प्रार्ही रे ॥ गो० ॥ १ ॥ मूकी इहां किणे अपह
 री, के रीशाणी तुं आप रे ॥ गो० ॥ के कोइ इष्ट
 वियोगधी, कीधो तें वन व्याप रे ॥ गो० ॥ २ ॥ पु
 त्र प्रसव ताहरे इहां, दोसे थयो गुणमेह रे ॥ गो० ॥
 वनमाहिं बीहतो नथी, कहे सुंदरी ससनेह रे ॥ गो० ॥
 ॥ ३ ॥ धनवंतो व्यवहारीयो, नामें हुं वलसार रे
 ॥ गो० ॥ सागरतिलक पुरें वसुं, पर द्वीपें व्यापार रे
 ॥ गो० ॥ ४ ॥ जलुं कसुं जगदीश्वरें, मेजवतां तुं
 आज रे ॥ गो० ॥ मुज मेरे आयो वही, मूकी मननी
 लाज रे ॥ गो० ॥ ५ ॥ वचन सुणी सा चितवे, ए न
 र चपल पतंग रे ॥ गो० ॥ मातो धन यौवन मर्दे,
 करशे शीज विजंग रे ॥ गो० ॥ ६ ॥ कूडो उत्तर वा
 लतां, रदेशे शीज अखंन रे ॥ गो० ॥ इम धारी वो
 ली त्रिया, सुण गुणरण करंन रे ॥ गो० ॥ ७ ॥
 तनुजा हुं चंमालनी, कजहें कोपी आप रे ॥ गो० ॥
 आवी रही वनमां इहां, मूकी निज माय वाप रे ॥
 ॥ गो० ॥ ८ ॥ मेज मजे किम ते घटे, जिम दिन

रिजनी योग रे ॥ गो० ॥ देखी जोगी सारिखो, चहेरे
 सघना लोग रे ॥ गो० ॥ ए ॥ आवास पोहोचो तुम,
 नही आवुं निरपार रे ॥ गो० ॥ दुःखियो मुज मा
 बापन, मलशुं जई इण बार रे ॥ गो० ॥ १० ॥ आ
 कारे इंगित गते, ए नही नीची जात रे ॥ गो० ॥
 कपट पर्ये उत्तर करे, कारण इहां न जणात रे ॥
 ॥ गो० ॥ ११ ॥ सार्थपति इम चितवी, बोझो वचन
 विचार रे ॥ गो० ॥ तुज चंमालपणुं कदे, नही
 जावुं सुण तार रे ॥ गो० ॥ १२ ॥ मुज आवास
 मानिनी, स्वेष्टार्ये रहो आय रे ॥ गो० ॥ तुज वचनें
 बांध्यो सदा, रहेणुं दुं मन लाय रे ॥ गो० ॥ १३ ॥
 इम कहेतो जडपी लीये, अंकथकी तस बाल रे ॥
 ॥ गो० ॥ तस्कर जिम चाह्यो धसी, आवास ततका
 ल रे ॥ गो० ॥ १४ ॥ शीत विखंमन जपथकी, तै
 थई कार्यविमूढ रे ॥ गो० ॥ तोपण ते पुंते चली, नव
 न नेहारूढ रे ॥ गो० ॥ १५ ॥ हरख वचन बोलावतो,
 बालाने बलसार रे ॥ गो० ॥ सुत निज वसनें गोष
 बी, पैतो जई आगार रे ॥ गो० ॥ १६ ॥ दुःख कर
 ती ठाने ठवी, आसासें देई बाल रे ॥ गो० ॥ दासी
 एक प्रियंवदा, थापी करण संजाल रे ॥ गो० ॥ १७ ॥

अंबर नूपण जोजनां, थापें दाखी प्रीति रे ॥ गो०॥
 जांखे नहिं कडबुं मुखें, उपावण प्रतीति रे ॥ गो०॥
 ॥ १८ ॥ नाम पूठाव्युं अन्यदा, बलसारें करी शान रे
 ॥ गो० ॥ हलुयें सा कहे मादरूं, मलयसुंदरी थनि
 धान रे ॥ गो०॥ १९॥ व्यवहारो इम चिंतवे, मम कहे
 ए स्व चरित्र रे ॥ गो० ॥ पण नामें करी जाणीव,
 कुल एहनुं सुपवित्र रे ॥ गो०॥ २० ॥ चाढ्यो तिहा
 थी वाणीयो, करतो पंचें मुकाम रे ॥ गो० ॥ उदधि
 तिलक पुर आपणें, पोहोतो कुशलें ताम रे ॥ गो०॥ २१ ॥
 पुत्र सहित ठानी गृहें, राखी महिला तेम रे ॥ गो०॥
 दासी एक विना कहे, जाणी न पडे जेम रे ॥ गो०॥
 ॥ २२ ॥ एक समय मलया प्रत्यें, नितुर इम पजण
 त रे ॥ गो० ॥ नाथ पणे मुजनें हवे, थावर तुं गुण
 वंत रे ॥ गो० ॥ २३ ॥ मुज संपदनी सामिनी, या
 तां न कर विचार रे ॥ गो० ॥ सपरिवार हुं ताहरो,
 रहेणुं थाणाकार रे ॥ गो०॥ २४॥ पुत्र नहिं को मा
 हरे, ते ठामें तुज पुत्र रे ॥ गो० ॥ थाशें जय जय
 मालिका, वधशे इम घरसूत्र रे ॥ गो० ॥ २५ ॥ व
 चन सुणी कामांधनां, बोली मलया मुख रे ॥ गो०॥
 कुलवंतानें नवि घटे, करवुं लोक विरुद्ध रे ॥ गो०॥

॥ २६ ॥ जाजो सर्वस आपथी, पठजो पण ए पि
 न रे ॥ गो० ॥ चंडकिरण सम कजजुं, रहेजो शीत
 अखंभ रे ॥ गो० ॥ २७ ॥ चाखो बहुल प्रकार
 थी, नाख्यो बचन निठेठ रे ॥ गो० ॥ रह्यो अयोलो
 बापहो, न करे चलती जेठ रे ॥ गो० ॥ २८ ॥ रोष
 रुण घर बारणें, ये तालक सुत लेय रे ॥ गो० ॥ प्रि-
 यसुंदरी निजे नारिनें, पुत्र पणो ते देय रे ॥ गो० ॥
 ॥ २९ ॥ कहे सुंदरी ए पामोठ, बालक बनिका मां
 हि रे ॥ गो० ॥ गुण रूपें तेजें नखो, रह्यो लक्षण अ
 चगाहि रे ॥ गो० ॥ ३० ॥ व्यनिचारिणी को मारीयें,
 नाख्यो एह प्रघन रे ॥ गो० ॥ पुत्र रहित आपण
 घरे, होजो पुत्र रतन रे ॥ गो० ॥ ३१ ॥ ते बालकनें
 आपणा, नाम तणे एक देश रे ॥ गो० ॥ नामें बल
 इति थापना, कीधी निज उद्देश रे ॥ गो० ॥ ३२ ॥
 राखी धाइ अनेकधा, करवा पोढो बाल रे ॥ गो० ॥
 बीजी चोया खंमनी, कांतें पनणी ढाल रे ॥ गो० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ व्यवहारी हवे एकदा, पूरे प्रचल जिहाज ॥ परं दीपें
 चालण तणा, करे सजाइ काज ॥ १ ॥ देइ शीखामण
 नारिनें, पूठी स्वजन कुटुंब ॥ ठानी मजया जोरथी,

छोड़ चाओ अविज्रंभ ॥ २ ॥ साजित पूर्व जहाजमां,
जई बेतो गुन संच ॥ सप्रपंच कारुक जनें, लीयो नां
गर खंच ॥ ३ ॥

॥ टाल ब्रीजी ॥ ईसर आंवा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ प्रवहण पूखो पाधरो रे, चारु पवननें टेग ॥ जल
निधिमां जल मारगें रे, बहेतो तीरनें वेग ॥ १ ॥ धमकीनें
घात्ते बाबर कूल ॥ हवे करशुं केहो खूल ॥ ध० ॥ ईम चिं
ते सा सुधि जूल ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ परदेशें मुज वे
चशे रे, के देशे बूमाडी ॥ के कुमरणथी मारशे रे, के
किहां देशे गाडि ॥ ध० ॥ २ ॥ हूणी इहां होजो हवे रे, पण
मुज तनुज वियोग ॥ संतापें कापे होयुं रे, जिम रोगी
हूय रोग ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीवन सुत सम ते त्रिया रे, गल
गलती गलनाल ॥ पूठे प्रवहण नाथनें रे, बहेती आं
सु प्रणाल ॥ ध० ॥ ४ ॥ छुं कीथो मुज नंदनो रे, कहे
सत पुरुष यथार्थ ॥ ते कहे तो सुत मेलवुं रे, जो करे
मुज चरितार्थ ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाडियो निरखी आपमां
रे, बाघ नदीनो न्याय ॥ राखण शील सोहामणुं रे,
ते रंही मौन धराय ॥ ध० ॥ ६ ॥ अनुगुण पवनें प्रेरियुं
रे, बहेतुं प्रवहण थल ॥ कुशलें केते वासरें रे, आव्यो
बाबरकूल ॥ ध० ॥ ७ ॥ बंधारा छतराबिनें रे, आपी नृ

पुने दाण ॥ व्यवसायी व्यवहारीउ रे, वेचे विविध
 क्रियाण ॥ ध० ॥ ७ ॥ रंगारा होरा तणा रे, निर्दय
 कारू लोक ॥ ते कुल्ले मलया वेचिने रे, कीधा ओठे
 दोकड रोक ॥ ध० ॥ ८ ॥ त्या पण बहु कामी नरे
 रे, अद्भुत रूप निहालि ॥ काम महारस प्रारथी रे,
 तेपण न शक्या चालि ॥ ध० ॥ ९ ॥ निज स्वारथ
 अण पुंगते रे, रुछ डछ छुवाण ॥ निम्महेरा ठोले
 नसा रे, प्रगटे रुधिर वधाण ॥ ध० ॥ १० ॥ तास
 रुधिर जामे करी रे, रुमिज चढावे रंग ॥ मूर्च्छागत वा
 ला दुवे रे, नस नत पोड प्रसंग ॥ ध० ॥ ११ ॥ वि
 च विच अंतर गालीने रे, पोपे अशने अंग ॥ वलती
 महीरगतारथी रे, मांने रुधिरें रंग ॥ ध० ॥ १२ ॥
 घाला चिंते में कीधुं रे, गत नव पाप अथाग ॥ तेह
 थकी थावी पडधुं रे, मोटुं दुःख दोनाग ॥ ध० ॥
 ॥ १३ ॥ विफलाशा जूनारणी रे, कां सरजी किरता
 र ॥ देतां दुःख न दुवे दया रे, हे तुज सरजण हार
 ॥ ध० ॥ १४ ॥ नजरे थावी किदांथकी रे, एकज
 हुं जगमाहिं ॥ राम न हुंतुं सुस्कर्ने रे, तो थाव्यो मो
 पाहिं ॥ ध० ॥ १५ ॥ जनमी क्यां परणी किदा रे,
 थावी वली किण देश ॥ नाल लखुं वनी थावणे रे

सुपरें तेह सहैस ॥ ध० ॥ १७ ॥ दुःख पूरें अवना
 जरी रे, नाणो मनमां रोय ॥ एकांतें चिंतें तिहां रे, स्व
 चरित कर्मना दोष ॥ ध० ॥ १८ ॥ परहाकें ठाकें
 चढयो रे, ताके अनुचित दाव ॥ रस पाके थाके वही
 रे, अहो नव विषम बनाव ॥ ध० ॥ १९ ॥ घरडी तन
 लोही लीयुं रे, मूर्च्छाणी जूषीत ॥ खरडी रुधिरें एकदा
 रे, पडी नारंग शूनि दीत ॥ ध० ॥ २० ॥ पंखो नन
 थी ऊतरी रे, आशंकी पलपिंन ॥ चंच पुटें छेई क
 डियो रे, सहसा ते नारंग ॥ ध० ॥ २१ ॥ नन मांगें
 ज्यां संचरे रे, जलनिधि मांदि बिहंग ॥ तेहवे बीजो
 सामुहो रे, थाव्यो नारंग तुंग ॥ ध० ॥ २२ ॥ था
 मिय लोनें तेहगुं रे, मंमे जूझ तिकोई ॥ लडतां चंच
 थकी पडे रे, ठटके बाला सोई ॥ ध० ॥ २३ ॥ आसु
 रिका के खेचरी रे, के सुरकुमरी काय ॥ लखमी के
 कोई नोगिणी रे, जलमां रमवा जाय ॥ ध० ॥ २४ ॥
 के धारा हरिवज्जनी रे, के दामिणी दे दोट ॥ इम
 दूण सुरें दीगी तिहां रे, करी करी उंची कोटा ॥ ध० ॥
 ॥ २५ ॥ बाजा गुणमाला मुखें रे, गणती श्रीनवका
 र ॥ तरता गज मत्स्य उपरें रे, पडी सुरुत आधार
 ॥ ध० ॥ २६ ॥ चोये खंमे ए थई रे, निरुपम ब्रीजी

झाल ॥ पुण्यशकी लहियै सदा रे, कांति सुनस जप
माल ॥ ५० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंखी मुखथी हुं पढी, जखभुंते निरनाथ ॥ पण
जो ए जल बूढो, तो मदेशे कुंण हाथ ॥ १ ॥ मर
ण समय ईम चिंतयी, कारण अंत थनिष्ट ॥ आरा
धन हेतुक जपो, महार्पच परमेष्ट ॥ २ ॥ नमस्कार
पद सांजले, जख वंको करी गंध ॥ तस मुख निरखी
सूचवे, पूर्वागत संबंध ॥ ३ ॥ रहि कृष्णिक थिर चित्त
ते, दिशा एक निरधार ॥ तुरत तरंतो चाजियो, छुज
ज्यो विस्तार ॥ ४ ॥ थहो महोदयनी दिशा, हजी
अबे केतोक ॥ हाले नहों जल वहरनुं, चाजे ईम म
स्त ठोक ॥ ५ ॥ जल रमले कमला चढी, गजखंघे दी
संत ॥ के सुरपादप बेजडी, खजगिरि शिर विजसंत
॥ ६ ॥ संशय एम पमाढती, खगकुजने गजगेज ॥ चा
ले ठांटी जल कर्णो, जोती जलनिधि खेल ॥ ७ ॥ सुखें सुखें
प्रवहण परें, वहतो पंथ सविष्ट ॥ उदधितिज रु बेज
वले, कुशलें पोहोतो मष्ट ॥ ८ ॥

॥ ठाल चौथी ॥ चंदावलानी देशीमां ॥

॥ उदधितिलक पूरनो धणी रे, कंदर्प नामें

लो, तेह समय रयवाडीयें रे, चठिउ अरिनो,
 घटीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिडि दुमामे देवा
 डी मंको ॥ रंगे रमतो सायर कंठे, आष्यो वीटयो सु
 जट वल्लंठे ॥ जीराजेंड जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेज,
 पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे दुर्दंत, सीमाढा नांज
 वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहमो जख आवतो
 रे, जलमां नूपें दीगो ॥ निरख्यो जण सरिखो बली रे,
 वेगो तेहनी पीगो ॥ वेगो तेहनी करी अतवारी,
 लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक बाधुं जोवा
 सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए
 क जणे गरुडें चढ्यो रे, दीसे जिम गोविंदो ॥ एह
 कवण जल मारगें रे, आवे ठे स्वछंदो ॥ आवे ठे नृप
 नांखे मागो, कोलाहलथी जागो पागो ॥ मौन धरी नि
 रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही पार्ते ॥ जी० ॥
 ॥ ३ ॥ जणथी कांश्क वेगलो रे, आवे सायर तीर ॥
 शृंढादमें सुंदरी रे, वतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही
 बाहिर मोडें, सुंदर थल नूमि जई गोंडे ॥ प्रणमी व
 लियो पागो ठानो, बली बली जोतो मुख प्रमदानो ॥
 जी० ॥ ४ ॥ थयो अदृश्य महा जलें रे, रयणायरमां
 मीनो ॥ नूपति त्यां मलया कन्हे रे, आवे विस्मय ली

नो ॥ आते विस्मय देखी घाला, करपद आवे सकल
 चवाला ॥ लावण्य निधि ए कुण केम मीने, सूकी इम
 कसुं राय नगीने ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि
 नेहथी रे, मद्य गयो कुंण हेतो ॥ एहज महिला पूठतां
 रे, कहेजे सवि संकेतो ॥ कहेजे सवि निज बीतक वाते,
 मक चक्रना वण चूठ गाते ॥ ए अहिना ऐं सिंधुवगाहो,
 नमीय घणुं दीते जलमाही ॥ जी० ॥ ६ ॥ कोपवर्षे को
 वरीये रे, नाखी सायर पूरे ॥ के प्रवहण नागे पढी
 रे, मद्यवासे किहां दूरे ॥ मद्यवासे बेरी इहां आवी,
 म कहेतो नृप पूठे मनावी ॥ सागर तिलक पुरीनो
 ायक, कंइप नामे अबुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥
 निज बीतक कहेतां हवे रे, सुंदरी कांइ म बीहे ॥ कुं
 ए तु किम मीने घरी रे, आफलनी दुःख दीहे ॥ आ
 फलती आवी पुर एणे, हरे लही रमणी नृप वषणे ॥
 चिंते मुज सुत रहस्ये विपावी, राख्यो ठे ते पुरी हुं
 आवी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुरुत महाफल पाकिणुं रे, मु
 ज बीहा धनधनो ॥ पुण लता जागे हजो रे, जो ल
 हुं पुत्र रतनो ॥ जो लहुं पुत्र तणी छुदि इहांथी,
 तो चरित्रार्थ दोये दुःखमांथी ॥ पण कहीये कांइ
 एरी मेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो बैरी ॥ जी० ॥

लो, तेह समय रयवाढीयें रे, चढिउं अरिनो सालो॥
 चढीयो नृपकुल शाल निशंको, दिगिदि हुमामें देवा
 ढी मंको ॥ रंगें रमतो सायर कंठें, थाव्यो बीटयो सु
 नट उछंते ॥ जीराजेंड जीरे ॥ निरखे जलनिधि खेज,
 पनोतो राजवी रे ॥ मूक्या जेणे दुर्दैत, सीमाढा नांज
 वी रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पुर साहमो जख आवतो
 रे, जलमां नूपें दीगो ॥ निरख्यो जण सरिखो वजी रे,
 बेगो तेहनी पीगो ॥ बेगो तेहनी करी अतवारी,
 लोक कहे ए नर के नारी ॥ कौतुक बाधुं जोवा
 सारू, मलया माणस खांते वारू ॥ जी० ॥ २ ॥ ए
 क जणो गरुडें चढयो रे, दीते जिम गोविंदो ॥ एह
 कवण जल मारगें रे, थावे ठे स्वयंदो ॥ थावे ठे नृप
 नांखे मागो, कोलाहलथी जाशे पागो ॥ मौन धरी नि
 रखो रही घाटें, जोवे जण ठाना रही घाटें ॥ जी० ॥
 ॥ ३ ॥ जणथी कांश्क वेगजो रे, थावे सायर तीर ॥
 सुंढावंमें सुंदरी रे, उतारे ग्रही धीर ॥ उतारि ग्रही
 बाहिर मोडें, सुंदर थल नूनि जई गोंडे ॥ प्रणमी व
 जियो पागो ठानो, वली वली जोतो सुख प्रमदानो॥
 जी० ॥ ४ ॥ थपो अदृश्य महा जखें रे, रयणायरमा
 मीनो ॥ नृपति त्यां मलया कन्हे रे, थावे विस्मय ली

नो ॥ आये विस्मय देखी घाला, करपद आरै सकल
 चंचाला ॥ लावण्य निधि ए कृण केम मीने, मूकी इम
 गरु राय नगीने ॥ जी० ॥ ५ ॥ जोतो फिरि फिरि
 नैहथी रे, मधु मयो कुंण हेतो ॥ एहज महिजा पूठता
 रे, कहेंगे सवि संकेतो ॥ कहेंगे सवि निज बीतक बातें,
 नक्र घक्रना ग्रण जूठ गातें ॥ ए अहिनाशें सिंधुवगाहो,
 नमीय धणुं दीसे जलमाही ॥ जी० ॥ ६ ॥ कोपयशें को
 वयरीयें रे, नाखी सायर पूरें ॥ के प्रवदण जागे पढी
 रे, मधुवासे किहां दूरें ॥ मधुवासें घेवी इहा थावी,
 इम कहेंतो नृप पूठे मनावी ॥ सागर तिलकं पुरीनो
 नायक, कंडप नामें श्रुं खल घायक ॥ जी० ॥ ७ ॥
 निज बीतक कहेंतां हवे रे, सुंदरी काइं म बीदे ॥ कुं
 ण तु किम मीने धरी रे, आफलनी दुःख दीहें ॥ था
 फलती थावी पुर एणें, हर्ष लही रमणी नृप वपणें ॥
 चिंते मुज सुत रहस्यें ठिपावी, राख्यो ठे ते पुरी हुं
 थावी ॥ जी० ॥ ८ ॥ सुरुत महाफल पाकिपुं रे, मु
 ज दीहा धनधनो ॥ पुण लता जागे हजी रे, जो ल
 हुं पुत्र रतनो ॥ जो लहुं पुत्र तणी शुद्धि इहांथी,
 तो चरित्रार्थ होये दुःखमांथी ॥ पण कहीयें काइं
 एरी गेरी, ए नृप मुज विहुं पखनो बैरी ॥ जी० ॥

कहीनै नयणें जल नरतो, पूठे तस विरतंत ॥ सा
 कहे हियडे दुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र
 ॥ १९ ॥ कहे पिठ तें संकट सायरमां, पेती दुःख
 सुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सह
 किम अंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासेंथी जे वनसा
 जडपीनै सुत लीयो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेठें,
 क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेश्यो किम
 दन शुद्ध सुधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ याशे सा
 होशे जो इहांथी, वूटकं वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२
 मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूठणुं वली दपिता
 थाप चरित्र सघलां ते नाखे, कुमर यथा इष्टायें
 ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजापण करतां वेदु, रजनी
 निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पनणी कातें
 माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगढो दूठ, ऊग्यो रवि अमुरूप ॥ अनु
 जोतो राजिउ, थावे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निगखी ये ज
 कूपमां, बोव्यो धरणी नाथ ॥ जूठ सहजरूपें त्रि
 विलसे ठे किण साय ॥ २ ॥ अहो रूप रति सुन
 ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडता,

ह्यो नहिं जगवान् ॥ ३ ॥ इंडाणी सुरपति परे, रति
 रतिपति उपमान ॥ शोने अनुपम जोडलुं, अनुगुण
 रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हजो तुमनें बिन्हें, आयो
 कूपक कंठ ॥ दर्पोधल कंदर्प नृप, कहे राग रस धंठ
 ॥ ५ ॥ नृपें विदुनें काढवा, कीधो मांची संच ॥ तव
 पीठनें नूपति तणो, मलया नणो प्रपंच ॥ ६ ॥ रस
 राच्यो थाव्यो इहां, मुज पार्थे कम जात ॥ कीधो को
 ढि कदर्थना, कामांधें दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो
 निजज, न गणो कुजनी कार ॥ थाकर्षो निरखी नि
 खर, हणरो तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप
 थो, नीसरछें कुशलेण ॥ शिरें सवाई बालगुं, पथा यो
 ग्य करेण ॥ ९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
 सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी थावती रूढी
 जी ॥ श्यामा चढि वेसो थाणो अंदेसो ज्वावती रू० ॥
 कुशलें वतरीयें विपत्ति उदरीयें रंगमां रू० ॥ वेठो इम
 कहेतो दोरी अदेतो मंचमां रू० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति
 जो वेठी वीजी मांचीयें रू० ॥ नूपति कहे जणनें पहे
 ली धणनें खांचीयें रू० ॥ कम ठवें नीचें सेवक खांचे

कहीनैं नयणें जल भरतो, पूठे तस विरतंत ॥ सापि
 कहे हियडे दुःख पूरी, धुरथी व्यतिकर तंत ॥ प्र०
 ॥ १९ ॥ कहे पिठ ते संकट सायरमां, पेसी दुःख थ
 नुखंगें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट सहा
 किम थंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासंथी जे बजसारे,
 जडपीनैं सुत लीधो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेठें, सू
 क्यो इहां घरे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेश्यो किम न
 वन शुद्ध स्रुधी, कुमर कहे थिर थापी ॥ थाशे सवि
 दोशे जो इहांथी, बूटकं वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२ ॥
 मुज विरहें वासर किम विरम्या, पूठगुं बली दयितार्यें ॥
 थाप चरित्र सपलां ते जांखे, कुमर यथा इछायें ॥
 ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजारण करता वेदु, रजनी त्या
 निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पनणी कांतें थ
 माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगढो दूठ, जग्यो रवि थनुरूप ॥ थनुपद
 जोतो राजिठ, थावे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी चे जण
 कूपमां, बोख्यो धरणी नाथ ॥ जूठ सहजरूपें त्रिया,
 विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ थहो रूप रति मुजग
 ता, यौवन मण ॥ ३ ॥ जोटी जोडतां, नू

ज्यो नहि जगवान ॥ ३ ॥ इहाणी सुरपति परे, रति
 रतिपति उपमान ॥ शोले अनुपम जोडलुं, अनुपम
 रूप समान ॥ ४ ॥ अनय हजो तुमने बिन्दे, थावो
 कूपक कंठ ॥ दर्पोधल कंदर्प नृप, कहे राग रस धंठ
 ॥ ५ ॥ नृपे बिहुने काढवा, कीधो मांची संघ ॥ तव
 पीघने नृपति तणो, मलया नरो प्रपंच ॥ ६ ॥ रस
 राच्यो थाव्यो इहां, मुज पार्ते कम जात ॥ कीधी को
 दि फदर्पना, कामाये दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपे मोह्यो
 निजज, न गयो कुलनी कार ॥ आकर्षो निरखी नि
 खर, हणरो तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप
 यी, नीतरणुं कुशलेण ॥ शिरे सवाई बालगुं, यथा यो
 ग्य करणेण ॥ ९ ॥

॥ ढाल थावमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
 सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥
 ॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी आवती रुढी
 ॥ प्रीतम चढि वेसो थाणो थंदेसो थावती रूढ ॥
 ॥ जले वतरीये विपति वढरीये रंगमां रूढ ॥ वेगो इम
 ॥ हेतो दोरी महेतो मंचमां रूढ ॥ १ ॥ प्रमदा सपति
 ॥ वेठी बीजी मांचीये रूढ ॥ नृपति कहे जणने पहे
 ॥ धणने खांचीये रूढ ॥ कम ठचे नीचे सेवक खोचे

कहोने नपणें जल भरतो, पूने तस विरतत ॥ सा
 कहे दियहे दुःख पूरी, धुरधी व्यतिकर तंत ॥ प्र
 ॥ १९ ॥ कहे पिछ तें संकट सायरमां, पेती दुःख
 सुखमें ॥ जोग्य योग्य सुकुमाल शरीरें, कष्ट स
 किम श्रंगें ॥ प्र० ॥ २० ॥ तुज पासंथी जे बजसा
 णढपीनें सुत लीधो ॥ अठे किहां ते सा कहे शेते,
 म्पो इहां परे सीधो ॥ प्र० ॥ २१ ॥ लहेइयो किम
 दन छुछ सुधी, कुमर कहे घिर थापी ॥ याशे स
 होशे जो इहांथी, ठूटकं वार कदापि ॥ प्र० ॥ २२
 मुज विरहें यासर किम विरम्या, पूठधुं वली दपिताये
 थाप चरित्र सपलां ते नांखे, कुमर यथा इष्टाय
 ॥ प्र० ॥ २३ ॥ सुख संजापण करतां बेहु, रजनी त
 निरवाहे ॥ ढाल सातमी चोथे खंमें, पजणी कांत
 माहें ॥ प्र० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रयणी गई प्रगढो दूउ, कग्यो रवि अनुरूप ॥ अनुरूप
 जोतो राजिउ, थावे जिहां ठे कूप ॥ १ ॥ निरखी वे ज
 कूपमां, बोळ्यो धरणी नाथ ॥ जूउ सहजरूपें त्रिया
 विलसे ठे किण साथ ॥ २ ॥ अहो रूप रति, सुन
 ता, यौवन गुण विज्ञान ॥ युगती जोडी जोडता,

ल्यो नहिं नगवान ॥ ३ ॥ इडाणी सुरपति परें, रति
 रतिपति वपमान ॥ शोने अनुपम जोडहुं, अनुगुण
 रूप समान ॥ ४ ॥ अनप हजो तुमनें विन्हें, थावो
 कूपक कंठ ॥ दर्पापल कंदर्प नृप, कहे राग रस धंव
 ॥ ५ ॥ नृपें विदुनें काढवा, कीधो मांची लंब ॥ तव
 पीछनें नृपति तणो, मलपा जणो प्रपंच ॥ ६ ॥ रस
 राख्यो थाव्यो इहां, मुज पार्ते कम जात ॥ कीधी को
 ढि कदर्थना, कामार्थे दिन रात ॥ ७ ॥ मुज रूपें मोह्यो
 निजज, न गणो कुजनी कार ॥ आकर्षा निरखी नि
 खर, हणशो तुज निरधार ॥ ८ ॥ कुमर कहे जो कूप
 थो, नीतरहुं कुशलेण ॥ शिरें सचाई वाजशुं, यथा यो
 ग्य करणेण ॥ ९ ॥

॥ टाल थाठमी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग,
 सोनारो ठोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥

॥ प्रीतम कहे हरखी मांची निरखी थावती रुढी
 जी ॥ श्यामा चढि वेसो थाणो थंदेसो थावती रु० ॥
 कुशले ठतरीयें विपति ठरुरीयें रंगमां रु० ॥ बेगो इम
 कहेतो दोरी महेतो मंचमां रु० ॥ १ ॥ प्रमदा सपति
 जी बेठी धीजी मांचीयें रु० ॥ नृपति कहे जणनें पहे
 ली पणनें खांचीयें रु० ॥ कम ठपे नीचे सेवरु खींचे

पो तें आदरियो जेहनें रू० ॥ धूतो नवि घोसे थ
 टोले दुःखना रू० ॥ निःश्वास बिटूटे आधार न धो
 इकमना रू० ॥ ७ ॥ भूछां लहो जागी कहेयां लाम
 एहयो रू० ॥ नोनन पिच पाखें न करुं लाखें जेहव
 रू० ॥ सूकी एक महेले पाप्या गयलें पादरु रू० ॥
 येतो जइ काजें राज समार्जे पाधरु रू० ॥ ८ ॥ या
 शे किम रुपें नाख्यो नृपें नाहलो रू० ॥ नीतरशे क्यो
 थी किम करी त्याथी वाहलो रू० ॥ चिंता चित्त धर
 ती दइहुं नरती शोगमें रू० ॥ आसंगल गाढो फर
 ती दाहादो नीगमे रू० ॥ ९ ॥ रति त्यां अण ल
 देतो, विरहें बढती देहडी रू० ॥ निशिमां एक मा
 गें नूतल जागें ते पढी रू० ॥ मंकी विरधरियें रोपें
 जरिये क्योहिंथी रू० ॥ बोली अहि विलगो न रहे
 अलगो आहिंथी रू० ॥ १० ॥ नोकार संनारे जिन
 मन धारे पिर मनें रू० ॥ पोहरायत थाया हणवा
 धाया नागनें रू० ॥ जीवितथी टाव्यो नाग उघाव्यो
 वेगलो रू० ॥ विरवत सुणायो नूपति थायो व्याकुलो
 रू० ॥ ११ ॥ उपचार घणोरा कोधा नखेरा जे घट्या रू० ॥
 सादमा विप जोला लहेर हिलोला कमट्या रू० ॥
 ईंशी थयां शूनां चेतन कना धारणें रू० ॥ एक तांत

उसासो मंझित मासो कृणं कृणें रू० ॥ १३ ॥ ते
 दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क
 रवा तन् ताजी प्रगट्यो गाजी ग्रहसमो रू० ॥ था
 को उपचारें नूप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पडहो
 वजडावे साद पडावे जन मुखें रू० ॥ १४ ॥ वेश
 कंन्या बंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा
 जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शोरी
 शोरीयें फखा रू० ॥ त्रिक चाचर चोकें नृप पय धोकें
 संचखा रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि नटकी पाठा ठटकी
 नें बल्या रू० ॥ नृप जवननी वाटें आवे उच्चाटें खल
 जल्या रू० ॥ चौथे खंभें चावी ढाल सोहावी आठमी
 रू० ॥ कहे कांति उमंगें रसने रंगें ए गमी रू० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अजिनवो, पडह उवे त्यां आय ॥ नृप
 मुजटें नूपति कन्हें, आय्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि
 रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्राहिं ॥ कूप
 यकी किम नीसरी, आय्यो दीप्ते आहिं ॥ २ ॥ देव
 हण्यो मुज वैरीयें, कीधो केण कुरुळा ॥ मुंजनें अल
 गो जाणीनें, काढयो ए निर्जळा ॥ ३ ॥ इम चिंति

वसासो मंनित मासो दृष्टं दृष्टं रू० ॥ १३ ॥ ते
 दुःख निशि ग्रहेती न लहे वहेती विश्रमो रू० ॥ क
 रवा तन ताजी प्रगट्यो गाजी प्रहसमो रू० ॥ या
 को उपचारें नूप तिवारें अति दुःखें रू० ॥ पडहो
 वलडावे साद पडावे जेन मुखें रू० ॥ १४ ॥ देश
 कन्या वंधुर रणरंग सिंधुर तेहनें रू० ॥ आपे नृप रा
 जी जे करे साजी एहनें रू० ॥ करता पुर फेरी शोरी
 शोरीयें फखा रू० ॥ त्रिक चाचर चोर्के नृप पय धोर्के
 संचखा रू० ॥ १५ ॥ थानक सवि नटकी पाठा ठटकी
 नें वल्या रू० ॥ नृप जवननी वाटे आवे ठाटें खल
 जड्या रू० ॥ चोथे खमें चावी ढाल सोहावी आवमी
 रू० ॥ कहे कांति ठमंगें रसने रंगें ए गमीरू० ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवे नर एक अजिनवो, पडह ठवे त्यां थाय ॥ नृप
 सुजटें नूपति कन्हें, थाण्यो तेह बुलाय ॥ १ ॥ नि
 रखत मुख नृप उलखे, अहो पुरुषनें प्राहिं ॥ कूप
 थकी किम नीसरी, थाव्यो दीसे थाहिं ॥ २ ॥ देव
 हण्यो मुज बेरीयें, कीयो केण कुरुड ॥ सुंजनें अल
 गो जाणीनें, काढयो ए निर्जड ॥ ३ ॥ इम चिंति

(१६५)

ए उल्लाहू, धरो गोपिताकार ॥ करवा सारथ ॥
॥, घोड़ो बचन चहार ॥ ॥ ॥

हाल नयमी ॥ गाढा मारुजी, नमर पीने जाउ
गों ॥ धमली पीने कलाल रे ॥ गाढा मारु अति
चनमादी मादारी सादेयो ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा नेहीजी, अम बखनें थाप्या जनें, उपकार
क सत्यवंत हे ॥ मो० ॥ करुणा ते कीधी साहिये,
मोहनजी मतिनंत रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ तुम
सरिले धानृपणें, पुढवी तल शौजंत रे ॥ मो० ॥

॥ क० ॥ १ ॥ मो० ॥ मलया विष बालण तणुं, काम
करो छेई हाथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ रणरंग थापुं
हापियो, जनपद तनुजा साथ रे ॥ मो० ॥ क० ॥

॥ २ ॥ मो० ॥ लाविणुं, लोकां विषें, ए ने वशनुं
काम रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ बली हुं सुख वो
व्याथकी, थापीश अधिक इनाम रे ॥ मो० ॥ क० ॥

॥ ३ ॥ मो० ॥ महाबल कहे मुजनें इहां, थापीश
मां तुं फाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ मागुं एहिज
सुंदरी, लो पण निर्विष थाई रे ॥ मो० ॥ क० ॥ ४ ॥

॥ मो० ॥ आबी देशांतरथको, नहीं केहने संबंध रे
॥ मो० ॥ क० ॥ मो० ॥ एहवी मुजनें थापता, कर

काथ ॥ थापव पड़ियो जेहथी हे, मोहें लोनाणो ना
 थ ॥ प्राण प्यारो बलवा हे काई जाय ॥ १ ॥ पहेलो
 दुःख सागरथकी हे, तरियो तुं समरघ ॥ ए वेला मा
 ताहेवा हे, कुंण ग्रहरो तुज दह ॥ प्रा० ॥ २ ॥ काठ कुवी
 मां नीडियो हे, पंजरमां जिम कीर ॥ नीतररो क्या
 थी तदा हे, मुज नणदीरो वीर ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ कर सा
 ही नूपतिनहें हे, खेप्यो तुं चयमांहि ॥ सहरो कि
 म पीडा घणी हे, कीधी पावक वाहि ॥ प्रा० ॥ ४ ॥
 क्यां थाप्यो इहां मोहना हे, मलियो कां मुज थाय ॥
 काई जीवाडी पापिणी हे, हुं दुइ जे दुःखदाय ॥
 प्रा० ॥ ५ ॥ विरहो ताहरो प्रीतमा हे, हियडे ये
 घति घाव ॥ नेह निठुर नाहर थयो हे, खेले कठिन
 कुदाय ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ थाशाथी तें त्रोडीयां हे, ए वेला
 जगदीश ॥ तरठोडी थपमारगें हे, काढी पूरी रीश
 प्रा० ॥ ७ ॥ प्रीतडली होयडे वसी हे, लागे मीठी गा
 ढ ॥ साजे नूटो थपरसैं हे, जिम तौखी यमदाढ ॥
 प्रा० ॥ ८ ॥ पढलो शिल शिर तेहनें हे, पाढयो
 जेणे वियोग ॥ परिजन तेहनां रखडजो हे, जिम का
 प्यां थल फोग ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ विलपत प्रमदा खीज
 ती हे, दुःख पूरी महे मूर ॥ पीयुनें लोयण थांसुयें

हे, ये जल थंजली पूर ॥ प्रा० ॥ १० ॥ निरखुं नय
 ऐं नाहलो हे, तो मुज नोजन वात ॥ वेठी एहवुं
 थादरी हे, करवा थातम घात ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ नृप
 नंदन समशानमां हे, इहां तिहां निरखी ठोर ॥ खडकें
 इधित थानकें हे, मोहोटी चय एक कोर ॥ प्रा० ॥ १२ ॥
 साहस देखी तेहवुं हे, पुर जण मजिया धाय ॥ दित
 गिरी धरता हिये हे, नूपतिनें कहे आय ॥ प्रा० ॥
 ॥ १३ ॥ देव विचाखा विण ईस्यो हे, मांमथो कवण
 थन्याय ॥ राखमिणें पछुनी परें हे, हणियें नहो ति
 ळगय ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ मलया नापो तो जलें हे,
 पण मागे कां एह ॥ थम वचनें मूको हये हे, करी क
 रणा गुणगेह ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ नूप जणे ए नामि
 ती हे, मुजने नवि निरखंत ॥ वपरांठी काठी हुवे हे,
 जा नर ए जीवंत ॥ प्रा० ॥ १६ ॥ ए वाला विण मा
 हरे हे, न पडे जक पल मात ॥ मत पडजो ए वात
 मां हे, मो वानें एक वात ॥ प्रा० ॥ १७ ॥ निर्दय
 नय तिहां वोनयो हे, जीवो नामें प्रधान ॥ शी एहनी
 तुमनें पडा हे, मेजो ठो इहां तान ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
 पायल पाय पची हे, मरशे जो दुःख थाणि ॥ तो
 पायला रुहनें हे, ए होशे घर हाणी ॥ प्रा० ॥ १९ ॥

राजानें मंत्री इहां हे, मज्जिपा पापी दोष ॥ तो ते
 दया नररत्नने दे, कुशल किहांथी होय ॥ प्रा० ॥ २० ॥
 ठारमिर्शें थारनियो हे, धनरथ विश्वा वीश ॥ सहि
 दुर्मति ए घेदुने दे, ठारल पदशे शीश ॥ प्रा० ॥ २१ ॥
 गलतां माखी जीवती हे, फो करे एहवुं काम ॥
 अन्योन्य कहेतां लण तिके दे, पोहोता निज निज
 ताम ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ अकल कला कोई केजवी हे,
 पिपु सेहेशे जयमाल ॥ चोथे खंभे अग्यारमी हे,
 कातें पनणी ढाल ॥ प्रा० ॥ २३ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इष्ट संजारी आपणो, परवरियो नढवुंद ॥ व.
 क्षिण करें प्रदक्षिणा, चय पाखलि नृपनंद ॥ १ ॥ पु
 रजन मुख दाहा खें, थापूखो आकाश ॥ लोक हृद
 य कसणें करे, शोक परीक्षा न्यास ॥ २ ॥ सहसा नृ
 पमुत वतपति, पढे चितामां जाम ॥ ततक्षुण पुर
 जन नेत्रथी, पसर्यां थांखू ताम ॥ ३ ॥

॥ ढाल वारमी ॥ तढाके तोढी ठे दुःख माला ॥ एवेशी ॥

॥ निरखे सुजट विकट चयमाहि, पेटो कुमर जि
 वारें ॥ चिहुं दिशि प्रवल थनल सलगाढयो, पसरि
 जाल तिवारें ॥ १ ॥ ऊधार्के जलकी ठे दिगमाला.

तापें कटकण लागा कांठ ॥ चमाकें चमकी ठे सुर
 वाला ॥ ए आंकणी ॥ धोरणी धूम तणी त्यां प्रतरी,
 दिशिदिशि अंबर ठायो ॥ श्यामघटा करी पावक रूप,
 जाणो पावस आयो ॥ ऊ० ॥ २ ॥ वन्हि पतंग वडे
 तगतगता, खजुआ जिम चिहुं ओरें ॥ जाल वीज
 ज्युं चिलकण लागा, अनल जलदनें जोरें ॥ ऊ० ॥
 ॥ ३ ॥ सात जीन शतजीन थईनें, ननतल चाटण
 लागो ॥ तस वहीपक पचनसहायी, विशमो थई त्यां
 यागो ॥ ऊ० ॥ ४ ॥ धीरपणुं पुर लोक प्रशंसे, तस
 हा रव अण सुणतां ॥ ज्वलत रह्यो विश्वानर देखी,
 सुनट वढ्या गुण सुणता ॥ ऊ० ॥ ५ ॥ जिम कीधुं
 तेणें तिम नृप आगें, जाख्युं सकल बनावी ॥ नृप
 प्रधान विना पुरजननें, ते निशि निंद न आवी ॥ ऊ० ॥
 ॥ ६ ॥ दुडे प्रजात विना तनु तारा, ढाक्या सूर प्रजा
 रें ॥ तव शिर रक्षा पोटी धरीनें, आवे सिद्ध स्वजा
 रें ॥ ऊ० ॥ ७ ॥ देखी विस्मित लोक उमंगें, पग प
 ण एहवुं पूठे ॥ अहो सुगुण तुं आब्यो किहांथो, शि
 रें एह कीस्युं ठे ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ ते चयनी रक्षा लेई
 हुं, आब्यो तुं नृप कार्यें ॥ इम कहेतो पोहोतो नृप
 तवनें, सिद्ध पुरुष छन सार्जे ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ राख पो

छली छाये नृपने, कहेतो एहहुं रंगें ॥ ए नाखो निज
 माये एहथो, रहेलो, निरुध्या धनै ॥ ऊ० ॥ १० ॥
 नृप, नणे हुं न धावा जयमा, आध्या बीतो राजा ॥
 आग सगी नहों लगमा केदनैन गणो सतिपां धावा
 ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ कुमर निमाये कूडा आगे, वनरो कू
 हुं योजुं ॥ कहे नृपने हुं दाधो जयमा, मन सादा
 नचि मोजुं ॥ ऊ० ॥ १२ ॥ मुज सादसपी सुरगण
 बीज्या, अमृत रसें चय ठारे ॥ धयो राजो चिच फरी
 हुं तेदुषी, आधी रह्यो चय आरें ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ वा
 र पोटजी तिदाधोसेइ, आध्या राज समीपें ॥ वाचा
 तेइ पजे तो रुटी, धांजी जेइ मदीपें ॥ ऊ० ॥ १४ ॥
 नृप विचारे धूरत एणें, मीठ सकलनी वंधी ॥ इहा र
 ह्यो वाली चय धाली, सुनटें करी हग वंधी ॥ ऊ० ॥
 ॥ १५ ॥ कांत समागम जाणो मज्जया, मलवानें धली
 धायी ॥ आरक्षक परिवारें बीटो, निरखत हरख
 न माधी ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ एकांतें जइ पूठे पतिने, पा
 वक पेठा स्वामी ॥ कुशले केम मझ्या ते जाण्यो, पी
 शु कहे अवसर पामी ॥ ऊ० ॥ १७ ॥ अंध कूप गत
 जेइ सुरंगा, ते सुख में चय खडकी ॥ पृथुज गर्ने घ
 रने आकारें, द्वार शिजायें थडको ॥ ऊ० ॥ १८ ॥

(३३९)

॥ ढाल तेरमी ॥ विंजाजी हो रतन कूँ मुख सांकडो
 रे विंजा, किम करी करुं रे फकोल ॥
 रायविंजा, सयण मारू ॥ ए देशी ॥
 ॥ साधकजी हो एह पुरनें अति ठूकडो रे मिता,
 नामें गिरिठिछ टंक ॥ सि० रुडा, सयण म्हारा ॥
 ॥ सा० ॥ विषम करय शिखरें तिहां रे मिता, अंब
 अळे निरमंक ॥ सि० ॥ १ ॥ सा० ॥ फल तेहनां
 अति सीयलां रे मिता, लहीयें वारही मासं ॥ सि०
 ॥ सा० ॥ ते शिखरें उंचा चढी रे मिता, तलपी
 हवें आकाश ॥ सि० ॥ २ ॥ सा० ॥ विषम थलें
 आंवा शिरें रे मिता, पोहोचीनें फल लेय ॥ सि० ॥
 ॥ सा० ॥ ऊंपावो बली अंबथी रे मिता, नूतल जा
 ग तकेय ॥ सि० ॥ ३ ॥ सा० ॥ आयो इहां कुशलें
 बही रे मिता, मूको फल नृप नेट ॥ सि० ॥ सा० ॥
 पित्तविकार नरिंदनो रे मिता, टलशे तेहथी नेट ॥
 ॥ सि० ॥ ४ ॥ सा० ॥ कुमर विमासे दोहिलो रे मि
 ता, ए पण नृप आदेश ॥ सि० ॥ सा० ॥ यान
 मरण तणुं सही रे मिता, न फुरे जिहां मति ले
 ॥ सि० ॥ ५ ॥ सा० ॥ जो न करुं तो कामिनी
 नापे ए नरनाथ ॥ सि० ॥ सा० ॥ बिहुं व

मृत्यु माहुरुं रे मिता, पडिया नूमि वे हाय ॥ ति० ॥
 ॥ ६ ॥ सा० ॥ जो पण देवप्रजावशी रे मिता, क
 रणुं डुप्कर काज ॥ ति० ॥ सा० ॥ जीवितनें मुज
 सुंदरी रे मिता, ठे दोष बात सुसाज ॥ ति० ॥ ७ ॥
 ॥ सा० ॥ धारी एहवुं आदरें रे मिता, मंत्री वचन
 तिम तेह ॥ ति० ॥ सा० ॥ आसनथी कल्यो धंसी
 रे मिता, साहसनुं कुलगेह ॥ ति० ॥ ८ ॥ सा० ॥
 मलया जल नयणें जरे रे मिता, दुःख पूरें दिलगीर
 ॥ ति० ॥ सा० ॥ महवल जण वींटयो घणें रे मिता,
 आवे गिरिवर तीर ॥ ति० ॥ ९ ॥ सा० ॥ जिम जिम
 गिरि उंचो चढे रे मिता, तिम तिम जणने शोक ॥
 ॥ ति० ॥ सा० ॥ नृपतिनें मंत्री दृश्ये रे मिता, बाधे
 हर्षना झोक ॥ ति० ॥ १० ॥ सा० ॥ शोने गिरि
 टुंके चढयो रे मिता, उदय गिरि जिम सूर ॥ ति० ॥
 ॥ सा० ॥ नृप सुजटें नीचो रह्यो रे मिता, अंध वे
 खाडयो दूर ॥ ति० ॥ ११ ॥ सा० ॥ रुंदुं जे में व
 पार्ज्युं रे मिता, न्याय धर्मनें मेल ॥ ति० ॥ सा० ॥
 सफल हजो माहुरुं इहां रे मिता, तेहयो साहस
 खेल ॥ ति० ॥ १२ ॥ सा० ॥ इम कहेतो अंधा
 यकी रे मिता, थापे ऊपापात ॥ ति० ॥ सा० ॥

हाहारव लोकां तणो रे मिता, गिरि कूहे नवि मात
 ॥ सि० ॥ १३ ॥ सा० ॥ पढठंयो गिरिकंदरें रे मि
 ता, हाहारव ततखेव ॥ सि० ॥ सा० ॥ जाणुं साह
 त देखीनें रे मिता, बोल्पो तिम गिरिदेव ॥ सि० ॥
 ॥ १४ ॥ सा० ॥ पढतो वेगें शृंगयी रे मिता, ये खे
 चरनी व्राति ॥ सि० ॥ सा० ॥ अदृश्य दुर्ग जन
 देखतां रे मिता, जिम पाशें नृप खांति ॥ सि० ॥
 ॥ १५ ॥ सा० ॥ अहह अनय ए आकरो रे मिता,
 हाहा पाप प्रचंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पढतां एहना
 हाडनो रे मिता, जडशें कडो किहां खंम ॥ सि० ॥
 ॥ १६ ॥ सा० ॥ पुरजत एहवुं नांखतां रे मिता,
 नृपपुर अशिव कहंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ निज निज
 थर आब्या बही रे मिता, तस साहस स जहंत ॥
 ॥ सि० ॥ १७ ॥ सा० ॥ सुहडें सकल सुणावियुं रे
 मिता, नृप मंत्री विरतंत ॥ सि० ॥ सा० ॥ थाप
 कतारथ मानता रे मिता, निवहे रात निरंत ॥ सि० ॥
 ॥ १८ ॥ सा० ॥ सिद्ध प्रजातें आवियो रे मिता, लै
 सहकार करंम ॥ सि० ॥ सा० ॥ पग पग जन देखी
 कहे रे मिता, आब्या केम अखंम ॥ सि० ॥ १९ ॥
 ॥ सा० ॥ सिद्ध कहे कहेसुं पर्जे रे मिता, हवणां म.

पृथशो कांड ॥ मि० ॥ भा० ॥ कहेंतो उंस जन यों
 टीयो रे सिता, नृप नरनें गयो भाई ॥ मि० ॥ १०
 ॥ भा० ॥ ज्यामवदन राजा दूत रे सिता, बीहीनो
 निर्गर्ज, निन ॥ मि० ॥ भा० ॥ जो-यो नेत्रवे मंत्रवी
 रे सिता, कुमरयो किन नु मित्र ॥ मि० ॥ ११ ॥
 ॥ भा० ॥ इनउ न उरि मुन्य रे जग र सिता, मृके
 प्रथ रम ॥ मि० ॥ भा० ॥ र र न रों म्यात्र सहू
 रे म ॥ मि० ॥ भा० ॥ १२ ॥ भा० ॥
 बीहाला रे र ॥ मि० ॥ भा० ॥ र र म ॥ र र मुन
 ॥ मि० ॥ भा० ॥ र र र र र र र र रे सिता,

॥ १ ॥ सुंदरी पहेली मुज मल्यो, योगी बनमां जेह ॥
 प्रजल्यो पावक कुंममां, थयो व्यंतरो तेह ॥ २ ॥ ते
 व्यंतर इहां थं वमो, वसितं मुज जाग्येण ॥ गिरिधी
 पडियो वचन वदे, ठंजलियो हुं तेण ॥ ३ ॥ थाप करे
 मुजनं ग्रही, बोळ्यो ते गुण लीह ॥ रे ठपगारी मित्र
 तुं, मनमां फांइ म बोह ॥ ४ ॥ थाप स्वरूप फलुं ति
 एं, में पण मुज विरतंत ॥ करता मैत्री संकथा, वी
 ती राति तदंत ॥ ५ ॥

॥ डाल चौदमी ॥ मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ मुज मनहुं तुमयी हल्युं, रहो रहो मित्र मुजा
 ए रे ॥ थावो थम घर प्राहुणा, पालो प्रेम पुराण रे
 ॥ मु० ॥ १ ॥ पूरवला संबंधयो, मजीयो जो मुज थार्ई
 रे ॥ तो तुं एम ठतावलो, ठवीनें कांई जाई रे ॥ मु० ॥
 ॥ २ ॥ प्राहुण गति शी साचहुं, कहे तुं सुखयी थाप रे ॥
 तुम थाणा माथे धरुं, जिम जग नृपनी ठाप रे ॥ मु० ॥
 ॥ ३ ॥ तव हुं बोळ्यो ते प्रते, सुण बांधव गुणवंत रे ॥
 नृप कामे हुं थावियो, ढीज इहां न खमंत रे ॥ मु० ॥
 ॥ ४ ॥ पण वांध्यो में जेहवो, तेहवो दुये सुकयठ रे ॥ तो
 जाणुं मैत्री तणुं, सही सफल परमठ रे ॥ मु० ॥ ५ ॥
 बोळ्यो सुर सुण मित्रजी, ए नृप शत्रु सरीख रे ॥ हणवा

घाह तुझन, कह ता दुं हवे शीख रे ॥ मु० ॥ १ ॥ मे जाधु
 एह एटले, नहिं विरमे जई थाप रे ॥ तो एहने सम
 जावगुं, करी कूढो उपजाप रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ विपम
 प्रयोजन ताहरे, आवी पडे कोई जेथ रे ॥ संजाया
 ततक्षुणों, करगुं सान्निध्य तेथ रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ २५
 हेतो सुर किहांथकी, लाब्यो एक करम रे ॥ सरस
 रसाल तणे फलें, जरीयो तेह अखम रे ॥ मु० ॥ ९ ॥ मु
 जनें तेह करमगुं, सुरवर थाप उपाडी रे ॥ मूक्यो पुरने
 उपवनें, जिहा जिन मंदिर थाडी रे ॥ मु० ॥ १० ॥ सुर
 बोख्यो ए फल जई, देजे तुं नृप हाथें रे ॥ अदृश्य
 गतिक रूपें तिहा, आवोश दुं तुज साथें रे ॥ मु० ॥ ११ ॥
 जे जे घटसे काम त्यां, करगुं ठाने दुं तेह रे ॥ शीख
 वियो इम मुझनें, देवें थाणी सनेह रे ॥ मु० ॥
 ॥ १२ ॥ थाप्यो तेह करमीठ, नृपति थागलें जाई
 रे ॥ लेई अनुका तेहनी, वेतो दुं इहां थाई रे ॥ मु० ॥
 ॥ १३ ॥ एहवे तेह करमथी, कडकडतो स्वर कूर रे ॥
 वधजियो बलियो महा, पढवेंदे नरपूर रे ॥ मु० ॥
 ॥ १४ ॥ खाउं पहेलो दुं नृपनें, के धुर खाउं प्रधा
 न रे ॥ एक जणनें बिहुंमाहिथी, नहिं मूकुं दुं नि
 गन रे ॥ मु० ॥ १५ ॥ शब्द सुणीनें नरपति, पदि

आस्पद ते अविवेक ॥ संपद होय सयंकरा, निरखी
 नृप नय नेक ॥ ४ ॥ तेह नणी नय गोचरें, निगम
 वेचारी मुळ ॥ आतम वचन प्रमाणवा, आपो महि
 ला मुळ ॥ ५ ॥ सामंतादिक वोजिया, करो देव ए
 वयण ॥ अतय रसें कोपावसो, न घटे ए नर रयण ॥ ६ ॥
 ॥ ढाल पंदरमो ॥ योगीसर चेजा ॥ ए देशी ॥

॥ वचन सुणी नरराजियो रे, पढीपो विमातण माहिं
 रे ॥ नारि रस रातो पेगो उपापल गोचरें होजाल ॥
 हियडे चढी मुज नायिका रे, प्यारी जीवन प्राही रे ॥
 करणुं विधि केहो, मुज मनथी नवी उतरे होजाल ॥ १ ॥
 मंत्र तंत्रादिकयोगनारे, लहेतो विविध प्रकार रे ॥
 साधे घादिरनां, कारज ए सहेजे इहां होजाल ॥ तेह
 नणी निज देहनो रे, सोंपुं काम सफार रे ॥ अन्यंत
 र कोई, झुप्कर ते करशे किहां होजाल ॥ २ ॥ कार
 ज विण कीये सही रे, जोता पुरनां लोक रे ॥ दोशे व
 शीयाला, नोंगे पटशे घापटो होजाल ॥ फरि नही मा
 ने सुंदरी रे, पाशे भराननि फोक रे ॥ पहेली जे की
 धी, मलशे नहिं गली ताकटो होजाल ॥ ३ ॥ इम
 फरे फायशे प्रिया रे, अपयश लोक विद्या रे ॥ न
 हीं दोशे मसारे, एदबुं विचारी वोजियां होजाल ॥

त्रीछुं कामं करे हवे रे, तोयुं महिला संजाल रे ॥
 आठो ए तुजनै, वचन थकी हुं न मोलीयो होलाल ॥
 ॥ ४ ॥ निज नयणें निरखुं सदा रे, पुंठि विना मुज
 थंग रे ॥ तेमाटे वांसो, देखुं हुं तेहवो करो होलाल ॥
 मुज उपर करुणा करी रे, पुरो एह उमंग रे ॥ सुगु
 णा सोनागी, मानीश पाढ इहां खरो होलाल ॥ ५ ॥
 नृपनंदन चींते ईस्यो रे, एह श्यो सोंपे काम रे ॥
 नृप हसवा सरिखो, कुमति कदाग्रह केलवी होलाल ॥
 रीशाणो कहे रायनै रे, ए श्यो मामघो उधाम रे ॥ ए
 हथी कहीं आगें, सिद्धि किशी ताहरे नवी होलाल ॥
 ॥ ६ ॥ पुंठ जोवे कोण आपणी रे, जो पण होय लख
 हाम रे ॥ इम कहिनैं खांचे, नाडी नृप ग्रीवा तणी हो
 लाल ॥ उलटी मुख बाकुं बह्युं रे, आब्युं ग्रीवानें ठा
 म रें ॥ ग्रीवा मुख ठामें, आबी रही तव आफणी
 होलाल ॥ ७ ॥ पुठ निहालो खंतयुं रे, काम थयुं
 तुज ठीक रे ॥ नृपति गुण मानो, वचन सुणी इम
 तेहवे होलाल ॥ सचिव नवो रोपें नखों रे, बोझ्यो
 अई साहसिक रे ॥ सुण धूरत धीठा, लाज नहीं तुज
 ने हवे होलाल ॥ ८ ॥ जनक हण्यो तें माहरो रे,
 जीवो नामें वजीर रे ॥ खुनी अन्यायी, बोहितो नहीं

अममं जमे होना ॥ अम जमे वजी नपत रे, कां
 हु म ये वे पार रे ॥ ममरी गननाडी काई भर वाह्यो
 रमे होना ॥ ॥ ॥ गज गनामा बांधीयो र, सपनी
 राजवाणी रे ॥ देव्य लुप निमल जोर मया ज
 ग धारि होना ॥ नन सुनर्या नदी पानडी र,
 पणि मयाद न पान र ॥ गजगरी मया, विह
 ती पान, मयादि होना ॥ ॥ ॥ गजगरी मया, विह
 वरमया र मया अदम्य रे ॥ पणि होना ॥ ॥
 मया, मया होना ॥ मया, मया होना ॥ ॥

शो, तो थई ते एटले वणी होनात्त ॥ मिह विमामी ए
 हवुं रे, बोझो एह जो नोट रे ॥ पावे अणुवाणे,
 वनमां जिन द्रगमे धृमी होनात्त ॥ १४ ॥ श्रीजिन
 अजित लुहागीने रे, दाये आवे आहिं रे ॥ नो याशो
 माजो, बीजो उवाय नहीं चिह्यो होनात्त ॥ अममरवू
 पण गजिगो रे कवे जे नानो व्याहिं रे ॥ माजो जो
 आवे, नो सुज अणु अजे हिउयो होनात्त ॥ १५ ॥
 जोरु कवे निज गणगो रे वनमे आवी बीग रे ॥ नू
 पतिने पूते, अज नहिं जे गोवणी होनात्त ॥ रूप
 वल्लु बोवा निहवुं रे, अ वरु रिम तोटेग रे ॥ दोसे
 जे हाई नेह गन हाई जे हाई हातात्त ॥ १६ ॥ पुर

व्यो पानो, माने मार कुचोटनी होजात ॥ लोक ग
 मष्ट समजावितु रे, पाजे तवे अनिमृग्य रे ॥ चिते
 डंग चोत्ता, त्यांचे नडा मिळ कोटनी होजात ॥ १९ ॥
 वदन वलाने राखणे रे, वेतु पाहुं ताम रे ॥ जागी न
 दि वना दृष्ट अंतर्ग न्या खुशी होजात ॥ हर जो
 हा कष्ट मिळत रे, वेचाणा तुम नाम रे ॥ सुगुणा
 सातेत ॥ जाह्ये ते मानो हवा होजात ॥ २० ॥ मि
 ६ हय मागज इहा रे चोरे मतया बात रे ॥ तपति
 पामन मान कया नेट्हा होनात ॥ चोखी चो
 या गजाल, ४ गट वल्लभ, ठात रे ॥ नांवा रत जे
 ना, क निमित्तय दुय नेट्हा होनात ॥ २१ ॥

दादा ।

॥ ७ ॥ सनारे तेह देय, करना सफल मनोरथाजी ॥
 जंपाये ततयेव, दीपे पसंग पदे यथाजी ॥ ८ ॥ दाहा
 पार करंत, लोक नखा पुरजन तदाजी ॥ आसुदे व
 रसंत, लोधन जिम जल नारिदाजी ॥ ९ ॥ पाम्पो
 लूप प्रमोद, कुमार जंपाणो देखीनेंजी ॥ माणो हास्य वि
 नोद, सवियनें साय विशेषिनेंजी ॥ १० ॥ चटियो ह
 य सिद्धराज, अगनिथी नीसरितं तवेजी ॥ बीते जि
 म सुरराज, आरोह्यो उच्चैःश्रवेजी ॥ ११ ॥ दीपे तेज
 अपार, दीव्य वसन नूपण धखाजी ॥ जलहल ज्यो
 ति तुखार ॥ अंगें साज नजा नखाजी ॥ १२ ॥ धौ
 रादिक . गतिपंच, १ घोरितं २ वज्रितं ३ कुतकं ४
 उत्तरकं ५ वनेजितं ॥ जेदे सुरंग रमाढतोजी ॥ तन
 विलसित रोमांच, जननें चित्र पमाढतोजी ॥ १३ ॥
 देतो हपेविपाद, लोक नूपतिनें पालटीजी ॥ मनमां
 अति आह्लाद, धरतो इम कहे वलटीजी ॥ १४ ॥
 अहो अहो तीर्थनी नूमि, एह ठे वंजित दायिनी
 जी ॥ ज्वलित दुताशन धूम, फरसें जे अघ धायि
 नीजी ॥ १५ ॥ पाढियो हुं इहां आज, बीजो तुरं
 वलीजी ॥ बलतो सिद्धतां काज, एहवा यया
 डलीजी ॥ १६ ॥ आजयकी थम अंग, रोग

जरा नहीं संक्रमेजी ॥ नहीं हूवे मरण प्रसंग, अमर
 हुआ बिहु रंगमेंजी ॥ १७ ॥ सानिनी वायक एह, स
 जादिक सवि जूजूथाजी ॥ बलवा अगनिमा तेह, प
 हवाने ततपर हुआजी ॥ १८ ॥ जो जो प्रत्यह
 ल, तीरथ महिमानो शिरेंजी ॥ हुआ बेहु निहात,
 तीर्थ प्रनावें इणी परेंजी ॥ १९ ॥ आपणनें इण ठा
 म, तन होम्या फल ठे बहूजी ॥ धरता मोटी हो हा
 म, थाव्या नर पडवा सहूजी ॥ २० ॥ बोझो सिद्ध
 विचार, रे रे कृण एक पडखीयेंजी ॥ थाणो घृत नि
 स्धार, अगनि जुगतिगुं पूजीयेंजी ॥ २१ ॥ थाणा
 घृतना कुंज, ठे बहू दह पच पच इर्योजी ॥ नणतो
 मंत्र सदन, आहुति ये मन उल्लस्योजी ॥ २२ ॥ पहे
 लो पेशीश थाहिं, हुं इम कही नृप पेशीउंजी ॥
 पूठें सचिव संवाह, जई नृप पासें बेसीउंजी ॥ २३ ॥
 कुमरें बाव्या लोक, पडता अवर हुताशनेंजी ॥ पड
 खो पडखो स्तोक, थाववा यो नृप सचिवनेंजी ॥ २४ ॥
 लागी वार विज्ञाप, राय सचिव किम नाविपाजी ॥
 बेला तुमनें दो रेख, लागी नहिं जय थावियाजी ॥
 ॥ २५ ॥ इम पुरलोकना बोल, सानिनीनें मिद यो
 लीउंजी ॥ कारे नूझा अटोज, अगनि पळ्यो कोण

जीवोउंजी ॥ ३४ ॥ अगनि पडिउं हुं थाज, सुरसा
 निघ्यथी नीतखोजी ॥ बोली सकल समाज, वैर वाल
 ए रुडो कखोजी ॥ ३५ ॥ फलियो अनय कुट्ट, नृ
 प मंत्रिमुत मंत्रिनेंजी ॥ सामंतादिक दह, बोझ्या व
 ली थामंत्रिनेंजी ॥ ३६ ॥ राज्य निवाहक तिह, हो
 लो राजा थापणेंजी ॥ इम कही राजा कीध, महो
 त्सव थामंवर घणेंजी ॥ ३७ ॥ मान्यो जन तिहरा
 ज, पाछे राज्य सुनीतिथीजी ॥ महिपतियां- शिरता
 ज, राखे जनपद ईतिथीजी ॥ ३८ ॥ अडके विपमे
 काम, छेजे सुख संनारिउंजी ॥ आनाखी सुर थाम,
 तिहें तेह विसर्जिउंजी ॥ ३९ ॥ सोया खंमनीरंग,
 मलय चरित्रथी संमहीजी ॥ कांतिविजय मन रंग, ठा
 ल शोलमी ए कहीजी ॥ ४० ॥

॥ दोहा ॥

॥ थाव्यो देशांतर थकी, तेहवे तिहां बलसार ॥ छेई
 निरुपम जेटणुं, चलि थावे दरबार ॥ १ ॥ नृप जेटी
 वेवे तिहां, दीठी मलया वाल ॥ मलयाथें पण पेखीउं,
 सारथपति ततकाल ॥ २ ॥ एक एकनें उलख्या, थातां
 नयणां जेट ॥ मलियां शत वर्षांतरें, चतुर न जूछे नेट
 ॥ ३ ॥ मरतो तुरतज ठगीउं, थाव्यो मं

चिते हैहै थावीयां, उदय महा मुज पाप ॥ ४ ॥ अ
हो महोदधि परतडे, थाव्यो एहनें गोडि ॥ देवें हिम
ए नूपसुं, मेली सांधा जोडी ॥ ५ ॥ जे कीधुं में एहनें,
अनुचित करण अन्याय ॥ कदेसो ते जोनूपनें, तो मु
ज मरण सहाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥ सीता हो प्रिया सीतारा परजात,
प्रणमुं हो प्रिया प्रणमु पग नार्ये करी जी ॥ ए देशी ॥

॥ मलया हो प्रिय मलया कहे सुविचार, निसुणी
हो प्रिय निसुणी जे थाव्यो वाणीयोजी ॥ नामें हो प्रि
य नामें ए बलसार, तेहज हो प्रिय तेहज पापनो प्राणी
योजी ॥ १ ॥ मुजने हो प्रिय मुजने दीधी जेण, वि
धविधहो प्रिय विध विध दुष्ट कदयेनाजी ॥ राख्यो
हो प्रिय राख्यो ठानो एण, मुजसुत हो प्रिय मुजसुत
कर्ता अन्ययेना जी ॥ २ ॥ ईणी परें हो प्रिय ईणी
परें प्रमदा बोज, निसुणी हो नृप निसुणी ततक्ष
कोपीयोजी ॥ साह्यां हो नृप साह्यां शेन निदोज, परि
कर हो निज परिकरसुं काठें दोपोजी ॥ ३ ॥ कीर्थ
हो नृप कीवी क्रियाणें गाय, वांछज हो वह वांछज
ताम जलावीयांजी ॥ चितमां हो ते चितमां निमाणें
आप, सायेपहो इम सायेप चिना नायीयांजी ॥ ४ ॥

टण हा मुज दृटण कोई उपाय, दोते हो नहि दोते
 ॥ द्वि कोई थाशरी जी ॥ आवे हो बली आवे मे एक
 ताय, बलते हो यदि बलते यह आवे तरीजी ॥ ५ ॥
 रहना हो नृप एहना वेरी दोष, परिचित हो मुज परि
 चित शूर नृपति धुरेजी ॥ बीजो हो बली बीजो शूर
 सनोय, धोंगड हो बल धोंगड वीरधवल शिरेजी ॥ ६ ॥
 जांती हो तेह जांती एहने ताम, गोडण हो मुज गो
 टण विधि करशे बहीजी ॥ अडलख हो हवे अ
 डलख सोवन हाम, परी हो तस परी जन मूक
 सहीजी ॥ ७ ॥ लक्ष्ण हो धर लक्ष्णपर गज आठ,
 आया हो धर आया परदेशां यकीजी ॥ तेहनो हो
 बली तेहनो जयायो ठाठ, वूटीश हो हुं वूटीश एह जेदे
 थकीजी ॥ ८ ॥ समजू हो एक समजू सोमो नाम,
 माणस हो निज माणस सवि समजावीनेंजी ॥ मू
 क्यो हो तिहां मूक्यो ठानो ताम, बणिकें हो तिण ब
 णिकें वीरधवल कनेंजी ॥ ९ ॥ जाता हो मग जाता
 अधमग माहि, मजिया हो विहुं मलिया विहुं ते राज
 बीजी ॥ दुर्गम हो अति दुर्गम तिलक गिरि त्याहिं,
 जीरण हो जिहां जीरण जिहां रुझाटवीजी ॥ १० ॥
 निसुणी हो नृप निसुणी जूती वात, एहवी हो धुर ए

हवी जनमुखथी कहीजी ॥ पत्नी हो तिण पत्नीपति
 किम जाति, नीमें हो वन नीमें मलयानें ग्रहीजी
 ॥ ११ ॥ आव्या हो तिहां आव्या वेहु नरिंद, निज
 निज हो जन निज निज जनपदथी वहीजी ॥ डुर्क
 य हो तेण डुर्कय नीम पुलिंद, रमतो हो रण रमतो
 रण बांध्यो ग्रहीजी ॥ १२ ॥ जोतां हो तिहां जोतां
 मलया बाल, दीठी हो नही दीठी नहिं किण थानकें
 जी ॥ बलीया हो नृप बलीया नृप तिण काल, मलियो
 हो जई मलियो सोम अचानकेंजी ॥ १३ ॥ वीरप हो
 नृप वीरपनो आवेश, पामी हो वर पामी वर तिम
 वीनवेजी ॥ सारथप हो तेह सारथपनो संदेश, सुणतां
 हो नृप सुणतां अंगीकरे सवेजी ॥ १४ ॥ थापुं हो प
 न थापुं वेतो वीर, आखे हो विधि आखे शूर प्रत्ये ह
 सीजी ॥ शूरो हो नृप शूरो नृप शौमीर, लोनें हो
 बहुलोनें वात ग्रहे पसीजी ॥ १५ ॥ नृपकुज हो एह
 नृपकुज साथें देप, चाळ्युं हो नित्य चाळ्युं थावे था
 पणेजी ॥ वेगो हो कोइ वेगो नूतन एण, तेहने हो हवे
 तेहने हवे हणयुं रणेंजी ॥ १६ ॥ सर्वस्व हो तस सर्वस्व
 खेयुं लुंठि, सारथप हो बली सारथपनें मूकावशुंजी ॥ थागो
 हो थम थागो यशनी वूटि, थरिनो हो बली थरिनो

ठाम चूकावशुंजी ॥ १७ ॥ मंत्री हो इम मंत्री दोष नरेश,
 करवा हो रण करवा सिद्ध नरिंदशुंजी ॥ चाव्या हो
 धकि चाव्या कटक निवेश, करता हो पथ करता पथ
 सवंधंशुंजी ॥ १८ ॥ उदधि हो जिम उदधितिलक
 पुर पास, आव्या हो धर आव्या धर कंपावताजी ॥ वा
 बल हो दल वादल वंच आकाश, दीधा हो तिहां दीधा
 मेरा फावताजी ॥ १९ ॥ वे नृप हो हवे वे नृप भूकी
 दूत, आगम हो निज आगम हेतु जणावशेजी ॥ सा
 हमो हो नृप साहमो सेन संजुत, करवा हो रण क
 रवा रसमा आवशेजी ॥ २० ॥ चोये हो एह चोये
 खंमे ढाल, नाखी हो इम नाखी सत्तरमी जावथीजी ॥
 सुणतां हो घर सुणतां मंगलमाल, आवे हो नित्य
 आवे कांते सुहावती जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरप शूर वझे मली, शीखावी अदभूत ॥ सि
 ६ नरेशर उपरें, भूके दुर्दम दूत ॥ १ ॥ अचतरविद
 वाचाल मुख, साहसिक निर्लान ॥ स्वामीनक हित
 मग कथक, परखद माहे थक्षोन ॥ २ ॥ दीर्घदर्शी
 दीर्यगति, सर्वसह भतिवंत ॥ नीति निपुण शाहक
 पिशुन, (शत्रुनो चाडिउ) ए गुण दूत बहंत ॥

॥३॥ अतवाखो केकाण रथ, पहेखो जाव जुलिम्भ
 ॥ सिहराय नवनांगणें, जइ पोहोतो जालिम्भ ॥४॥
 क्षरपाल नृप वीनवी, दीधो नवन प्रवेश ॥ करी स
 लाम सिहरायनें, जांखे इम संदेश ॥ ५ ॥

॥ ढाल अठारमी ॥ वदया ते पुररो मांनवो रे,
 गढ अरबुदरी जान महाराजा ॥ ए वेशी ॥

॥ पुहवीगणनो राजीव रे, शूरपालण शूरपाल ॥
 महाराजा ॥ दम दांतोने फोज लेइने रुढेजी आवे ॥ चं
 डावती नगरी धणी रे, वीरधवल ठोगाल महाराजा
 ॥ द० १ ॥ ए वेहु एकमतुं थपा रे, रूठो तोपर था
 ज म० ॥ द० ॥ खेजि रण रस खांतछुं रे, जेइ
 ताहारुं राज म० ॥ द० ॥ २ ॥ सारथपतिनें रो
 कियो रे, नामें जे बलसार म० ॥ द० ॥ ते साथे वे
 नूपति रे, राखे स्नेह अपार म० ॥ द० ॥ ३ ॥ दा
 ता जग व्यवहारीयो रे, सद्धनें बांधव तुल्य म० ॥
 ॥ द० ॥ पेशकसी करता चली रे, मागे नही काइ
 मूल्य म० ॥ द० ॥ ४ ॥ पुत्रपणे बांधव परें रे,
 जाणे एहनें नूप म० ॥ द० ॥ तो ते किम सहेशे प
 द्यो रे, देखी दुःखने कूप म० ॥ द० ॥ ५ ॥ एणे
 जाते आवते रे, कीधो थमछुं नेह म० ॥ द० ॥ तु

म नगर वाता वस रे, ते नणी मूको एह म०॥६०॥
 ॥ ६ ॥ कहेवाळ्युं महारे मुखे रे, अम जूपें इम तु
 क्त म० ॥ ६० ॥ सत्कारी मूको परो रे, पालो राज्य
 सजुक्त म० ॥ ६० ॥ ७ ॥ खमियें पण एकवारनी
 रे, कीधो वरांसे वंक म० ॥ ६० ॥ पडिया पण मुख
 हे ग्रहा रे, दंत फिरि निज अंक म० ॥ ६० ॥ ८ ॥
 वाहाली पाटु गायनी रे, जो थापे पयपूर म० ॥
 ॥ ६० ॥ मीठा माटे खाइयें रे, एतुं पण मामूर म०॥
 ॥ ६० ॥ ९ ॥ धनपति कदिहिक पांतरे रे, तो ते कि
 म न खमाय म० ॥ ६० ॥ खिरतो पण दल अंगणे
 रे, फलियो तरु न कपाय म० ॥ ६० ॥ १० ॥ अ
 म जूपें वाहें ग्रहो रे, ते दुःखीयो किम थाय म०॥
 ॥ ६० ॥ गूजे जे वन केसरी रे, त्यां कुंजर न बसा
 य म० ॥ ६० ॥ ११ ॥ गूर अठे तुं साहेवा रे, पण
 तुज कटक अलण्य म० ॥ ६० ॥ सायरमां जिम सा
 घुउं रे, थाइश त्यां तुं गढण्य म० ॥ ६० ॥ १२ ॥
 ते एहनें मूकावशे रे, तुजने शिक्षा देइ म० ॥ ६० ॥
 एह वातें मत थाणजे रे, शंका बल उमहेइ म० ॥
 ॥ ६० ॥ १३ ॥ थाइश मां तुं आकलो रे, तुजवज
 ने विश्वास म० ॥ ६० ॥ वे जण उपय एकतुं रे, ए

इटने रे, न गयो साजन शर्म म० ॥ ४० ॥ तो थ
 म सरिखाने रहे रे, केहो नृपनो धर्म म० ॥ ४० ॥ २३ ॥
 अन्यायी तुज राजिया रे, आख्या जेह उमंग म० ॥
 ॥ ४० ॥ तेहने पण समंजावहुं रे, खग साखें रण
 जंग म० ॥ ४० ॥ २४ ॥ सर्व मनोरथ एहुना रे, पू
 रीश हुं इण्यार म० ॥ ४० ॥ जा कहेजे तुज पूजलें रे,
 आख्या हुं निरधार म० ॥ ४० ॥ २५ ॥ दूत गयो पागो
 वही रे, घोषे खमें अनूप म० ॥ ४० ॥ छाल कही ए
 अहारमी रे, कातिविजय करी छुं म० ॥ ४० ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सिंहासनयो कठियो, बहिं मंनपमां थाय ॥ ६
 छा तिहां संग्रामनी, वज्रदावे सिद्धराय ॥ १ ॥ रणरा
 तो मातो मदे, तातो कृत्रीय तेज ॥ आख्या नृप मल
 या कन्दे, कहेवा रहस्य सहेज ॥ २ ॥ महुलामां मज
 या नणी, ये रहेवा निर्देश ॥ चतुरंगी सेना सजी, ध
 रे थाप रणवेश ॥ ३ ॥ असचारी कीधी गजे, रण रं
 गें शणगार ॥ नीसरियो पुरथी महा, धिंग कटक वि
 स्तार ॥ ४ ॥ नवल दमार्मा गडगड्या, वागां बढ र
 णतूर ॥ रसिया नाद जंचेरिया, थमिंग चलटघो शूर
 ॥ ५ ॥ उपां ये करवालने, टोपां कै पहेरंत ॥ तोपां

केता सक्क करे, धोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे ह्य
 ह्येपणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शूरा तणे,
 वधिर दूजं ब्रह्मं ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा
 रण खेलाड ॥ रणथंजे जई वागियां, फोजां तणां कमा
 ड ॥ ८ ॥ वे वल आमा साहमां, अडियां आई सवां
 हिं ॥ तामलिथणपेठा वही, तारू नड रण मांहिं ॥९॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप वे नडे सिद्ध
 रण तणा दाव रमता न चूके ॥ वनड वनना महा
 मद ठक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें आई ठूके ॥
 ॥ सजे ० ॥ १ ॥ गज चढयो जेह ते गज चढयाथी
 अडे, रथ चढयो रथचढयाथी न मूंजे ॥ तुरंगधर तुरं
 गधर साथ ऊपटां लीये, पायचर पायगां संग फूजे
 ॥ सजे ० ॥ २ ॥ वजत शरणाईयां राग सिंधु सिरे, गुहिर
 निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर नैरव न
 णी, युद्ध रस निरखवा जई प्रयुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सु
 एत रणनाद वनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ज्यो
 विगुण फूलें ॥ बटक बटकी पडे कवच नीचां तणां,
 जेदीयां तिखण रोमाच शूलें ॥ स० ॥ ४ ॥ शस्त्र
 चिजकार ऊवकार जलनो जिस्पो, गाहीयो गयणवर

केता सङ्ग करे, धोपां केई धरंत ॥६॥ गज गाजे ह्व
 हेपणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहानाद शुरा तणे,
 वधिर दूउं ब्रह्मं ॥७॥ कवच हरा आयुधधरा, पूरा
 रण खेलाड ॥ रणथंजे जई वांगियां, फोजां तणां कमा
 ड ॥ ८ ॥ वे दल आमा साहमां, अडियां आई सवा
 हिं ॥ तामलिअणपेठा वही, तारू नड रण माहिं ॥९॥

॥ ढाल ओगणीशमी ॥ कडखानी देशी ॥

॥ सजे फोज अति चोज नृप ये नडे सिद्ध
 रण तणा दाव रमता न चूके ॥ ठनड वनना महा
 मद ठक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें आई ठूके ॥
 ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढयो जेह ते गज चढयाथी
 अडे, रथ चढयो रथचढयाथी न मंजे ॥ तुरंगधर तुरं
 गधर साथ ऊपटां लीये, पायचर पायगां संग फूजे
 ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणार्थ्यां राग सिंधु शिरें, गुहिर
 निशाण चोसाल गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर जैरव न
 णी, पुढ रस निरखवा जई प्रपुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ सु
 एत रणनाद ठनमाद रस पूरिया, देह ससनेह ग्वां
 विगुण फुल्लें ॥ ब्रटक ब्रटकी पडे कवच नीचां तणां,
 जेदीपां तिस्रण रोमांच शुजें ॥ स० ॥ ४ ॥ शत्रु
 चितकार ऊचकार जलनो जिस्पो, गादीयो गपणवर

केता सङ्ग करे, धोपां केई धरत ॥६॥ गज गाजे
 हेपणें, रथ चितकार अखंम ॥ सिंहनाद शरा तणे
 वधिर दूतें नहंम ॥७॥ कवच दूरा आयुधधरा, पूरा
 रण खेजाड ॥ रणथंजे जई वागियां, फोजां तणां कमा
 ड ॥ ८ ॥ वे दल आमा साहमां, अडियां थाई सजा
 हिं ॥ तामलिअणपेवा वही, तारू नड रण माहिं ॥९॥

॥ ठाल आगणीशमी ॥ कडखानी वेशी ॥

॥ मजे फोज अनि चोज नृप ये नडे सिद्ध
 रण तणा दाव ममता न चूके ॥ ठनड बनना महा
 मद ठक्या हाथिया, जेम गिरिवर तडें थाई तूके ॥
 ॥ सजे० ॥ १ ॥ गज चढ्या जेह ने गज चढ्यायी
 अडे, म्य चढ्यां म्यचढ्यायी न मंजे ॥ तुरंगधर सु
 गधर साथ ऊपटी लीय, पापधर पायगा संग फुजे
 ॥ सजे० ॥ २ ॥ वजत शरणार्थ्यां राग सिंधु शिरें, गुदिर
 निशाण चोमाज गुंजे ॥ पूर रणतूर रव वीर, जैरव न
 णी, पुढ रस निरखवा जई प्रपुंजे ॥ स० ॥ ३ ॥ ए
 णत रणनाद ठनमाद रस पुरिया, देह ससनेह ज्यो
 दिगुण फुल्ले ॥ त्रटक त्रटकी पडे कवच जीयां तणां,
 जेदीयां तिसवण रोमांच शुजे ॥ स० ॥ ४ ॥ नख
 चितकार ऊबकार जजनो जिम्पो, गादीयो गवणार

पुनरीके ॥ खडग कावोल सृपदंत खेले तिहा, फेर न
 ही जलधि रणमा रतीके ॥ स० ॥ ५ ॥ सुदृढ वच
 नोपरि यधन प्रतिहत करे, सिंहनादें महा सिंहनादें ॥
 शुजपुगा फालणे हुज गुगा फाजता, करत रण नये
 लीजा विवाद ॥ स० ॥ ६ ॥ वीर शिरवाज रण घालमा
 उरसुस्या, कर्ध्वमुख तास रुचि तेम शोनी ॥ ज्यजित
 मन रोप पावकथकी नीसरे, धूम धोरणी जिती गग
 न घोनी ॥ स० ॥ ७ ॥ करत लजकार हलकार नड को
 पिपा, घलत धमकारणुं शेष मोले ॥ फर ग्रही ठाज
 धुंताल धुंफल रसें, ठपल वंठाज करवाल तोले ॥ स० ॥
 ॥ ८ ॥ जाति हुज वीर्य गुण वंश उदनायता, वंदिजन
 प्रयल शूरा जगाडे ॥ उमगिया योध बल बोध करि
 थापणा, रण तणी सवल बाजी फर ॥
 ॥ ९ ॥ अश्व सुरताल पुढतालपी कप ॥ १० ॥
 वर चढी सूर लायी ॥ दिशि ॥ ११ ॥ यरुण रं
 धरा, जाणे विण काल ॥ स० ॥ १० ॥
 सगग शर धार वरपण लगी ॥ दिशि, वगग वरहं
 चले थगग गेही ॥ रणण रणकार जहवी (फरस
 तणा वागिया, सिद्ध सुददाण नाखे जयेही ॥ स० ॥
 ॥ ११ ॥ खडग खटकार गजदंत कप ॥ १२ ॥ खा

पगें, दीठा आवत तेण ॥ सं० ॥ सदस्ता हरपें सामो
 दो. आवे थाप रसेण ॥ सं० ॥ कु० ॥ १२ ॥ मलि
 या हेजे दरखता, टाली वैर विरोध ॥ सं० ॥ मोहो
 मोहि प्रकाशीत, पूरण प्रेम निबोध ॥ सं० ॥ कु० ॥
 ॥ १३ ॥ हर्ष तणे आसू जसे, ठाखो विरह दुताश
 ॥ सं० ॥ नेह ननांकुर पल्लव्या, बाध्या रंग विजात
 ॥ सं० ॥ कु० ॥ १४ ॥ जगमो चंदन सीपजुं, तेथी
 शशिकर पांग ॥ सं० ॥ शशिकरथी पण सीपजो, ना
 हाजानो मंयांग ॥ सं० ॥ कु० ॥ १५ ॥ कृष्ण एक इ
 कथारमं, निरवाहे सुख शीत ॥ सं० ॥ पैनातिक
 (जाटचारणादिक) बाध्या तिमंन सहे वासर कीत
 ॥ सं० ॥ कु० ॥ १६ ॥ मिह नृपें निजपूष प्रये, पय
 राध्या नृप दोष ॥ सं० ॥ निद्र्या निज निज परिक
 रें, थाध्या जवनें सोप ॥ सं० ॥ कु० ॥ १७ ॥ गेंनी
 सुख संजारीनें, राणी मत्तया ताम ॥ सं० ॥ धोता
 बी सुमरादिकें, आदर देष प्रकाम ॥ सं० ॥ कु० ॥ १८ ॥
 तुग्त करावी मद्दावनें, अगनादिकनी नकि ॥ सं० ॥
 सैनिक सर्व मंतोदियां, नूपाजें नती युक्ति ॥ सं० ॥
 ॥ कु० ॥ १९ ॥ नाम अथुर आवें मद्द. वेतां सुपना
 लादि ॥ सं० ॥ इदि निदाती कृमरनी, विप्र लाहे

चित्तमाहि ॥ स० ॥ कु० ॥ २० ॥ सुत आगें जनका
 दिक्के, नांखि निज निज वात ॥ स० ॥ मलयायें कुम
 रें बली, नांख्या तिम अचदात ॥ स० ॥ कु० ॥ २१ ॥
 घोये खंमें वीशमी, नांखी अनुपम ढाल ॥ स० ॥
 कांतिविजय कहे सांजलो, आगल वात रसाल ॥
 ॥ स० ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

॥ वीरधवल पुत्री तणां, निसुणी दुःख विरतंत ॥
 विपम कर्मगति जावतो, तनुजानें पनणंत ॥ १ ॥ हें
 हे नृपकुल कपनी, पोषी लाम विलास ॥ रस्यडी दि
 शि दिशि रंक ज्यों, पढी कर्मनें पास ॥ २ ॥ सह्यां
 विविध दुःख आकरां, कोमल थंगें एम ॥ व्यसन म
 होदधि दुस्तरें, तरी तरी परें केम ॥ ३ ॥

॥ ढाल एकवीशमी ॥ नगर रतनपुर जाणीयें ॥ ए
 देशी ॥ अथवा, उठी जावना मन धरो ॥ ए देशी ॥

॥ शूरपति मंहीपति बोले ए, पडिया मामा मोलें ए,
 खोले ए, निज मन दुःखनी गांठडी ए ॥ १ ॥ हा पुत्री
 हा पापीयो, कुमति दशायें व्यापीयो, आपीयो, कूडो
 कलंक तादरे शिरें ए ॥ २ ॥ काज कसुं में घण जा
 ए, जल पीधुं ते विण ठाणुं, अतिताणुं, तुज सायें

में दुर्मति ए ॥ ३ ॥ गुनहो ते सवि माहरो, खम
 जो गुणवंती खरो, थाफरो, मननो हवे दूरें करो ए
 ॥ ४ ॥ जित कोषा तुं सुंदरी, पारजियायत गुणनरी,
 दिलवरी, करीयें ते हियदे धरो ए ॥ ५ ॥ परमारथ
 नी झापिका, निर्मलकुलनी दीपिका, वापिका, तुं सत्य
 शीत कमल तणी ए ॥ ६ ॥ वचन सुणी सुतरा त
 णा, मजया ते धरी धारणा, कारणों, दुःखनां तुरत
 निमारीयां ए ॥ ७ ॥ धन्य धरमां तुज मती, साहत
 करुणा रनि ठनी, घृतिगति, सूरिमि गुनरुत तुज न
 जां ए ॥ ८ ॥ ईम मद्रावत गुण नाग्यना, नृपारिक
 यश दाग्यना, जण किना, मजहं मद्रावतने तिहा ए
 ॥ ९ ॥ जनकादिक पुत्रे निदां, वग्य कहा सुन ते कि
 दा, तीयो इदां, पायाडे ज वाणीयें ए ॥ १० ॥ पुत्र
 कहं वाणिज धरें, ठानां किदा कृण वरु, पण सरें,
 खबर नहीं ते ते तणी ए ॥ ११ ॥ तेईनें पुत्रां प्यो,
 कनरशे नहीं पावरो, थाकरो, करतो ते दयाइशे ए
 ॥ १२ ॥ ततरुण सुनटें थाणियो, पग थाधानें ना
 णियों, वाणीयां, दुःख पीडयो रांवे धणुं ए ॥ १३ ॥
 कहें रे दुर्मति छं कखो, पुत्र छेइनें किदा धया, ताशे
 प्यो, किम तुजयी थम नंदनो ए ॥ १४ ॥ करनु प

द्यो तुज शिरें, तेतो करहुंदिज खरें, पण अयसरें, सु
 त जावा देखे नही ए ॥ १५ ॥ वीहीनो ते कहे तो था
 पुं, पुत्र तुमारो करी थापु, दुःख टापुं, माहरो जो दूरें
 करो ए ॥ १६ ॥ ठोडो मुज सकुटुंबनें, जो नवि पा
 ढो बिटवनें, तो मुनें, देतां येला ठे नही ए ॥ १७ ॥
 हरखा तस वचनें सवे, मान्युं वचन तथा तवे, ति
 ण जवें, पुत्र थाणीनें सोंपियो ए ॥ १८ ॥ निरख्यो
 बालक सुंदरु, रूपें जाणे पुरंदरु, मंदिरु, सौम्य कला
 नो जलकतो ए ॥ १९ ॥ नूपादिक सवि हरखीया, पुत्र
 रतन गुण परखीया, निरखीया, थंग सकल लक्षण
 नखां ए ॥ २० ॥ राय कहे बजसारनें, कहेरेसी निर
 धारिनें, कुमारनें, कीधी नामनी थापना ए ॥ २१ ॥ ते
 कहे बज इति थापना, कीधी ठे करी कल्पना, चलापना,
 खित माने ते कीजीये ए ॥ २२ ॥ एहवे नंदन रस ग्रह्यो,
 तात तणे खोले रह्यो, गह गह्यो, लेवा धननी गांवडी
 ए ॥ २३ ॥ दादाने कर गांवडी, सो दीनारनी दीउडी,
 कथडी, बालक ते खांची लीये ए ॥ २४ ॥ जोराथी
 गाढी ग्रही, मूकाव्यो मूके नही, दादे वही, शतचल
 नाम त्यां थापीपुं ए ॥ २५ ॥ सारथपतिनें ठोडीयो,
 घरवाखर लूटी लीयो, जीवित दीयो, निज नापित

हाल पायोशमी ॥ नणजारांनी देशी ॥

॥ चिन्न बूजो रे कोई ठामो मोडनी निव, लागो वि
 पयपाहिणीयकी, नवि बूजो रे ॥ चि० ॥ एतो विरमो
 काल पुलिंद, ठल जोये जानो तक्री ॥ न० ॥ १ ॥ चि०
 ॥ थेंतो 'साकंड' उरामाही, घुता काज थनादिना
 न० ॥ चि० ॥ घोष न पाय्यो त्याहिं, खोषा फोकट के
 ई दिना ॥ न० ॥ २ ॥ चि० ॥ बरजो विषय कपाय, ए
 दमां स्याद न को थळे ॥ न० ॥ चि० ॥ रदेशो जो ल
 पटाय, पठतावो दोशो पर्वे ॥ न० ॥ ३ ॥ चि० ॥ यर्जो
 हिंसा दूर, सत्य पदो परधन तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ ठां
 मो मधुन नूर, परिग्रह मूर्छा मति नजो ॥ न० ॥ ४ ॥
 ॥ चि० ॥ क्रोधादिक रिपु चार, संगति एहनी ठामजो
 ॥ न० ॥ चि० ॥ प्रेम जाव संचार, तजजो द्वेष नमा
 दजो ॥ न० ॥ ५ ॥ चि० ॥ कलहनें अन्यायान, चा
 डी रति थरति तजो ॥ न० ॥ चि० ॥ पर परिवादावा
 न, न करो माया मृषा रजो ॥ न० ॥ ६ ॥ चि० ॥ मि
 थ्यामति मय साल, काढी नाखो चिन्थी ॥ न० ॥
 ॥ चि० ॥ कुगति तणा ए जाल, ठाण श्रद्धारह नित्य
 थी ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ जीतो इंडिय गाम, मन मां
 फडलुं वश करो ॥ न० ॥ चि० ॥ बावो वित्त सुजाम,

शील सुरंगो आदरो ॥ न० ॥ ७ ॥ चि० ॥ परचो य
 न्यास, अहनिशि जागो जावना ॥ न० ॥ चि० ॥ सु
 दीये विलास, कारण एता पावना ॥ न० ॥ ८ ॥ चि० ॥
 त्रिम ए संसार, तन धन यावन कारिमां ॥ न० ॥ चि० ॥
 जात न लागे वार, जिम कायरनो शूरमां ॥ न० ॥ ९ ॥
 ॥ चि० ॥ कृण केदनो जगमां हि, स्वारथनो सद्धको र
 ॥ न० ॥ १० ॥ चि० ॥ स्वारथ विण नर प्राहि, याजाने
 दगां ॥ न० ॥ ११ ॥ चि० ॥ पुण्य अने वज्रो पाप, ए
 ज साथे आवशो ॥ न० ॥ चि० ॥ नागवज्रो दुरा
 प, तिहां नहिं को वेहेवावजो ॥ न० ॥ १२ ॥ चि० ॥
 जुंन तणुं जिम ठाण, नरनव धर्म विना निम्हो ॥ न० ॥
 ॥ चि० ॥ सुजहा नवनव प्राणि, धर्म नही मज्जरो
 ह्यो ॥ न० ॥ १३ ॥ चि० ॥ दश दृष्टान दृष्टं न, म
 नव नव पुण्ये लही ॥ न० ॥ चि० ॥ पाम्या योग
 लंन, सकल करो हवे ते रहो ॥ न० ॥ १४ ॥ चि० ॥
 यावो अति वजमाज, अवसर फिरि नही आव
 शे ॥ न० ॥ चि० ॥ लाख गमे जंजात, धर्म माग ति
 य आवश ॥ न० ॥ १५ ॥ चि० ॥ नेतो विसर्मा अ
 प, कहेसो पढी जाणुं नहिं ॥ न० ॥ चि० ॥ टाजो
 नर संसार, निर दारक संसार गही ॥ न० ॥ १६ ॥

॥ चि० ॥ धर्म तणो उपवेश, चंद्रयशार्थे इम दीपो

॥ ज० ॥ चि० ॥ रीज्या दोय नरेश, पुरजन सघलो

हरखियो ॥ ज० ॥ १४ ॥ चि० ॥ चोथा खंमनी डा

ल, एह कही वावीशमी ॥ ज० ॥ चि० ॥ कातिवि

जय जयमाल, बरिये सुणतां मनगमी ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ गुरनरेश अबरै, पृष्ठे गुरुने एम ॥ जगवन्

मलया जलथकी, ऊखें वतारी केम ॥ १ ॥ सुख शा

तायें जलधिथी, आणी वतारी कंठ ॥ कारण ते सु

णवा तणो, ठे अमने वतकंठ ॥ २ ॥ केवलनाण दि

वायरू, महिमावंत भदंत ॥ चंद्रयशा खरीश्वरू, इम

कारण पनएत ॥ ३ ॥

॥ डाल त्रेवीशमी ॥ तीरथ ते नमुं रे ॥ ए देशी ॥

॥ सुण राजेसर चित्त धरी, जलनिधि तरी रे, म

लया मीन सहाय, कारण ते कहूं रे ॥ वेगवती ना

में हती, जेह पालती रे, बालानें धाय माय ॥ का० ॥

॥ १ ॥ दुर्धर्मे कासे मरी, ते अवतारी रे ॥ जलनिधि

मां गजमीन ॥ का० ॥ पढतां नारम सुखथकी, अति

दुःखथकी रे, श्रीनवकारमां लोन ॥ का० ॥ २ ॥ गज

मत्सनें वांसे पढी, जाणे चढी रे, कमजा गजनें पूंठ

॥ का० ॥ गाहें नवपत्त ल्यां चण्या, भनणें सुण्या रे. मीनें
 मनमां तुव ॥ का० ॥ २ ॥ ईहापोह कळा घडी, मीनें
 घडी रे. वीजो मन नव आण ॥ का० ॥ मीत नाजी नि
 रगना, मन झगळता रे. नाथ्यो प्रेमनां व्याप ॥ का० ॥
 ॥ ॥ ॥ जोतो मज्जया चलाली. पुथी दुःखी रे, लागो
 विनायक मीत ॥ का० ॥ ३ ॥ ईहें न सो आणडी, एहमां
 पडी रे. दुर्दिनिनिं आभीत ॥ का० ॥ ४ ॥ सुजणो की
 ई न संयत नवि संयत रे, नपकाकनां काम ॥ का० ॥
 तोपण मृक इहो यही, रुतुं नकी रे. तिथी दोणे वग
 नीनु राम ॥ का० ॥ ५ ॥ यदपि कदाचित् ए वती,
 दुःख्य ॥ ५ ॥ राम नयन नाग ॥ का० ॥ ६ ॥ ईम मि
 नि नग माजतं नग पंक्तं ॥ मृही यत्त संयाग ॥
 ॥ का० ॥ ७ ॥ का० ॥ ८ ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥
 हुन्य भग्नो कन्य गय ॥ का० ॥ नद्वे दिवह पुरा,
 जलपुगनां रे. वात्रां जलमा जाय ॥ का० ॥ ११ ॥
 मलजय दुर्गा जगतां मां नागया रे. वात्रां वासी
 दिवेह ॥ का० ॥ १२ ॥ का० ॥ यादव यादवना. मन
 वागनां रे, अमनपदना रेह ॥ का० ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥
 १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥
 ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥

॥ १०० ॥ निज श्रीराम गुण लक्ष्म करे, पादुका
 कान्त मंद हरेन है ॥ धन्य धरणी ते नम, विजला
 मोह समती जगंत है ॥ वि० ॥ १०० ॥ भद्रनन्दन
 सोई करी, नातो दिशि धारी लक्ष्म है ॥ १०१ ॥
 मां पदयो, नृपयो पत्नी तारयो नेक है ॥ १०२ ॥
 पार लक्ष्मी अष्टमी लक्ष्मी, श्रीनं दिन मेरी मंत्र है ॥
 ॥ १०३ ॥ मही पद्म गोदुर्गे, योग पञ्चपालक देह है ॥
 ॥ १०४ ॥ मदिदी इज्जत जन आरता, वेला तम हा
 पा शाय है ॥ नोजननो अरणी धरि, आन्यो तेह पा
 है शाय है ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ पद्म पाज्या गोदातीपा,
 आदे पद्म मदिपी सोदि है ॥ शायर जन पण्ण आचरे,
 कटणा मन अयसर मदि है ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ स्त्रीर त
 छुं नाजन मही, पण्णपालक अनुमति लेप है ॥ १०९ ॥
 वे समीर समोवरे, क्षीतल जल पानक केय है ॥ ११० ॥
 ॥ १११ ॥ मूर्ते पदेतो अनुक्रमे, चिते विन एम सुद्ध है ॥
 मोक्षने आपी जहुं, होय तो मुज जनम कयठ है ॥
 ॥ ११२ ॥ चिंतयता इम लामुद्धो, मलीपो मुनि
 पुण्य पसाय है ॥ मान तणां उपवासिपो, पारण दिन
 टाणे शाय है ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ मुनि निरखो मन हर
 लियो, अहो सफल दिवस मुज आज है ॥ प्रतिजा

जी एह साधुनें, सारुं मुज वंजित काज रे ॥ सा० ॥
 ॥ १८ ॥ धारी मनशुं एहबुं, कर जोडी आगज आ
 रे ॥ पनपो साधु प्रत्ये इम्यो, पय बुद्ध अने मुनिग
 रे ॥ प० ॥ १९ ॥ मुज उपर करुणा करी, बोझोरो
 फासु पय एह रे ॥ इय्यादिकनी बुद्धता, निरपे मु
 नि बोझोरे तेह रे ॥ नि० ॥ २० ॥ बाध्युं अनर्गल ना
 वयो, मदनें बुन कर्म निशेव रे ॥ मुनिने प्रणमी आ
 वियो, सरपासें लई पय जोव रे ॥ स० ॥ २१ ॥ आप
 कृतारथ मानतो, पीवे पय शेव तिकोण रे ॥ विरम
 तटे सरोवर तपो, जज्ञ पीवा वेगो सोव रे ॥ ग० ॥ २२ ॥
 पग लपटयो निहंथी खशी, पडियो जज्ञ कंदे जाव रे ॥
 मरण लही ए पुरवरे, मदनप्रिय दान पमाव रे ॥
 म० ॥ २३ ॥ विजय नरेगरेने परें, तुन रत्न पणे उ
 त्पन्न रे ॥ कंदर्प नामें थापियो, तल तात मरण
 संपन्न रे ॥ त० ॥ २४ ॥ पाट वितानो आकामी, राई
 वेगो पृथिवीपाज रे ॥ सोवे मर्म ए कर्दा, कानें सो
 बीगमी टाज रे ॥ का० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीशुं प्रियमित्र स्या, विजयंतो एहनाज ॥ ४
 डा नडा नारिहो, बाधि बैर निदान ॥ १ ॥ अथ दिन

प्रिय मित्रनै, निल ललनां छेड़ लार ॥ यद्दु धनंजय जे
 टवा, चाखो सपरीवार ॥ १ ॥ पुंयें बहेतो अधमगें, आ
 ल्यो ल्यां बड हेठ ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे
 ल्यां निल डेर ॥ २ ॥ आपणें साहमो मल्यो, अथ
 न सुकृत ए सुंम ॥ चात्रा थाशे निःफला, एहपी अ
 थन थलंम ॥ ३ ॥ इम कहेती प्रियसुंदरी, जन वा
 इन थोनाड ॥ करे परितह साधुनै, पापिणी राम
 कुहाडि ॥ ४ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥ जेतोदानें गोरीमें ढोला,
 पढीरे नगारारी गौर ढोला, जाग मजा जे
 रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देखी ॥

॥ उदय आव्यो मुजने इहां हांजी, परितह मो
 टो एह हांजी, चिंति एहबुं रे, मुनि काउस्सग तावे ॥
 त्रिविधे धारी रे, आत्म वोलिरावे ॥ अ० ॥ अन्न
 वसतियादिकें हांजी, आगारें निरयेह ॥ चि० ॥ १ ॥ पद
 अंगुष्ट नखें ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, ध्या
 न महोदधि लहेरमा हांजी, जीसे मुनि अविकार हां
 जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांघी अमलुं वाकरी हांजी, कनो
 ए हठ मानि हांजी, कहेती एहबुं रे, कोपो मठराली ॥
 कूमतें व्यापी रे, आचरणें काली ॥ अ० ॥ कहे सुंदरी

नी एह साधुनें, सारुं मुज वंछित काज रे ॥ सा० ॥
 ॥ १७ ॥ धारी मनगुं एहबुं, कर जोडी आगल थाप
 रे ॥ पनए साधु प्रत्ये इम्यो, पय बुद्ध अने मुनिराव
 रे ॥ प० ॥ १८ ॥ मुज उपर करुणा करी, बोझोरो
 फासु पय एह रे ॥ इत्यादिकनी बुद्धता, निरखे मुं
 नि बोझोरे तेह रे ॥ नि० ॥ १९ ॥ बांधुं अनर्गल ना
 वथी, मदनें गुन कर्म विशेष रे ॥ मुनिने प्रणमी था
 वियो, सरपालें लई पय जेव रे ॥ स० ॥ २० ॥ थाप
 कृतारथ मानतो, पीने पय शेव तिकोप रे ॥ विदम
 तटें सरोवर तणे, जल पीवा बेगो सोय रे ॥ ज० ॥ २१ ॥
 पग लपटयो तिहाथी खगी, पडियो जल छंदे जाय रे ॥
 मरण लही ए पुरवरें, मदनप्रिय दान पसाय रे ॥
 म० ॥ २२ ॥ विजय नरेशरने परें, सुत रस पणे व
 त्पन्न रे ॥ कंदर्प नामें थापियो, तल तात मरण
 संपन्न रे ॥ त० ॥ २३ ॥ पाट बितानो आरुमी, यई
 बेगो पृथिवीपाल रे ॥ चोये सभें ए कही, कांतें थो
 वीशमी ढाल रे ॥ का० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुंदरीगुं प्रियमित्र त्या, मिलगतो एकतात ॥ रु
 डा नडा नागिनुं, बांधे बैर निदान ॥ १ ॥ अथ द्वि

प्रिय मित्रने, निज ललना लेइ लार ॥ यह धनंजय जे
 दवा, चाल्यो सपरीवार ॥ १ ॥ पुंय बहेतो अधमने, आ
 क्यो ज्यो यह देव ॥ इक मुनि साहमो आवतो, देखे
 ह्यो निज देव ॥ ३ ॥ आपणने साहमो मज्यो, थछ
 न मुक्त ए मुंन ॥ यात्रा यात्रो निःफला, एहथी थ
 छन अखंन ॥ ४ ॥ इम कहेतो प्रियसुंदरी, जन वा
 दन योनाड ॥ करे परिसह साधुने, पापिणी राम
 शहि ॥ ५ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥ जेतोदाने गोरीमें ढोला,
 पढीरे नगारारी ठोर ढोला, जाग मजा जे
 रे रणसिंघ जागोरा ॥ ए देशी ॥

॥ उदय थाव्यो मुलने इहां हांजी, परिसह मो
 ने एह हांजी, चिंति एहवुं रे, मुनि काउस्तग तावे ॥
 त्रैविषे धारी रे, थातम वोसिरावे ॥ आ० ॥ अन्नछ
 वसतियाविके हांजी, थागारे निरयेह ॥ चि० ॥ १ ॥ पद
 थंगुष्ट नखे ठवी हांजी, लोचन तारा धार हांजी, घ्या
 न महोदधि लहेरमां हांजी, जीजे मुनि अधिकार हां
 जी ॥ चि० ॥ २ ॥ बांधी थमशुं वाकरी हांजी, ऊनो
 ए इठ मांनि हांजी, कहेतो एहवुं रे, कोषी मठराजी ॥
 कुमते व्यापी रे, आचरणे काली ॥ आ० ॥ कहे सुंदरी

पुर पृथिवीठाण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रि
 यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जां० ॥ ४ ॥ देखी वै
 र संचारिछुं, कोपे कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बि
 हूं ऊपर जई, नाखे निशिमां घरजिंति रे लाल ॥ जां० ॥
 ॥ ५ ॥ छुन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण थका
 ल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र
 महाबल बाल रे लाल ॥ जां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीना
 जीव ते, दुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी
 नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जां० ॥
 ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांधुं वैर रे
 लाल ॥ रुझा नझा नारिछुं, तस फल इहां जाधां पेर
 रे लाल ॥ जां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संचारती, तेह असुरी
 आवधें जाण रे लाल ॥ महाबलनें हणवा बली, रस
 मांमे उदम थाण रे लाल ॥ जां० ॥ ९ ॥ पुण्य प्र
 नावें एहनें, न सकी काई करण थनिष्ट रे लाल ॥ सू
 तो निशि देखी गृहे, करती वपसर्गह डुट रे लाल ॥
 ॥ जां० ॥ १० ॥ बल विनूषण कुमरना, हरियां इणें
 क्रोधें व्याप रे लाल ॥ बट कोटरमां भूकीयां, लाधां
 ते कुमरनें थाप रे लाल ॥ जां० ॥ ११ ॥ प्रथम मि
 लनमें थापिठ, कन्यायें कुमरनें द्वार रे लाल ॥ लख

मीठेज मनोहर, सुखनमाला. अनुकार रे लाल ॥
 ॥ नां० ॥ १२ ॥ सुतो निरखी कुमरन, तैद पण ह
 रियो निमिमाहि रे लाल ॥ ज्यंतरीये मंत्रिरयकी,
 संनारी चैर अयाद रे लाल ॥ नां० ॥ १३ ॥ गतन
 य बहिननी प्रोनथी, पाप्यो जई कनका बंध रे लाल
 ॥ कोढी जये पण रत दीये, हे विषमी प्रेमनी गंठ रे
 लाल ॥ नां० ॥ १४ ॥ सोये खंमे सुंदर, घई सनारी
 शमी बाल रे लाल ॥ काति कहे हवे पूवरी, इहां वी
 रधवल नूपाल रे लाल ॥ नां० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणो अबर विस्मित होये, वीरधवल नूपाल ॥
 पूढे इम केवली प्रत्ये, थापी करतल जाल ॥ १ ॥
 स्वपंगर मंगण विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मज्यो
 नही मजया प्रत्ये, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे
 कुमर कुमरी मनै, निज चरित्रगत जाणि ॥ हात चरित्र
 विचित्र ते, जाखे गुरु तेणें गण ॥ ३ ॥ कुमर मली
 पहेलो जई, थाप्यो पामी हार ॥ कनकार्ये नव चैर
 थी, विरच्यो कूड प्रकार ॥ ४ ॥ मजया पुत्री उपरें,
 कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, थाखे
 सुगुरु सदर्थ ॥ ५ ॥

पुर पृथिवीगण रे लाल ॥ आवी देखे विलसता, प्रि
 यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जां० ॥ ४ ॥ देखी वै
 र संनारिखुं, कोपे कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बि
 हूं कपर जई, नाखे निशिमां घरनिंति रे लाल ॥ जां० ॥
 ॥ ५ ॥ गुन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण थका
 ल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, थयो पुत्र
 महाबल बाल रे लाल ॥ जां० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो
 जीव ते, दुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी
 नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जां० ॥
 ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परनवें जे बांधुं वैर रे
 लाल ॥ रुझा नझा नारिखुं, तस फल इहां लाधां घेर
 रे लाल ॥ जां० ॥ ८ ॥ पूरव वैर संनारती, तेह थसुरी
 अवधें जाण रे लाल ॥ महाबलनें हणवा बली, रस
 मांमे उद्यम थाण रे लाल ॥ जां० ॥ ९ ॥ पुण्य प्र
 जावें एहनें, न सकी काई करण थनिष्ट रे लाल ॥ सू
 तो निशि देखी गृहे, करती उपसर्गह डट रे लाल ॥
 ॥ जां० ॥ १० ॥ वस्त्र विनूपण कुमरनां, हरियां इणें
 कोधें व्याप रे लाल ॥ बट कोटरमां भूकीयां, लाधां
 ते कुमरनें थाप रे लाल ॥ जां० ॥ ११ ॥ प्रथम मि
 लनमें थापिउ, कन्यायें कुमरनें द्वार रे लाल ॥ लख

मीपुंज मनोहरू, सुरवनमाला अनुकार रे लाल ॥
 ॥ जा० ॥ १३ ॥ सुतो निरखी कुमरनें, तेह पण ह
 रियो निशिमाहिरे लाल ॥ व्यंतरीये मंदिरयकी,
 सनारी बैर अथाह रे लाल ॥ जा० ॥ १३ ॥ गतज
 य बहिंननी प्रोतयो, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल
 ॥ कोढी नवें पण रस दीये, हे विपमी प्रेमनी गंत रे
 लाल ॥ जा० ॥ १४ ॥ चोये खमें सुंदरू, थई सत्तावी
 शमी ढाल रे लाल ॥ काति कहे हवे पूठगे, इहां बी
 रघवल नूपाल रे लाल ॥ जा० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणें अयसर विस्मित होये, वीरघवल नूपाल ॥
 पूठे इम केवली प्रत्ये, थापी करतल जाल ॥ १ ॥
 स्वयंवर मंगप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मज्यो
 नहों मजया प्रत्ये, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हसे
 कुमर कुमरी मनें, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र
 विचित्र ते, जांखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमर मली
 पहेलो जई, थाव्यो पामी हार ॥ कनकार्ये नव बैर
 थी, विरच्यो कूढ प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री उपरें,
 कोपाव्यो नृप व्यर्थ ॥ इत्यादिक पुरानी कथा, थाखे
 सुगुरु सवर्थ ॥ ५ ॥

पुर पृथिवीठाण रे लाल ॥ आर्वी देखे विलसता, प्रि
 यसुंदरी प्रियनें टाण रे लाल ॥ जा० ॥ ४ ॥ देखी बै
 र संचारियुं, कोपे कलकलती चित्त रे लाल ॥ सूतां बि
 हूं कपर जई, नाखे निशिमां घरनिंति रे लाल ॥ जा० ॥
 ॥ ५ ॥ छन परिणामें दंपती, तिहां पामे मरण अका
 ल रे लाल ॥ प्रियमित्र जीव ए ताहरो, ययो पुत्र
 महाबल बाल रे लाल ॥ जा० ॥ ६ ॥ प्रियसुंदरीनो
 जीव ते, दुई मलयसुंदरी ए बाल रे लाल ॥ वीरधवलनी
 नंदनी, तुज सुत दयिता सुकुमाल रे लाल ॥ जा० ॥
 ॥ ७ ॥ मलयायें तुज नंदने, परजवें जे बांधुं बैर रे
 लाल ॥ रुझा जझा नारियुं, तस फल इहां लाभां पै
 रे लाल ॥ जा० ॥ ८ ॥ पूरव बैर संनारती, तेह असुरी
 अयधें जाण रे लाल ॥ महबलनें हणवा बली, रस
 मांहे वदम आण रे लाल ॥ जा० ॥ ९ ॥ पुण्य प्र
 जावें एहनें, न सकी काई करण अनिष्ट रे लाल ॥ सू
 तो निशि देखी गृहें, करती उपसर्गह डुष्ट रे लाल ॥
 ॥ जा० ॥ १० ॥ वस्त्र विजूपण कुमरनां, हरियां इणो
 कोधें व्याप रे लाल ॥ बट कोटरमां मूकीयां, लाभां
 ते कुमरनें थाप रे लाल ॥ जा० ॥ ११ ॥ प्रथम मि
 लनमें थापिउं, कन्यायें कुमरनें हार रे लाल ॥ लख

मीठुल मनोहर, सुरवनमाला, धनुकार रे लाल ॥
 ॥ नो० ॥ १२ ॥ सुतो निरखी कुमरन, तेह पण ब
 रियो निजिमाहि रे लाल ॥ व्यंतरीये मंदिरपकी,
 सैनारी वर धयाद रे लाल ॥ नो० ॥ १३ ॥ गतन
 य बहिंननी प्रोतयो, थाप्यो जई कनका कंठ रे लाल
 ॥ कोडी नये पण रस दीये, हे विपसी प्रेमनी गंठ रे
 लाल ॥ नो० ॥ १४ ॥ चोये खंमं सुंदर, यई सत्तावी
 शमी ठाल रे लाल ॥ काति कहे हवे पूठरी, इहां वी
 रधवल नूपाल रे लाल ॥ नो० ॥ १५ ॥

॥ बोहा ॥

॥ इणो धवसर विस्मित होये, वीरधवल नूपाल ॥
 पूठे इम केवली प्रत्ये, थापी करतल नाल ॥ १ ॥
 स्वपंवर मंगप विना, महबल प्रथम कदाच ॥ मन्थो
 नहो मलया प्रत्ये, तो हार दियो किम राच ॥ २ ॥ हते
 कुमार कुमरी मनै, निज चरित्रगत जाणि ॥ ज्ञात चरित्र
 विचित्र ते, नाखे गुरु तेणें ठाण ॥ ३ ॥ कुमार मल
 पहेलो जई, थाव्यो पामी हार ॥ कनकार्ये नव वै
 थो, विरच्यो कूठ प्रकार ॥ ४ ॥ मलया पुत्री वप
 कोपाव्यो नृप व्यथे ॥ इत्यादिक धुरनी कथा, था
 सुगुरु सदर्थे ॥ ५ ॥

काष्ठ अंगारनें कारणेंजी, किण्होकें थापिया थाए ॥
 गतदिनें सीममां सहजयीजी, सामटा ते मल्या टा
 ए ॥ सां० ॥ ७ ॥ तेह कारें करी पापिणीजी, आवरे
 साधुनें तेम ॥ चिहुंदितें निरखतां साधुनुंजी, अंग दीते
 नहीं जेम ॥ सां० ॥ ८ ॥ बिटंतां साधुनें, काठगुंजी,
 आणी हत्या महा व्याप ॥ चउगइ डुक संतारनेंजी,
 बिंटीयो तेणीयें आप ॥ सां० ॥ १० ॥ पूर्व नव बैरयी
 तेणीयेंजी, निर्दयायें महाघोर ॥ अगनि सजगाडीयो
 चिहुं दितेंजी, पवनयो जागीयो जोर ॥ सां० ॥ ११ ॥
 मुनिवरें कावस्तग ध्यानमांजी, देखी अपसर्ग सरणां
 त ॥ कीधी आराधना चित्तयीजी, तेम रह्यो योग रत
 शांत ॥ सां० ॥ १२ ॥ खंन चोथे खरी खांतगुंजी,
 एह तेत्रीशमी ढाल ॥ कांतिविजय कहे हवे इहांजी,
 साधजो साधु जयमाल ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ उद्दीप्यो वनदव समो, ज्वालजिह्व चउफेर ॥ मुनि
 वरनें तन पाखतें, खातो घूमणियेर ॥ १ ॥ कोमल तनु रु
 पिरायनुं, बाले बन्हि तपंत ॥ मूत्रयकी कनका तणां, जा
 णे सुरुत दहत ॥ २ ॥ विकटोपइव पीडता, सहेतो श्री
 कृपियोध ॥ जागो निज आत्म प्रत्ये, देवा इम प्रतिबोध

॥ दालचीनी शमी ॥ दामबंगाली ॥ आला भली नमै गाए देवी
 ॥ रे जीव प्रोपकृ दूरे नारि, आतिदुखार्थी आय
 की तार ॥ इतनी आत्मा ॥ इति तेरे घरता रूप मं
 नार ॥ मेरे आत्मा ॥ इति रागादिककी संग निवार
 ॥ तेरे आत्मा ॥ ए आकाशी ॥ आय भिक्षा दे तर
 न ठपाय, मत नूले तुं अबकी दाव ॥ छा० ॥ १ ॥
 काल अनादिका नटय्या अनंत, अशुभ न पापा न
 वनल अंत ॥ छा० ॥ चूकेगा जो आनफा खेल, नो
 फिरि न मिले जैसा मेल ॥ छा० ॥ २ ॥ पट्टिके आ
 ने नाय जिहाज, तरले नवसागर विनु पाज ॥ छा० ॥
 नायमदा प्रयदनकी फेर, ध्यान पवनसाँ तेसें प्रेर
 ॥ छा० ॥ ३ ॥ कुशल स्वनावें करिकें करार, जैसें पा
 रें नयतटपार ॥ छा० ॥ दुःख पाय तें नरक निगोद,
 करत घरोरा कर्मकी गोद ॥ छा० ॥ ४ ॥ ता दुःख आ
 गें या दुःख कौन, पटमें विचारिकें देखत कौन ॥
 ॥ छा० ॥ या महिलाको कबुथ न दोष, मत कर ई
 न ठपर तुं रोष ॥ छा० ॥ ५ ॥ कर्म महावन काट
 न थापु, थाइ नई दे साची सहापु ॥ छा० ॥ बाहि
 र तनकुं जारेंगी आगि, अन्तर तन नहीं इन ला
 गि ॥ छा० ॥ ६ ॥ कहा दहेगी अगनि सगोल,

खय खजाना तेरा अमोल ॥ झा० ॥ मैत्री मेरे सब
 सों होय, जीउ सकलसों वैर न कोय ॥ झा० ॥ ७॥
 आप खमावें दोपरतीउ, मोसों खमहो सिंगरे जीउ
 ॥ झा० ॥ ऐसे धरे मुनि निर्मल ध्यान, रूपकायलकै
 चढी सोपान ॥ झा० ॥ ८ ॥ घाति करमकों प्रलारे
 निदान, उपज्यो तबही केवलज्ञान ॥ झा० ॥ शुद्ध
 ध्यानानलको प्रयोग, अंतर बाहिर अगनि संयोग ॥
 ॥ झा० ॥ ९ ॥ तिनसों जव उपग्राही कर्म, नरम
 करै विनुमैं तजी नर्म ॥ झा० ॥ अंतगढ केवली व्हे
 के साथ, पायो सुगतिपद जयो हे अबाध ॥ झा० ॥
 ॥ १० ॥ जनम जरा मृतके दुःख टार, जवकों जलां
 जलि दै निरधार ॥ झा० ॥ चोथे खंमें राग बंगाल,
 चोतीसमी पूरी नइ ढाल ॥ झा० ॥ कांतिविजय कहे
 देखहु खेल, समतासों जयो कर्म उखेल ॥ झा० ॥ ११ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ ज्वलित प्राय झुताशनें, झुव जिन्हारें तेथ ॥
 नावी कनका पापिणी, धीहिती केष अनेय ॥ १ ॥
 अहो झुटता नातिनी, विधि विरची विष सींची ॥ मा
 रे अलवें अपरनें, तस रस सरवस सींचि ॥ २ ॥ म
 ति जेहनी एग हेठले, बाबी रहे सदाय ॥ अनरथ

करती तेहने, वासे कुण समजाय ॥ ३ ॥ एक साधु
 हणतां दुवे, जीव अनंत विनाश ॥ जाख्यो आगम
 मां इत्यो, तिष्ठकर प्रकाश ॥ ४ ॥ नृप दुई पुन क
 र्मयो, दुष्ट पाप रस लीन ॥ कष्ट सहेशे नवनवा, अ
 ष्ट कर्मवश दीन ॥ ५ ॥

॥ ढाल पांजरीशमी ॥ विनतां विहसी रे वीनवे ॥ ए देशी ॥
 ॥ रयणि विहाणी प्रहं थपो, दिणयर कीथ प्रकाश
 रे ॥ बहु परिवारें परिवस्यो, अवनपति सविंलास
 रे ॥ १ ॥ आवे मुनिनें रे वांदवा, शतबल नक्ति विखु
 र्को रे ॥ जनक वदन जोवा जणी, उत्कंठित मन सू
 धो रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अति उत्सव थामंयरे, काननमां
 जव आयो रे ॥ निरखे तेहवे रे साधुनो, देह नस्म
 मय ठायो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ अस्मंजस जोयाथकी,
 महीपति दुःखमांहे नडियो रे ॥ नक्तें प्रीतें रे जोल
 ध्यो, धसकें धरा तल पडियो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ मोहें
 जाख्यो रे राजवी, मूर्च्छाणो मन कणो रे ॥ सजग दुठ उ
 पचारथी, पामे तव दुःख दूणो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ प
 रिकर दुःखियो रे नृपदुःखें, रोवे विलवे अनेको रे,
 शोकनृपतिनें रे आंसुयें, करता पट अनिपेको रे ॥
 ॥ आ० ॥ ६ ॥ नृपति पनणे रे पापीये, कियो ए

धुं अकाजो रे ॥ निर्नय निःकारण वैरीयें, उपतयें
 मुनिराजो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नवप्रमणथी रे इमेति,
 वीहीनो नहीं लवलेशो रे ॥ हाहा हियहुं रे तेहहुं
 वज्र कठिन सुविशोपो रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ चरण तुमा
 रां रे तातजी, पामीनें पण डहिलां रे ॥ प्रणमी न
 शक्यो रे पापथी, आवीनें हुं पहिलां रे ॥ आ० ॥ ८ ॥
 मीट तुमारी रे रस जरी, न पडी माहरे अंगें रे ॥
 वचन तुमारां रे नवि सुण्या, वेशी कृण एक रंगें
 रे ॥ आ० ॥ १० ॥ सकल मनोरथ माहारा, विलप
 गया मनमाहिं रे ॥ कामें नाब्या रे कारिमा, जिम
 कूआनी ठाहिं रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ तात तणो आ
 गम सुणी, हरख दुठ मुज जेतो रे ॥ इण बेला मुज
 पापथी, थयो दुःखरूपी तेतो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥
 अशरण कीधो रे साहिवा, आजयकी हुं थनायो रे ॥
 सुतवत्सल जातां मुन्हें, लीधो कांइ न सायो रे ॥
 आ० ॥ १३ ॥ निरखी न शकुं रे तेहवी, एह अवस्था
 रे दीसे रे ॥ पुण्य किहाथी माहरे, दर्शन न लखुं दी
 सें रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ शोकें पूखो रे जनकनें, विलपे
 इम नूपाजो रे ॥ कातें चोथा रे खंमनी, कही पणती
 समी दाजो रे ॥ आ० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ पुरित लोचन आसुये, खेदाकुल नूपाल ॥ नजन
 ने ईम आदिसे, करि नृकुटीनी पाल ॥ १ ॥ पग अंगु
 सारे निरखता, करो शीघ्र परगट ॥ जिम पापीने पाप
 फल, आवे उदय विकट ॥ २ ॥ आप हृदय ठाणे उद्यो,
 धीनो डुष्ट परिणाम ॥ दुःप्रथम रत सींचतां, कर्ण क
 टक विराम ॥ ३ ॥ सुनि हिसा शाखागतें, पाम्यो अति
 विस्तार ॥ आशंकादिक कुसुमगुं, बाध्यो चिदुं पख
 नार ॥ ४ ॥ प्राणनाश फल तेहनुं, अतिमुख हूठ स
 मरु ॥ हिसफनें फलजे हवे, पोप्यो पातक वृद्ध ॥ ५ ॥
 ॥ दाल ठत्रीशमी ॥ जावजदे मात मजार ॥ ए देशी ॥
 ॥ बचन सुणी ततकाल, कठया नड मठराल, थाज
 हो डेछा रे जण रुठा जाणे कालनाजी ॥ १ ॥ जोतां
 ॥ वत नूम, मांमे सबली धूम, थाज हो धारे रे थ
 ॥ रे पगन तेहनेंजी ॥ २ ॥ पुर बाहिर एक देश, पेखत
 निवेश, थाज हो दीठी रे त्रिय धीठी पेठी खाड
 ॥ ३ ॥ नीचे मुख जयजीत, श्याम वसन
 थाज हो वेठी रे उपरांठी काया गोपवीजी
 ॥ ४ ॥ साही केश, काढी बाहिर देश, थाज हो
 कजुपाणी सांपी रायनेंजी ॥ ५ ॥ नूपें ताढी

जोर, पाड़ती मुख सोर, आज हो पूठे रे कहे श्रुते
 कारण वैरनुंजी ॥६॥ हणित तें महाजाग, मुनिवरनें
 इणें जाग, आज हो लाखें रे तुज पाखें न करे का इ
 स्युंजी ॥७॥ हणी घणी नूपाल, सींची तरुनी माल,
 आज हो नांखे रे सवि दाखे करणी आपणीजी ॥८॥
 रूठो नूप तिचार, नाना विध वेई मार, आज हो मारी
 रे तेह नारी सारी पातकेंजी ॥९॥ आप चरितने यो
 ग, पामी फलनो जोग, आज हो ठही रे दुःख पूठी न
 रकें कपनीजी ॥१०॥ नरक तणा संताप, सहेत्रो थ
 ति दुःख आप, आज हो वकें रे नवचकें नमदे बापडी
 जी ॥ ११ ॥ चोथे खंमैं रसाल, ठत्रीशमी एह ढाल,
 आज हो कांतें रे नलि नांतें नांखी शास्त्रथीजी ॥१२॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपिपाल निज तातनो, शोक अतीव करंत ॥
 समजाव्यो सचिवादिकें, पण कृण नवि ठांमंत ॥१॥
 जाणी तेहबुं तातनुं, दुस्तह मरण विराम ॥ पडियो
 ॥ १ ॥, नूप सहसबल ताम ॥ २ ॥ शतबल
 तबल बिन्हें, जनक शोक चित्त धारि ॥ लखमण
 तणी परें, तपे थरतिनें चार ॥ ३ ॥ कृष्णदेव
 निजइनें, दारावतीनें दाह ॥ शोक दुड पिटनो जि

स्यो, तिस्यो दुष्ट इहां प्रांह ॥ ४ ॥ अरति हेतु गजरा
जनें, जिमी अजाढी खोह ॥ साहसधरनें पण तिस्यो,
विपम स्वजननो मोह ॥ ५ ॥

॥ ढाल साहज्रीशमी ॥ हुं दासी राम तुमारी ॥ ए देशी ॥

॥ एहवें निर्मल चरित पविता, सत्य शील संतोष
विचिता ॥ पालंती व्रत एक चिता, साध्वी मलया तप
छुतां हो राज, महासती धुर शोहे ॥ श्रुतधर्म नवि पडि
बोहे हो राज ॥ म० ॥ १ ॥ एकादश अंगनी जाण, पामी
द्युन अवधिनाण ॥ नावंती फिर अप्याण, संयम तव
योग विहाण हो राज ॥ २ ॥ संदेह नविकना टाले,
कुमतादिकना मद गाले ॥ एक अवसर अवधें नाले,
महाबल निर्वाण निहाले हो राज ॥ ३ ॥ निज न
दन प्रतिबोधेवा, नवताप झुरंत हरेवा ॥ आवी तिण
पुरि ततखेवा, होवे साधुनें धर्मनी टेवा हो राज ॥ ४ ॥
साधुयोग्य वसतीनें वामें, पण पंमग रहित सुधामें ॥
साध्वीनें गण अजिरामें, दिंटी रही थाइ सुकामें हो
राज ॥ ५ ॥ शतबल नृपति अति नकें, वांटे श्रावकनी
सुंके ॥ समजावा साध्वी उगते, जिणथी पामे वली सुके
हो राज ॥ ६ ॥ राजेंड पिता तुज शूरो, उपशम संवेगें
पूरो ॥ सत्य साहस शौच सनूरो, पाम्यो शिवसुखमह

भूरो हो राज० ॥७॥ उपसर्गों कनकवतीयें, न कलुष
 मन कलुष व्रतीयें ॥ नवसागर तरतां तीरें, अवलंबन
 दीधुं त्रीयें हो राज० ॥८॥ धन पुत्र कलत्र गृह नार,
 जस कारण तजीयें सार ॥ तय लोच क्रिया व्यवहार,
 सापीजें विविध प्रकार हो राज० ॥ ९ ॥ सेवे जे गि
 रि घन घाटां, सहियें कटुक वचनना कांटा ॥ उपसर्ग
 उरगनी आंटा, खमीयें यई धीरजना सांटा हो राज०
 ॥ १० ॥ दुर्जन ते पद तातें लाधुं, नीगमीयुं नवनय
 बाधुं ॥ हवे कां मन शोकें दाधुं, करे कांई वपुष ए
 आधुं हो राज० ॥ ११ ॥ कृतकृत्य दुर्ब सुनिराय, ति
 रें हर्ष तणो ए उपाय ॥ ते माटे अहो महाराय,
 कांई शोक करे इणो ठाय हो राज० ॥ १२ ॥ पोता
 नो बाढहो कोई, निधि पामे सहसा सोई ॥ तिहां शो
 क के हर्षज होई, कहे हियहे विचारी जोई हो राज० ॥
 ॥ १३ ॥ विश्वानर पीडा तातें, सांसही होशे एह वा
 तें ॥ चिंता म करे तिलमातें, जय अरथो खिति सहे
 गातें हो राज० ॥ १४ ॥ साधक नर विद्या साधे, पहे
 लुं तिहां दुःख सहे बाधें ॥ निज कारज सिद्धि आ
 पे, तय आयत फल सुख लाधे हो राज० ॥ १५ ॥
 पहेलुं दुःख सघले दीसे, पावें सुख संजव हीसे ॥ इ

म जाणीने विश्वावीशें, मन नाखे शोकमा कीसैं दो
 राज० ॥ १६ ॥ नेट्या नहीं घरण पिताना, मत क
 र ईम जरि चिंताना ॥ पहेली परे हवणा दांना, तु
 ज नकिना गुण नहीं ठाना हो राज० ॥ १७ ॥ शोक
 मूकीने हवे नूप, संसारनो नावि सरूप ॥ दृढ धारी
 त्रिवेक अनूप, तज दूरें ए नवकूप हो राज० ॥ १८ ॥
 दुःख सागर ए संसार, संगम सुपना अनुहार ॥ ल
 खमी जिम बीज संचार, जीवित बुंद बुंद अणुहार
 हो राज० ॥ १९ ॥ तुल सरिखा जो ईम करशे, शोका
 कुज हियहुं नरशे ॥ बापडलो किहां संयरशे, धीरज
 थानक विण फिरशे हो राज० ॥ २० ॥ ईम धर्म तणो
 उपदेश, निसुणी प्रतिबुझयो नरेश ॥ ठंमे सवि शोक क
 लेश, संवेग लह्यो सुविशेष हो राज० ॥ २१ ॥ प्रणमे
 नित्य नित्य नपाल, महत्तरिका चरण त्रिकाल ॥ साड
 ओशमी एकही ढाल, चोथें खंम कांति रसाल हो राज०
 ॥ दोहा ॥

॥ महत्तरिकाना सुखथकी, सुणे धर्म उपदेश ॥
 करे महोन्नति धर्मनी, धर्म धुरीण नरेश ॥ १ ॥ शत
 यल मुनि निर्वृतिथलें, मांमयो नवल प्रासाद ॥ ता
 त तणो प्रतिमा तिहां, थापे तजी विषवाद ॥ २ ॥

अनुक्रमेंजी, ऊपजशे छुनगाय ॥गु०॥१५॥ बोधिनाव
 लहेशे तिहांजी, सुगुरु संयोग लहेवि ॥ बुद्ध चारित्र
 तिहां पडिवजोजी, लेहेशे मुगति सुखहेवि ॥गु०॥१६॥
 ढाल कही अडत्रीशमीजी, चोथा खंमनी एह ॥ कांति
 कहे मलया इहांजी, पामी नवतणो ठेह ॥गु०॥१७॥

॥ दोहा ॥

॥ एक श्लोक चिंतनथकी, पामी मलया पार ॥
 तेमाटे संसारमां, ज्ञान सकल शिरदार ॥ १ ॥ सुप
 रीक्षक सुविवेकीयें, करवो ज्ञानान्यास ॥ इहिलम सं
 कट उद्धरे, ज्ञान निधान प्रकाश ॥ २ ॥ संकटमां पण
 पालीयुं, जिम मलयायें शील ॥ तिम बली बीजो पाल
 शे, ते लेहेशे शिवलील ॥ ३ ॥ महाबलें जिम सांसह्यो,
 माहा विषम उपसर्ग ॥ तिम बली जे सहेशे खरो, ले
 हेशे ते अपवर्ग ॥ ४ ॥ जिम प्रथम व्रत आदर्यां, दंप
 तीयें दृढ चित्त ॥ आदरवां तिम जावथो, बीजे पण सुप
 वित्त ॥ ५ ॥ कीधी मुनि आशातना, दंपतीयें धुर जेम ॥
 इत्क हेतु जाणी तिसी, करशो मां कोइ तेम ॥ ६ ॥

॥ ढाल थोगणचालीशमी ॥ दीगो दीगो रे

॥ वामाजीको नंदन दीगो ॥ ए देशी ॥

॥ जावें जावें रे नवि करजो ज्ञान अन्यास ॥ ज्ञानें

कोटि पलाये, ज्ञाने कुमति न बाधे ॥ ज्ञाने रु
 लहे जगमांहीं, ज्ञाने शिवपद साधे रे ॥ नविक
 ज्ञा० ॥ १ ॥ यद्यपि नाणादिक समुदित इहां,
 हेतु जिन जांखुं ॥ तोषण योगहेमतुं हेतु,
 ज्ञानज दाखुं रे ॥ ज० ॥ २ ॥ पाततणा नि
 दिवसथी, वरिस गयां शत एक ॥ तेहवे दुई सत्य
 सजुणी, मलय सुंदरी सुविवेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥
 एकनो जाव विचारी, तेह लही नवपार ॥ ते
 शिवसाधन साखुं, ज्ञानज एक वदार रे ॥ ज०
 शंख नरेश्वर धामे पदेखुं, श्री केशीगणधारें ॥
 वरिस जांखुं विस्तरथी, ज्ञानतणे अधिकारें
 ० ॥ ५ ॥ तेह तणो रस सर्वस्व छेई, श्रीजय
 धूरीवें ॥ नूतन मलयचरित संक्षेपें, जांखुं
 नंदें रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ ज्ञान रत्नव्याख्या इति
 ण अधिकारें प्रसिद्धो ॥ तेहमांहि इम संव
 धुर अधिकारें लीधो रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीत
 एनायक गुरुआ, श्रीविजयप्रन सूरि ॥ गुण
 म गुरु तालें, महोमां महिमा सनूर रे ॥ ज०
 तस शिष्य कोविदकुल मंमन, प्रेमविजय बु
 कांतिविजय तस शिष्यें इणि परें, विध विध

